

GOSSNER EVANGELICAL – LUTHERAN CHURCH IN CHOTANAGPUR AND ASSAM

GELC ARCHIVE

Signature: **GELC-A _ 001 _ 0671**

Classification:

Original File No: 16

Title

Rourkela(J.M.B.)

Volume:

Running from year: 1960

till year: 1963

Content:

- Monthly Report of daily work of Rev.P.C.Minz, Village- Rourkela, Dist-sundergarh.
- One worship at Rly. Colony. Dt. 14-12-1963.
- A drive for establishment of the Lutheran community in Rourkela.
- Letter to P.C. Minz on 19 & 25 May 1959.
- Christian Industrial Service.
- Chapal to Carry on our Religious Functions.
- Minutes of the meeting of Post- Graduate Committee, 17-1-1962.
- General report of G.E.L.Church New Township(Purnapani) Rourkela.
- Extract of the minutes of general meeting on 22nd Oct. 1961.

16 16
NAG'S

IFLAT IFILIE

EXTRA THICK

G E Z C

File No. 16

Name Rourkela

Subject _____

Serial Nos. _____ to _____

From _____ to _____

Year 1960-63

PINT MISSION BOARD
16

गोससनर एव'जेलिकल लूथेरान चर्च

जोइन्ट मिशन बोर्ड

गांव Rourkela

पोस्ट आफिस Rourkela-2

जिला Sundergarh

प्रान्त Orissa

सेवक का नाम Rev. J. J. J.

सन १९५३ के अप्रैल महिने का रिपोर्ट

(१) प्रतिदिन का बिसेष काम

- १ रेलवे कोलोनी राउरकेला - १ के सेवक से
- २ मे ड. म. ३.६. रे. ४३ के दफ्तर में
- ३ R.S. colony shipman के नये गिरजा के सामने
- ४ जडाकुदर बलाक कर्मचारी मिटिंग के लिए
- ५ जडाकुदर गया।
- ६ रेलवे कोलोनी राउरकेला - १ के गिरजा किया।
- ७ गलाशुक्का के दिवस गीतों का अभ्यास।
- ८ गिरजा घर के लिए लकड़ी लाने से चारपल्लू का
- ९ चारपल्लू से लकड़ी लाया।
- १० गलाशुक्का के दिवस गीतों का अभ्यास।
- ११ रेलवे कोलोनी में गलाशुक्का का गिरजा किया।
- १२ हतार के तैयारी के दिवस घर में ठहरा।
- १३ पुनरुत्थान और और दिवस में गिरजा राउरकेला - १ के
- १४ सेकर के मंडी के मिला।
- १५ राउरकेला - १ के मंडी पंच से मिटिंग।
- १६ श्री सामुल दोषी के साथ गिरजा घर के विषय
- १७ मार्च महीने का वलक लाने के लिए शक्तिगुरु
- १८ गलाशुक्का के दिवस मिला।
- १९ इतिहास के साथ विशेष बातचीत।
- २० सेकर ४ में जनता मिटिंग किया।
- २१ चारपल्लू में गिरजा किया। के मंडी से मिला।
- २२ रेलवे कोलोनी राउरकेला - १ के मंडी से विषय
- २३ श्री सामुल दोषी के साथ गिरजा घर के विषय
- २४ राउरकेला - १ के गिरजा घर के विषय में सामुल
- २५ सेकर का के मंडी से मिला। - दोषी ने दोषी का
- २६ राउरकेला - १ के जनता मंडी किया।
- २७ सेकर १६ के जनता मंडी किया।
- २८ रेलवे कोलोनी राउरकेला - १ के गिरजा किया।
- २९ सेकर ५ के हक जड़े की चतुर्दश विराधक
- ३० राउरकेला - १ के जनता मंडी किया।
- ३१

(२) महिने की विशेष बात :-

१.) राउर कोल - १ के विरुद्ध यह को मिल है
व्यक्ति जहाँ को अनुमति जो के दिने G.M.
S.E. Rly. Carl 43 को दायरत मनेन गमा

२.) श्री सागुल पोस्टो ने खाती दरखस्त
को चुकी करते हुए अपनी पोस्टरा के मि
अन्तर्गत अनुमति से विरुद्ध उत्तर जमान
यह बात या श्री आने को के इसी
जबकि यह विरुद्ध चाहते हैं।

(३) गिर्जे की हाजिरी :

खुस्तान

अखुस्तान

१ला एतवार...

...

...

२रा "

...

...

३रा "

...

...

४था "

...

...

५वां "

...

...

(४) धर्म खोजकों की संख्या

...

...

१ पुराने—

२ नये जो बीते महिना हुए—

(५) स्नान पाये हुआ की कुल संख्या—

(६) दृढ़िकरण पाये हुआ की कुल संख्या—

(७) महिने की मण्डली आमदनी—

३५. ६१

न पैसे मनेन

जाह

„ का मण्डली पैसा—

(८) मैं ने २६. ६. ६३ ता को १६. ६. ६३ नः पैः

महिने का तलब और नः पैः

टी ए० और नः पै० अन्य बाबत पाया ।

(६) मैं ने नं० पै.....

के पास ता: को भेज दिया।

(१०) अपने मंडली को विशेष आवश्यकता:

३) गत K.S.S. की बैठक ने पुरापाती मंडली को दो Groups में बांटा / गिरजा मराधना को जगह पु रोककर नती पट पुरापाती गिरजा मराधना को फिका गत / पट ऐसा पता लगा कि ६ ग्रे ग्रुप के लिए गिरजा मराधना के लिए K.S.S. की ओर से निर्धारित ^{समय} पट गिरजा मराधना में जगह नती मिलेगी। इस कारण पट रोकरी में अपने पट जमीनारी मिली ग्रुप का गिरजा मराधना ^{अच्छा} नती फिर नती कि K.S.S. ने रोकरी में होने वाला मराधना को disapprove किया है।

(११) विशेष कठिनाईयों का विवरण -

अस पट देखा जा कि Rev. एक A. ने जो एक K.S.S. के सदस्य को गत मार्च की मीटिंग में रोकरी को गिरजा मराधना को disapprove नती बहरा ता २८.८.६३ को लेकर २० ग्रे ग्रे गिरजा मराधना को अनुमति नती देने पट गी गिरजा मराधना प्रमुख और दृष्टिकरण दिना /

(१०) अपने मंडली को विशेष आवश्यकता

उस पेरिस को एक मंडली जो Russellment colony Bondelkhand है एक बलबलती प्रचार को सहायता से समाली जा रही है। ये कपटगुला मंडली के प्रचारक हैं जो जोड़ा बंध पेरिस को एक मंडली है। उनका नाम प्रचारक प्रमुख लमड़ा का वह वर उनके बलबल के विषय पटों को पेरिस कमीटि ने कुछ निवार नती किया है। मैं अच्छा समझता हूँ उससे २० मंडली नती देना चाहते /

२२.५.६३
वा: १.६.६३

सही Rev. 

जोइन्ट मिशन बोर्ड

C/230, sector 6

Rourkela-2

गांव राउरकेला

पोस्ट आफिस

जिला राउरकेला

प्रान्त

सेवक का नाम पाद्री पी.सी. मिश्र

सन १६.६.६३

के

मार्च

महिने का रिपोर्ट

(१) प्रतिदिन का बिसेष काम

- १ } दुरगापुर के study conference से निरंतर जन
- २ } होते हुए राउरकेला - राधा माया ।
- ३ } बंडामुंडा रेलवे कोलोनी में निरज किया ।
- ४ } जडाकुआर इलाका मिडिंग और कनचारी मिडिंग
- ५ } के लिये विवरण दिए गए ।
- ६ } जडाकुआर इलाका मिडिंग और कनचारी मिडिंग
- ७ } के लिये विवरण दिए गए ।
- ८ } जडाकुआर इलाका मिडिंग और कनचारी मिडिंग
- ९ } के लिये विवरण दिए गए ।
- १० } बंडामुंडा रेलवे कोलोनी में निरज किया ।
- ११ } कोलोनी के कारवांय पर दे रखा
- १२ } पानजेरा के कारवांय का मुलाहिजा किया ।
- १३ } दुरगापुर और रेलवे कोलोनी के कारवांय ले मिला
- १४ } मंडोपवास काल का निरज रेलवे कोलोनी में किया
- १५ } बंडामुंडा के कारवांय ले मिला
- १६ } केकर १८ के श्रितियों से मुलाकात मिला ।
- १७ } जडाकुआर रेलवे के लिये तार चुबुस करवाने से
- १८ } राउरकेला में मंडोपवास रेलवे कोलोनी में
- १९ } मंडोपवास कारवांय के लिये पर दे रखा
- २० } R. S. colony Boudameunda के कारवांय ले मिला ।
- २१ } Asst to the K.S.S. Secretary के आदेशानुसार अपने
- २२ } marriage license से लाने के लिये दुरगापुर
- २३ } गया ।
- २४ } रेलवे कोलोनी में निरज किया ।
- २५ } एक American बच्चे से अनुशासन के लिये
- २६ } बच्चे से अनुशासन के लिये आदेश दे मिला ।
- २७ } बच्चे से अनुशासन के लिये आदेश दे मिला ।
- २८ } पानजेरा के कारवांय ले मिला ।
- २९ } F.M.C.A. के बिसेष प्रार्थना लम्बी के साथ रखने
- ३० } General meeting के समय रेलवे कोलोनी में
- ३१ } राउरकेला - १ के निरज के बिषय दुरगापुर
- ३२ } कोलोनी के लिये पानजेरा के स्थ. R.P. (contd)
- ३३ } के साथ देखा किया ।
- ३४ } रेलवे कोलोनी राउरकेला - १ में
- ३५ } निरज किया ।

(२) महीने की विशेष बात :—

रेलवे को लोता राउरकेल - १ - के
 गिरजा को उगाड़े जाने पर भी
 सब पर तनी सारा विशेष दिनों की
 अराधना की खुली जागरूक
 हुआ मना है।

(३) गिर्जे की हाजिरी :

खुस्तान अखुस्तान

१ला एतवार...	...	...
२रा "	...	...
३रा "	...	...
४था "	...	...
५वां "	...	...

(४) धर्म-खोजकों की संख्या

१ पुराने—

२ नये जो बीते महीना हुए—

(५) स्नान पाये हुआ की कुल संख्या—

(६) दृढ़िकरण पाये हुआ की कुल संख्या—

(७) महीने की मण्डली आमदनी—

५२११ न. पैसा मार्च से
 आता है।

,, का मण्डली पैसा—

(८) मैं ने ता: को न: पै:

..... महीने का तलब और न: पै:

टी ए० और न० पै० अन्य बाबत पाया।

(६) मैं ने रु न० पै ६०२२२२२२२२

के पास ता: को भेज दिया ।

(१०) अपने मण्डली को विशेष आवश्यकता:

(११) विशेष कठिनाईयों का विवरण -

ता: २६-२-६३
१. ६. ६३

सही
Rev. J. J. Linz

गोस्सनर एवं जेलिकल लूथेरान चर्च

जोइन्ट मिशन बोर्ड

गांव... Rourkela पोस्ट आफिस... Rourkela-2
 जिला... Sundergarh प्रान्त... Orissa
 सेवक का नाम... Rev. P.C. Mishra
 सन १६... ७३ ... के... फरवरी ... महिने का रिपोर्ट

(१) प्रतिदिन का बिसेष काम

- १ } मिशन अस्पताल, अमरावती के मित्र सुन्दर के साथ
- २ } अस्पताल विषयक काम।
- ३ } पानथीस में मैं ने गिरजा किया।
- ४ } बडर केला - १ के साथ मेडल पत्र के अडली विषयक
- ५ } जडाकुडर उलास कर्मचारी तथा उलास मिडिंग।
- ६ } जडाकुडर उलास कर्मचारी तथा उलास मिडिंग।
- ७ } जडाकुडर उलास कर्मचारी तथा उलास मिडिंग।
- ८ } जडाकुडर उलास कर्मचारी तथा उलास मिडिंग।
- ९ } जडाकुडर उलास कर्मचारी तथा उलास मिडिंग।
- १० } जडाकुडर उलास कर्मचारी तथा उलास मिडिंग।
- ११ } जडाकुडर उलास कर्मचारी तथा उलास मिडिंग।
- १२ } जडाकुडर उलास कर्मचारी तथा उलास मिडिंग।
- १३ } जडाकुडर उलास कर्मचारी तथा उलास मिडिंग।
- १४ } जडाकुडर उलास कर्मचारी तथा उलास मिडिंग।
- १५ } जडाकुडर उलास कर्मचारी तथा उलास मिडिंग।
- १६ } जडाकुडर उलास कर्मचारी तथा उलास मिडिंग।
- १७ } जडाकुडर उलास कर्मचारी तथा उलास मिडिंग।
- १८ } जडाकुडर उलास कर्मचारी तथा उलास मिडिंग।
- १९ } जडाकुडर उलास कर्मचारी तथा उलास मिडिंग।
- २० } जडाकुडर उलास कर्मचारी तथा उलास मिडिंग।
- २१ } जडाकुडर उलास कर्मचारी तथा उलास मिडिंग।
- २२ } जडाकुडर उलास कर्मचारी तथा उलास मिडिंग।
- २३ } जडाकुडर उलास कर्मचारी तथा उलास मिडिंग।
- २४ } जडाकुडर उलास कर्मचारी तथा उलास मिडिंग।
- २५ } जडाकुडर उलास कर्मचारी तथा उलास मिडिंग।
- २६ } जडाकुडर उलास कर्मचारी तथा उलास मिडिंग।
- २७ } जडाकुडर उलास कर्मचारी तथा उलास मिडिंग।
- २८ } जडाकुडर उलास कर्मचारी तथा उलास मिडिंग।
- २९ } जडाकुडर उलास कर्मचारी तथा उलास मिडिंग।
- ३० } जडाकुडर उलास कर्मचारी तथा उलास मिडिंग।
- ३१ } जडाकुडर उलास कर्मचारी तथा उलास मिडिंग।

(२) महीने की विशेष बात :-

मुझे मालूम है कि बाबू हिजला पड़ता है कि बाबू के लिये - 1 के कंठली पंक्ति ने बत्ती के विभाजन की दूर रहने का सेंड करवा ली उठाया 1. के कंठली विभाजन से कंठली बत्ती के दुरुभाजन हो सकते हैं । उक्त भाग के देखते में सामान्य रूप में कंठली पंक्ति ने से मंजिली से एक सही सही सेंड उपाय नहीं मिल

(३) गिर्जे की हाजिरी :

शुक्रवार...

शुक्रा ,

शुक्रा ,

शुक्रा ,

शुक्रा ,

(४) धर्म खोजकों की संख्या

१ पुराने—

२ नये जो बीते महीना हुए—

(५) स्नान पाये हुआ की कुल संख्या—

(६) दृढ़िकरण पाये हुआ की कुल संख्या—

(७) महीने की मण्डली आमदनी—

का मण्डली पैसा—

(८) मैं ने

ता को

नः पैः

जनवरी

महीने का तलब और

रुः

नः पैः

टी ए० और

रुः

न० पै० अन्य बाबत पाया ।

जनवरी माह के लिये मंजूर श्रेष्ठता का पूरा विवरण में नीचे पायी जायेगी, यह ध्यानपूर्वक लेना है । उपरोक्त कामों में यह माह नहीं पाया गया है क्योंकि यह नहीं मिला ।

(६) मैंने नं० पे.....

के पास ता: को भेज दिया।

(१०) अपने मण्डली को विशेष आवश्यकता:

(११) विशेष कठिनाईयों का विवरण -

उत्तरी क्षेत्र निश्चितता को खो रहा है।
को पाकर मैंने वहाँ को मंडली
पेन को मंडली पेन के समीप से रात
६५.२.५३ को सम्बन्धित कर दिया।
ता २०.१.५३ को विशेष निर्देश में
यह बात सुकर मैंने सोचा कि पार्श्व
क्षेत्र को अच्छे उतका साथ दे रहें
हैं। मुझे अपेक्षा है कि इसी
अंदर से पार्श्व के कामों के लिये किता
किता सलाह मिलती है। जिससे
मंडली विगड़ती जा रहें हों।
मैंने देखा Dual Administration
असल में कार्यरत और Director,
के. ए. डि. का काम साफ़ नहीं है। जब
तब एक आलापक को वहाँ से
हटालियाँ करने की सलाह विगड़ती
जा रही।

ता: १८.३.५३.

सही.....

जोइन्ट मिशन बोर्ड

सन १६... के... महिने का रिपोर्ट

[illegible]

(२) महिने की विशेष बात :-

रुख चोखोनी राउर केला - १ में की गंरली
 वहां के निरुता पल के उजाई जाते के गग
 में बट जमी। निरुत के निरुत के जगहों में
 निरुता ही रही है। में के इस पिमाजन की
 बर... बर... के निरुत राउर केला के पिमाजन
 गजलिग के अरुख अरुख को अरुयता के लिए
 २० १ २२ में एक पिमाय निरुतिग खुली

(३) गिर्जे की हाजिरी :

खुस्तान

अखुस्तान

१ला एतवार...

२रा ,,

३रा ,,

४था ,,

५वां ,,

(४) बर्मा खोजकों की संख्या

१ पुराने—

२ नये जो भीते महिना हुए—

(५) स्नान पाये हुआ की कुल संख्या—

(६) दृढ़िकरण पाये हुआ की कुल संख्या—

(७) महिने की मण्डली आमदनी—

रु० ६०० १६ त० ५०

,, का मण्डली पैसा—

(८) मैं ने ता० को रु० न० पै०

..... महिने का तलब और रु० न० पै०

टी ए० और रु० न० पै० अन्य बाबत पाया ।

(६) मैं ने न० पे०

के पास ता: को भेज दिया।

(१०) अपने मण्डली को विशेष आवश्यकता:

विभाजन में तड़ित में मैं पूरी समीक्षा में हूँ
एक ऐसा मालूम होता है कि मेरी समीक्षा
का कुछ अच्छा तरीका नहीं होगा। २०/१/६३
को विशेष निर्देशों में बताया गया कि
पाप्री सी. सी. आई.डी. में इस विभाजन
से सहमत हूँ। आवश्यक इस विभाजन
को लेकर अभाव से कम संख्या में
गिरजा में उपरिक्त हो रहे हैं। यदि
हो, अर्थात् तो आर्थिक दल लोगों - से राहत
करे।

(११) विशेष कठिनाईयों का विवरण -

विभाजन से कई रुकबात होखता है।

१. आपसी मतभेद से मसौही लोगों ने
चकर गये हैं।

२. मसौही लोगों को बुरा लगता।

३. मतभेद से गांव में हड़ताल।

४. अनुचित तरीके से अदली की लड़ि
खीने पर मैं पर पर के लिए
volunteer प्रचार नहीं दे सकूंगा।
विशेष २ के असाधन के ही के लिए
में मसौही उन प्रचारों का आभाव
हुआ करता है।

NB यदि पाप्री सी. सी. आई.डी. इस विभाजन से
१) सहमत हूँ तो मैं अ अनिश्चित तरीके
से बनी मंडली का जवाब देवी नहीं हूँ।
- ५.२.६३.

ता:

सही

२.

गोस्सनर एव'जेलिकल लूथेरान चर्च

जोइन्ट मिशन बोर्ड

गांव.....Roumkela.....

पोस्ट आफिस.....Roumkela.....

जिला.....Sundergarh.....

प्रान्त.....Orissa.....

सेवक का नाम.....Rev. P.C. Mishra.....

सन १६.६.२ केमहिने का रिपोर्ट

(१) प्रतिदिन का बिसेष काम

- १ एक जर्मन डाक्टर, राउरकेला में जो २.१२.६२ के विरज आया था मे
- २ { आमिल होना चाहते थे जिससे उनके आने के विषय काते
- ३ { तब यह बात सा ना। राउरकेला में मे से मे विरज भिषा।
- ४ सोकर १५ और १२ के मध्याह्न से मिला।
- ५ सोकर ५ और मर्यादित के मध्याह्न से मिला।
- ६ { जडाकुवर डलाका कर्मचारी मिटिंग गया।
- ७ Pastor Seeburg साहब के राउरकेला आगमन के प्रतिज्ञा कलाया
- ८ डाक्टर जोइस के आदिवासी समीट रखेजता ना।
- ९ बंडामुडा में विरज आया था।
- १० पादरी लीकरा साहब के राउरकेला मंत्र की तैयारी में
- ११ { जगम था। उनके Welcoming Address - तब सा
- १२ { था कि मे। उनके नाम मिटिंग।
- १३ जोडा बांध घेरिस के दोडा मंगला के तबे काये विरज
- १४ { था के संस्कार मिमित डलाका मेमबरे का साम दिवा।
- १५ विरज धर संस्कार हुआ और धर्म भाषा।
- १६ पत्रपोस के विरज किया।
- १७ बंडामुडा में जन्म पर्व मनाये जाते - की रक्खर के मिमित
- १८ { मे के मध्याह्न से मिला।
- १९ { रेलवे मेलोती राउरकेला - के विरज धर का धमाका
- २० { में ने अपना डीर श्री S. P. Singh C/230, Sec 6 लाया।
- २१ { विरज धर के धरे जाने पर कुजुंगी तब
- २२ { नको लो से सलल डेता।
- २३ चारपली विरज कहे गया पर लोगो के अशुभित
- २४ { नको लो से पर विरज नको हुआ।
- २५ पुण्य रात का विरज राउरकेला - में मे ने किया।
- २६ { जन्म पर्व का विरज बंडामुडा में किया।
- २७ { पर्व में मंडे वाली से मिला।
- २८ { और के एडर नको लो के वरगा मर्यादित
- २९ { नको लो से मिला।
- ३० { Property Record के मंगल से मिलने
- ३१ { के लो के रांरा रात मध्याह्न से लो तार सुक
- से राउरकेला कायदा काम।

(२) महिने की विशेष बात :-

रेलवे कोलोनी राउरकेला - वर्तमान समय
के लिये पेरिड केन्द्र है। वहाँ का गिरजा
मठुलपाली नाम की लापुसल रोपको के जमीन
पर बनाया गया था। उसकी जमीन उसको उखा
करके लेने पर तला है जमीन का पैसा नहीं
लेने पर भी Land Acquisition Officers द्वारा
यल पूर्यरु - कब्जा किया गया। फलस्वरूप
वहाँ की आदिपूरुस कराधरा से अडि
जड़कड़ी हुई है। उसके तबय में लु लोरी नि
युक्त रहे हैं कि जब तक काम न लाय

(३) गिर्जे की हाजिरी :

१ला एतवार...	...	...	जय गिरजा की अनुमति
२रा "	...	...	मिले।
३रा "	...	...	उदिया केन्द्र के अदाव
४था "	...	...	मे लो लोरी के उर
५वां "	...	...	काम से अलग है।/१६ लोरी ने एक दरारत-

(४) धर्म स्त्रोत्रों की संख्या

१ पुराने—

२ नये जो बीते महिना हुए—

(५) स्नान पाये हुआ की कुल संख्या—

(६) दंडिकरण पाये हुआ की कुल संख्या—

(७) महिने की मण्डली आमदनी—

रु० ५०० १८ ता० ५०

„ का मण्डली पैसा—

(८) मैं ने ता० को १३८ रु० ६९ न० पैः

..... महिने का तलब और रु० १८ न० पैः X

टी ए० और रु० न० पै० अन्य बाबत पाया।

(६) मैं ने नं० पे०

के पास ता: को भेज दिया।

(१०) अपने मण्डली को विशेष आवश्यकता:

जान गिरजा अराधना को अनुमति मिले।
उद्दिष्टा मंडल - के सदस्य जो एकलोगों
के इस काम में सहमत हैं। इस लोगों ने
एक दरखस्त जो The special officer, Land
Acquisition ऑफ पट्टागण के नाम से
लिखा था देखा और उससे देवे तथा
मिलान करके जत बुलाया को सतर्कता से
पहलत हुए। पाछे एन. कुलु, कारीमाजी
को यहां उपस्थित रहे।

असे इस मंडली का सिरेम और मैं तथा
(११) विशेष कठिनाईयों का विवरण -

२६ दिसंबर ६२ से उनके घर में मिले और
अपनी जगहों को देख लिया। ३१ दिसंबर
को उद्योग एकलोगों ने एक दूसरा दरखस्त
The estate officer, H. S. L. Romulani को
२९/१२/६२ को दिया। ३ उस दरखस्त का
तकल आप को जो इसी तरह को भेजा गया है
जो आप को मिला होगा।

एक एकलोगों के इस काम से यहां के
चेयरमैन तथा अन्य पंच सहमत नहीं हैं। जो
को उन अफसरों द्वारा मिले जगह की मनाही
विरज भले से नहीं को गया है इसी जगह
एक गिरजा अराधना से रहे हैं। इस जगह
को चंडू का इसी जगह अराधना भले है तब
इसी मंडली के मंडल सदस्य तथा गिरजा
को सहमत नहीं हैं। फिर आप को उसी
रेलवे मंडली के मंडल के जगह गिरजा को
रहे हैं। एक अराधना को मंडल के
में रहे हैं।

Re. J. K. K.

ता:

सही

अंश पत्रपरी माह ११

गोस्सनर एवं जेलिकल लूथेरान चर्च

जोइन्ट मिशन बोर्ड

गांव.....Roundela.....

पोस्ट आफिस.....Roundela-1.....

जिला.....Sundergarh.....

प्रान्त.....Orissa.....

सेवक का नाम.....Rev. P.C. Minz.....

सन १६...७२ के...November...महिने का रिपोर्ट

(१) प्रतिदिन का बिसेष काम

(Ex-Acting chairman, Purnapuram).

- १ Mr. S.J. Hoo के अलापित रिज। Programme
२ कानों के सिलसिले में सेकर ४, १५, ३
३ और २० के अडिपों से मिला। ३. पूरा लाय मारी पा
४ बतौर गार्फिक वर ३ तक की कर्ग ललाह के बिगा है।

जोइन्ट मिशन बोर्ड के पुचारक Refresher
class में गया।

आवश्यक कामों के निमित्त जाईयासा से
पात्री एवं कोस के पाह जाची गया।
अ अपने अकरीधर गार का बलक लाने को
राजगंगरू गया।

जोइन्ट मिशन बोर्ड के पुचारक रिफ्रेश. class के
लिचे जाईयासा गया और ३। लाह को
राउर फेल जासा आया।

(2) महिने की विशेष बात :-

उच्चलित स्थिति अनुसार मेरी अधिकतर लक्ष्य संस्थानों को मेरी ओर से काफी दूर और नो केवल माह से काया राग वा। इस के उपरांत इसी S. J. Hare Ex Acting Chairman, Punjab में और से निजी जोशाम काया राग। काफी दूर इस एक लक्ष्य मुझे मिला। इस वक्त इस जोशाम को बनाने में मेरी पैन ने नती पर कुछ लोगों ने इसके सामने दिखाया। इस वक्त कि वह इस मेरी जोशाम के कंठे जाने पर भी वह अपने जोशाम अनुसार विरज्य करने बिना सम्मति ता 4.11.62 को राग तब पातपीत नी से अधिकारी को भेजा जा। पर पीछे पहुंचने पर बंडागुडा के विरज्य करने नती वक्त। ऐसा भूल्य होता है कि वह जलस्थ स्थिति का काज खोने को फटा इत्यादि।

(3) गिर्जे की हाजिरी :

१ला एतवार...	...	...
२रा "	...	...
३रा "	...	...
४था "	...	...
५वां "	...	...

(4) धर्म खोजकों की संख्या

१ पुराने—

२ नये जो बीते महिना हुए—

(5) स्नान पाये हुआ की कुल संख्या—

(6) दंडिकरण पाये हुआ की कुल संख्या—

(7) महिने की मण्डली आमदनी—

रु ५०.३२ न.पै०

,, का मण्डली पैसा—

(8) मैं ने ता: को 153 रु: 61 न: पै:

..... महिने का तलब और रु: 14 न: पै:

टी ए० और रु: न० पै० अन्य बाबत पाया।

(६) मैं ने रु. न० पै.

के पास ता: को भेज दिया।

(१०) अपने मण्डली की विशेष आवश्यकता:

(११) विशेष कठिनाईयों का विवरण -

वा:

सही

30.11.62.

गोस्सनर एवं जेलिकल लूथेरान चर्च

जोइन्ट मिशन बोर्ड

गांव.....Roulcela.....

पोस्ट आफिस.....Roulcela.....

जिला.....Sundergarh.....

प्रान्त.....Orissa.....

सेवक का नाम.....Rev. P.C. Mishra.....

सन १९६२ के October महिने का रिपोर्ट

(१) प्रतिदिन का बिसेष काम

- १ दृष्टि करवा हास का काम।
- २ महुलपाली, दुर्गापुर के दृष्टि करवा उम्मीदवादी को
- ३ परमगुरु अस्पताल में काम करने वाले को हास के विषय बताते
- ४ घानपोष के बाइको से मिले।
- ५ रेलवे कालोनी के पत्रों से विशेष कामों के प्रभु से मिले।
- ६ विशेष काम के विरमिनापुर गया।
- ७ रेलवे कालोनी से गिरजा किया।
- ८ राजगांगपुर Refresher class के लिये गया।
- ९
- १०
- ११ का कारा नौम विहार पाठिकों के सम्मेलन के लिये गया।
- १२
- १३ और शंकी होने हुए राउरखेला वापस
- १४
- १५
- १६
- १७
- १८
- १९
- २०
- २१ शंकी होने हुए राउरखेला वापस आया।
- २२
- २३ आकर काम के विरमिनापुर से मिले।
- २४
- २५
- २६ आकर काम के कारवाय के लिये रुका।
- २७
- २८ रतवार सैमरी के लिये गए थे रुका।
- २९ नया खाना पकाने रेलवे कालोनी में मनाया।
- ३० सैक्टर के बाइको से मिले।
- ३१ राउरखेला के बाइको से मिले।
- पुनः पानी जमा संस्था का काम के लिये
- उं सरभुडा Land Office गया।

(२) महिने की विशेष बात :—

ईसवी सन् १९५६

(३) गिर्जे की हाजिरी :

खुस्तान अखुस्तान

१ला एतवार...
२रा ,,
३रा ,,
४था ,,
५वां ,,

१
२
३
४
५

(४) घग्ग खोजकों की संख्या

...

६

१ पुराने—

७

२ नये जो बीते महिना हुए—

८

(५) स्नान पाये हुआ की कुल संख्या—

९

(६) दडिकरण पाये हुआ की कुल संख्या—

१०

(७) महीने की मण्डली आमदनी—

रु० १०२.४६ न० ५०

,, का मण्डली पैसा—

११

(८) मैं ने ता को रु: न: पै:

..... महिने का तलब और रु: न: पै:

टी ए० और रु: न० पै० अन्य बाबत पाया ।

(६) मैं ने रु. नं० पै.

के पास ता: को भेज दिया ।

(१०) अपने मण्डली को विशेष आवश्यकता:

(११) विशेष कठिनाईयों का विवरण -

वा:

सही

30-10-62

गोस्सनर एवं जेलिकल लूथेरान चर्च

जोइन्ट मिशन बोर्ड

गांव.....Roulcela.....

पोस्ट आफिस.....Roulcela.....

जिला.....Sundernagar.....

प्रान्त.....Orissa.....

सेवक का नाम.....Rev. P. C. Mirm.....

सन १९५५-५६ के.....लेखिका.....महिने का रिपोर्ट

(१) प्रतिदिन का बिसेष काम

- १ - डाक्टरसिप - के बड़े अस्पताल के रोगियों का निरीक्षण किया।
- २ - रेलवे कोलोनी में गिरजा किया।
- ३ - फरलाटोली के प्रकार का घर से विशेष काम के
- ४ - आकड़पक कामों से करने के निमित्त घर में रखा।
- ५ - गुराडिह और देवगांव के गड़बो से मिला।
- ६ - दुगाव कोलोनी के गड़बो से मिला।
- ७ - सोनार १५ में एक बालक का बहिर्मा।
- ८ - डांगरपली में गिरजा किया।
- ९ - रेलवे कोलोनी के गड़बो से मिला।
- १० - पहाड़ टोली में सभाएं किया।
- ११ - दुर्गापुर के गड़बो से गठे किया।
- १२ - डांगरपली मंडली में भी मिटिंगें हुई।
- १३ - पाद्री गड़बो और भी घरों पर जाकर उनमें उपायलक्षि
- १४ - के मुझे उनके लान दिव्य करण।
- १५ - पानपोण में गिरजा किया।
- १६ - एक पारिवारिक गड़बो के हिलदिली में १५ लेखार गए।
- १७ - बर्धमान के गड़बो में लगने के कारण घर में रखा।
- १८ - उडिसा अंचल की मिनिस्ट्रियम मिटिंग गड़बोला में हुई।
- १९ - जिला के बर्धमान से रखा।
- २० - मिटिंग के लेखले को जाननी देने के
- २१ - लिखे बायोबिआकेश गया।
- २२ - बंडाभुंडा में गिरजा किया।
- २३ - पूनापानी गिरजा घर के जमीन संबंधी बातों का
- २४ - पता लगाने बुयाभुंडा के Land office गया।
- २५ - K.S.S. की मिटिंग में भोजने के दिने Report की
- २६ - गड़बोला के आने के २० लेख के मिटिंग।
- २७ - सभा।
- २८ - Resettlement colony बंडाभुंडा में भी गिरजा
- २९ - किया।

(२) महिने की विशेष बात :—

(३) गिर्जे की हाजिरी :

१ला एतवार...

२रा "

३रा "

४था "

५वां "

(४) धर्म-लोगों की संख्या

१ पुराने—

२ नये जो बीते महिना हुए—

(५) स्नान पाये हुआ की कुल संख्या—

(६) दड़िकरण पाये हुआ की कुल संख्या—

(७) महिने की मण्डली आमदनी—

„ का मण्डली पैसा—

(८) मैं ने ता: को रु: न: पै:

..... महिने का तलब और रु: न: पै:

टी ए० और रु: न० पै० अन्य बाबत पाया ।

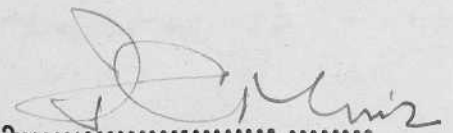
(६) मैंने रु. न० पै.

के पास ता: को भेज दिया ।

(१०) अपने मण्डली की विशेष आवश्यकता:

(११) विशेष कठिनाईयों का विवरण -

बा:

सही 

गोस्सनर एवं जेलिकल लूथेरान चर्च

जोइन्ट मिशन बोर्ड

गांव.....Rourkela.....

पोस्ट आफिस.....Rourkela.....

जिला.....Sundergarh.....

प्रान्त.....Orissa.....

सेवक का नाम.....Rev. P.C. Mishra.....

सन १९६२ के.....August.....महिने का रिपोर्ट

(१) प्रतिदिन का बिसेष काम

- १ सेक्टर १५ के प्रार्थना समाज में उपस्थित हुआ।
- २ पुरनापाती के मंडली पंच मीटिंग में उपस्थित हुआ।
- ३ प्रातःपौष्ट में प्रार्थना समाज चलाया।
- ४ एतवार को बैंगरी में कहीं नहीं गया।
- ५ रेलवे कोलोनी राउरकेला १ में गिरजा किया।
- ६ पुरनापाती मंडली के जेकेटरी को दिखाई।
- ७
- ८ } जडापुर कारखाने मीटिंग में उपस्थित हुआ।
- ९
- १०
- ११ लोगों के उपस्थित नहीं होने के कारण उपवेष्ट
- १२ कडागुडा के में से गिरजा किया।
- १३ लाहटेंको और देवगांव के काठों से मिल बाँटे।
- १४ प्रार्थना समाज चलाया।
- १५ १५ मंगल को विशेष आवश्यक कडागुडा में हुआ।
- १६ सेक्टर १५, १६, ५ और २ के भाइयों से मिल।
- १७ वहाँ के अधिकार पत्रों के कारण बाहर नहीं जा सका।
- १८ राउरकेला में गिरजा किया।
- १९
- २० } दक्षिण के अधिकार पत्रों के कारण बाहर नहीं जा सका।
- २१
- २२
- २३
- २४
- २५ राउरकेला में बैंगरी के कारण घर में रहा।
- २६ कडागुडा में गिरजा चलाया।
- २७ कडागुडा के एक बैंगरी के पत्रों विशेष काम।
- २८ लोन्ग कोलोनी डीसेमिटेड और लाहटेंको के भाइयों से मिल।
- २९ रेलवे कोलोनी के प्रार्थना समाज चलाया।
- ३० डुरगापुर के भाइयों के साथ प्रार्थना समाज चलाया।
- ३१ सेक्टर ५ और १५ के भाइयों से मिल।

(२) महिने की विशेष बात :—

(३) गिर्जे की हाजिरी :

१ला एतवार...	...	...
२रा ,,	...	...
३रा ,,	...	...
४था ,,	...	...
५वां ,,	...	...

(४) धर्म-खोजकों की संख्या

१ पुराने—

२ नये जो बीते महिना हुए—

(५) स्नान पाये हुआ की कुल संख्या—

(६) दृढ़िकरण पाये हुआ की कुल संख्या—

(७) महिने की मण्डली आमदनी—

,, का मण्डली पैसा—

(८) मैं ने ता: को रु: न: पै:

..... महिने का तलब और रु: न: पै:

टी ए० और रु: न० पै० अन्य बाबत पाया ।

(६) मैं ने रु. न० पै.

के पास ता: को भेज दिया ।

(१०) अपने मण्डली की विशेष आवश्यकता:

(११) विशेष कठिनाईयों का विवरण -

बा:

सही 

गोस्सनर एवं जेलिकल लूथेरान चर्च

जोइन्ट मिशन बोर्ड

गांव.....Rourkela.....

पोस्ट आफिस.....Rourkela-1.....

जिला.....Sundergarh.....

प्रान्त.....Orissa.....

सेवक का नाम.....Rev. P.C. Mishra.....

सन १९६२ के July महिने का रिपोर्ट

(१) प्रतिदिन का बिसेष काम

- १ पाद्री श्री. सी. आर्बिट के आने से उत्तम सामान दिया।
- २ किरपानी और जलडा गिरजा घर के खंभे में से Rev. Rouse से मिला।
- ३ जडा कुंदर कर्मचारी महबारी मिटिंग गया और उपदेश
- ४ तैयारी करा दिया। ... के आर्बिट - बहिनो से मिला।
- ५ लालपुरी और देवगांव के आर्बिट - बहिनो से मिला।
- ६ पाद्री श्री. सी. आर्बिट ने मुझे चपट रखा।
- ७ रेलवे फौलोती बडामुंडा के आर्बिट - बहिनो से मिला।
- ८ रेलवे फौलोती बडामुंडा में गिरजा किया।
- ९ सेक्टर १५ के आर्बिट से मिला।
- १० सेक्टर १५ के श्री पतरु लकडा से सावधान - काक
- ११ सेक्टर १५ के आर्बिट - बहिनो से मिला।
- १२ राउरकेला टाउन के आर्बिट से मिला।
- १३ महुलपाली के बिना मड से देखा।
- १४ अगामी एनवा में तैयारी करलिये घर में ठहरा।
- १५ रेलवे फौलोती में गिरजा किया।
- १६ पडवोली में आर्बिट - बहिनो समाज किया।
- १७ अधिक वर्षा होने के कारण कली नदी
- १८ जा सका।
- २१ विदुजा
- २२ - रांगरपली में आर्बिट से किया।
- २३ - देवगांव के आर्बिट से मिला।
- २४ - महुलपाली के आर्बिट से मिला।
- २५ - अधिक वर्षा के कारण कली नदी जा सका।
- २६ पानपोर में आर्बिट समाज किया।
- २७ - सावधान - काक से Rev. Rouse से मिला।
- २८ जडा कुंदर जाने में तैयारी में कली नदी
- २९ गया।
- ३० सेक्टर १५ और १६ के आर्बिट से मिला।
- ३१ उरगापुर के आर्बिट - बहिनो से मिला।

(२) महिने की विशेष बात :—

महिने की विशेष बात

(३) गिर्जे की हाजिरी :

खुस्तान अखुस्तान

१ला एतवार...

...

...

२रा "

...

...

३रा "

...

...

४था "

...

...

५वां "

...

...

(४) धर्म खोजकों की संख्या

...

...

१ पुराने—

२ नये जो बीते महिना हुए—

(५) स्नान पाये हुआ की कुल संख्या—

(६) दड़िकरण पाये हुआ की कुल संख्या—

(७) महिने की मण्डली आमदनी—

रु० ६९४ . ८० न. ५

,, का मण्डली पैसा—

(८) मैं ने ता: को रु: न: पै:

..... महिने का तलब और रु: न: पै:

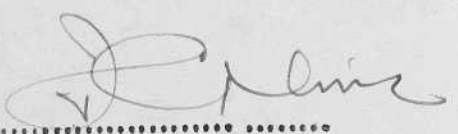
टी ए० और रु: न० पै० अन्य बाबत पाया ।

(६) मैं ने रु न० पै
के पास ता: को भेज दिया ।

(१०) अपने मरहली को विशेष आवश्यकता:

(११) विशेष कठिनाईयों का विवरण -

वा:

सही


गोस्सनर एवं जेलिकल लूथेरान चर्च

जोइन्ट मिशन बोर्ड

गांव... Rourkela...

पोस्ट आफिस... Rourkela-1

जिला... Sundergarh

प्रान्त... Orissa

सेवक का नाम... Rev. P. C. Mishra

सन १६.६२ के... June महिने का रिपोर्ट

(१) प्रतिदिन का बिसेष काम

- १ } खुटीली के Manager ने अपने काम की सहायता
- २ } में मुझे बंडामुडा रिलाया।
- ३ } बंडामुडा रेलवे कोलोनी में प्रभोजन कराया।
- ४ } Herman Lalra के कार्य में New township गया।
- ५ } Dr. Pung Lens (Khetaboli) के साथ बंडामुडा रेलवे स्टेशन गया।
- ६ } रेलवे कोलोनी में बसिमा।
- ७ } गिरजा प्रशाम की बेटे के लिये कपटमुडा गया।
- ८ } सेकर ५ और १० के गड्डे बहिनो से मिला।
- ९ } हतवार की बंगला के लिये घर में रहा।
- १० } रेलवे कोलोनी में गिरजा कराया चलाया।
- ११ } पुरानी माता से Dr. Pungch से मिला।
- १२ } राउरकेला (पुराना) मंडली की गड्डे की बहिनो
- १३ } के साथ Rev. Kloss के पास गया था।
- १४ }
- १५ }
- १६ } हतवार की बंगला के लिये घर में रहा।
- १७ } दंगरपली मंडली में गिरजा कराया में ने किया।
- १८ } दंगरपली और लालाहंका के गड्डे बहिनो से मिला।
- १९ } आकबर माता के डीरु घर में रहा।
- २० } आकबर माता के डीरु घर में रहा।
- २१ } आकबर माता के डीरु घर में रहा।
- २२ } आकबर माता के डीरु घर में रहा।
- २३ } आकबर माता के डीरु घर में रहा।
- २४ } आकबर माता के डीरु घर में रहा।
- २५ } आकबर माता के डीरु घर में रहा।
- २६ } आकबर माता के डीरु घर में रहा।
- २७ } आकबर माता के डीरु घर में रहा।
- २८ } आकबर माता के डीरु घर में रहा।
- २९ } आकबर माता के डीरु घर में रहा।
- ३० } आकबर माता के डीरु घर में रहा।
- ३१ }

(२) महिने की विशेष बात :—

इस माह में देखा गया कि अक्टोबरी में
पूजाओं में इससे विरक्ति अनुसार गिरजा
मंदिरों में भी। मंदिरों में भी—कहिल
जाना और वापस चले गए।

(३) गिर्जे की हाजिरी :

खुस्तान

अखुस्तान

१ला एतवार...	...	...
२रा ,,	...	...
३रा ,,	...	...
४था ,,	...	...
५वां ,,	...	...

(४) धर्म-खोजकों की संख्या ...

१ पुराने—

२ नये जो बीते महिना हुए—

(५) स्नान पाये हुआ की कुल संख्या—

(६) दंडिकरण पाये हुआ की कुल संख्या—

(७) महिने की मण्डली आमदनी—

रु० २, ७१ न. ५०

,, का मण्डली पैसा—

(८) मैं ने ता को रु: न: पै:

..... महिने का तलब और रु: न: पै:

टी. ए० और रु: न० पै० अन्य बाबत पाया।

(६) मैं ने रु न० पे
के पास ता: को भेज दिया ।

(१०) अपने मण्डली को विशेष आवश्यक्ता:

(११) विशेष कठिनाईयों का विवरण -

30.6.62
ता:


सही

गोस्सनर एवं जेलिकल लूथेरान चर्च

जोइन्ट मिशन बोर्ड

गांव.....Rourkela.....

पोस्ट आफिस.....Rourkela-1.....

जिला.....Sundergarh.....

प्रान्त.....Orissa.....

सेवक का नाम.....Rev. P. C. Mishra.....

सन १९८२ के.....May.....महिने का रिपोर्ट

(१) प्रतिदिन का बिसेष काम

- १ } पुरानापानी मंडली को गडबडी की मौखिक और लिखित
- २ } रिपोर्ट उठरेकहर ले.एम को को केले रांची को कर
- ३ } में एच.एम किया / ताकि हम लोगो को बाते K.S.S. में
- ४ } रखनी पड़े।
- ५ } पुरानापानी गिरजा घर में बाग में लो को उनके को रोहने में
- ६ } में बाग को आरामता में मेरी पारा होते हुए को कंडि. लो
- ७ } पानशेष के आर्ब. बहिनो के लो किन्ही ने किया।
- ८ } पुरानापानी के अगड़े के पिछम कोराला खुलाने के निमित्त S.I. ले
- ९ } बंडामुडा के आर्ब. बहिनो से खुलास्त में किया।
- १० } लेकर १५ के आर्ब. बहिनो से खुलास्त में किया।
- ११ } S.I. के अगड़े के बिषय बातचीत।
- १२ } पिछोपिछो दूरा मेरी विरुध दिने anamandum को दिखाने के
- १३ } K.S.S. को और ले एक anamandum लिखे S.I. ले खुले खुलासा
- १४ } में अपने सामानो को लेकर ५ से अपना उरा ले गया।
- १५ } मेरी उरे पर आवश्यक मिडिंग।
- १६ } नोबल जेत को और ले अनोजित बायोमिकेरा कलाको मिडिंग के
- १७ } पुरानापानी मंडली के आर्ब. बहिनो के जान रात बहर, पुरानापानी
- १८ } और बहिनो बहिनो ने आर्ब. बहिनो से खुलास्त किया।
- १९ } पुरानापानी मंडली के लिए मंडली पैन का संयोजन किया।
- २० } आवश्यक कामो को करने के लिये घर में रहा।
- २१ } S.I. को पंडित से आर्ब. बहिनो गिरजा घर बनाने के निमित्त एक
- २२ } आवश्यक कामो के कारण जमान को खोज में जोषी पलो गया।
- २३ } बंडामुडा तथा मण्डमुडा के आर्ब. बहिनो से खुलास्त को
- २४ } लेकर २ के आर्ब. बहिनो के साथ अनंत मिडिंग।
- २५ } जोषी को Mr. Herman Lalra (Khudiboli) के कामो में साथ
- २६ } पानशेष में एतवार आरामता और समुहोज। किया।
- २७ } पहाड़पोली में अनंत मिडिंग किया।
- २८ } लेकर २० को एक वक्त को सख को पोदे आरामता तक
- २९ } पुलिस आगिस पाया तथा उसको अपने नेह में मिडि देना
- ३० } श्री कर्मान लकडा (रुहोपोली) के कामो को लखता के
- ३१ } लिखे कंडामुडा रेलवे स्टेशन गया।

(२) महिने की विशेष बात :-

पुरतपाती में-ली लिखके लगाई करे म-
K-S-S के निम्नी प्रका वर्य किता । मसल कुला
मौनलं कचपन उत में-ली के पावरी ठहराये गये और
ने काम करने से रोका गया ।
कमिशन ने परिचिन्ति मसल कुला इस प्रका म
कमल कठ कतता हुआ काम को किगाई दिया ।

(३) गिर्जे की हाजिरी :

खुस्तान

अखुस्तान

१ला एतवार...	...	...
२रा "	...	...
३रा "	...	...
४था "	...	...
५वां "	...	...

(४) धर्म-खोजकों की संख्या

१ पुराने—

२ नये जो बीते महिना हुए—

(५) स्नान पाये हुआ की कुल संख्या—

(६) दड़िकरण पाये हुआ की कुल संख्या—

(७) महिने की मण्डली आमदनी—

रु ७३ १३ न० पै०

„ का मण्डली पैसा—

(८) मैं ने ता को १५२ रु नः पैः

मंड महिने का तलब और मत्त रु नः पैः

दी ए० और रु न० पै० अन्य बाबत पाया ।

(६) मैंने रु। न० पै०

के पास ता: को भेज दिया ।

(१०) अपने मण्डली की विशेष आवश्यकता:

(११) विशेष कठिनाईयों का विवरण —

वा: 31.5-62

सही 

गोससनर एवंजेलिकल लूथेरान चर्च

जोइन्ट मिशन बोर्ड

गांव.....Rourkela..... पोस्ट आफिस.....Rourkela-1.
 जिला.....Sundergarh..... प्रान्त.....Orissa.....
 सेवक का नाम.....Rev. P. C. Mishra.....
 सन १९८२ के.....April.....महिने का रिपोर्ट

(१) प्रतिदिन का बिसेष काम

१
२
३
४
५
६
७

study leave.

८ रेलवे कोलोनी में गिरजा किछा ८ पुनः अपने काम में लगे।
 ९ पुराना पानी के विषय जानकारी के लिए मंडली से मिली।
 १० बहिन लोकोटरी के लीगो के लान राणागाधूर अंचल अस्पताल के पास गया।
 ११ पुराना पानी मंडली के रंजनी से मंडली की गड़बड़ों के संबंध में
 १२ अंचल अस्पताल के आटेबाबुसा निवासी के संपर्क में।
 १३ मंडली में गड़बड़ों की वृत्ति लगातार सुबह एक घंटे से उपाय में
 १४ गड़बड़ों की रोकने के लिए S.P. से अर्जी की।
 १५ पुराना पानी मंडली में मेरे बचपन वाली लीगो मिल गया पाठ का
 १६ अंचल अस्पताल के लान गड़बड़ों के संबंध में सेक्टर के गिरजा किछा।
 १७ पुलिस अधिकारियों के पास अंचल अस्पताल का मेरे विषय गैरकानूनी
 १८ गला थुक्राया के लिए सेक्टर ५ में दाखल का अस्पताल।
 १९ पुराना पानी मंडली सेक्टर के लान पुलिस अधिकारी से मिली।
 २० गला थुक्राया का विषय मैंने किया जिसने विरोधियों ने आशय
 २१ उन लान गैर की विषय आशय के लिए R.C.C. में आगे गड़बड़ों के
 २२ अंगित पुलिस को परामर्श दे अतिशूरक लान आशय के।
 २३ अंतर गड़ के पिक्नीक।
 २४ सेक्टर ६ के गड़-कहानी से मिलना।
 २५ गायब कानों को करने के लिए चार के रेल।
 २६ सेक्टर ५ में मिडिंग।
 २७ अंचल अस्पताल को R.C.C. के जेल से मिलने में लान दिया।
 २८ मेरे विषय अंचल अस्पताल की गड़बड़ों की विषय R.C.C. के
 २९ आज भी मैं पुराना पानी मंडली के विषय करने से परा रेलवे में
 ३० मैं पुराना पानी मंडली के विषय गड़बड़ों के लान R.C.C. के जेल से
 ३१ से अंचल अस्पताल को गड़बड़ों का भंडाल मांगा।
 K.S.S. के लान अंत को पेज करने के लिए रंजी
 दाया।

(२) महिने की विशेष बात :—

(३) गिर्जे की हाजिरी :

१ला एतवार...

२रा "

३रा "

४था "

५वां "

(४) धर्म-खोजकों की संख्या

१ पुराने—

२ नये जो बीते महिना हुए—

(५) स्नान पाये हुआ की कुल संख्या—

(६) दृढ़करण पाये हुआ की कुल संख्या—

(७) महीने की मण्डली आमदनी—

,, का मण्डली पैसा—

(८) मैं ने ता को रु: न: पै:

..... महिने का तलब और रु: न: पै:

टी ए० और रु: न० पै० अन्य बाबत पाया ।

(६) मैंने नं० पे०

के पास ता: को भेज दिया।

(१०) अपने मण्डली की विशेष आवश्यकता:

पुरतर्पणनी तैलनी को ०३०३० को अन्त
न(ने के निमित्त १०-५.५. को कोर के एक
०००००००००० के निमित्त लेने को कोर।

(११) विशेष कठिनाईयों का विवरण -

देखे गए कि पाद्री ली० ली० दिनेश और पा०
विनोद लका मोटे केरुनाथ को मंडली पुरतर्पणनी
में अतिरिक्त गिरा। तब १२, २०, २२ को निधा
यह मंडली डाक में नहीं है। मैं के उस
मंडली का लगेत किता और ठाने भाति
बर्क पाए लाल अक्षरों में हुआ। ठाने को
पा मंडली से ललपत हुआ और मंडली के
मार्ग तिर किता हुआ। ली डाक अगुवाई
में लोगों ने कुछ पछे गिरा न(ने से
कोर, अक्षरों के साथ ०३०३० - को
०३०३० (Branch of Peace) को ललपत
देखने लगे कि ५.५. को ललपत पागे
उत्तरी ललपत को ललपत से मंडली में को
पीट को - हुआ।

ता: ३०.५.१९६२

सही



18.57
66.03
30.00
15.40
21.49

151.49

70.00
64.89

73.13

8.71

64.97

39.60

43.75

102.46

50.32

40.17

15.6
1.4
142.
4.19
137.81

4119

May

June

July

August

Sept

Oct

Nov

Dec

गोस्सनर एव'जेलिकल लूथेरान चर्च

जोइन्ट मिशन बोर्ड

गांव.....Rourkela

पोस्ट आफिस.....Rourkela

जिला.....Sundergarh

प्रान्त.....Orissa

सेवक का नाम.....Rev. P.C. Mishra

सन १९६२ के.....⁶¹ N.V. - March 62 महिने का रिपोर्ट

(१) प्रतिदिन का बिसेष काम

१

२

३

४

५

६

७

८

९

१० ↓

११

१२

१३

१४

१५

१६

१७

१८

१९

२०

२१

२२

२३

२४

२५

२६

२७

२८

२९

३०

३१

पुराना पानी नई नदी में शरीर डीप
मुंजनी कारा नदी का किनारा बोन
चार जो नदी का किनारा है
पुनः नदी पर परिवर्तन देना शुरू
करा

Study Leave

करीब छुट्टी के सप्ताह
एक सप्ताह के लिए नदी का किनारा
शरीर के लिए नदी का किनारा
नदी के किनारे नदी का किनारा

(२) महिने की विशेष बात :—

(३) गिर्जे की हाजिरी :

खुस्तान अखुस्तान

१ला एतवार...	...	...
२रा ,,	...	...
३रा ,,	...	...
४था ,,	...	...
५वां ,,	...	...

(४) बम्ब खोजकों की संख्या

१ पुराने—

२ नये जो बीते महिना हुए—

(५) स्नान पाये हुआ की कुल संख्या—

(६) दड़िकरण पाये हुआ की कुल संख्या—

(७) महीने की मण्डली आमदनी—

रु० १२१.४६ ना ५०

,, का मण्डली पैसा—

(८) मैं ने ता को रु: न: पै:

..... महिने का तलब और रु: न: पै:

टी ए० और रु: न० पै० अन्य बाबत पाया ।

(६) मैं ने रु० न० पै०

के पास ता: को भेज दिया ।

(१०) अपने मण्डली की विशेष आवश्यकता:

(११) विशेष कठिनाईयों का विवरण -

वा:

सही


7.2.64

P.C. Ming,

Camp Rumbula

The following things urgent:

- ① copy of the deed
- ② Censuses for 1963
- ③ Monthly reports -
- ④ Estimate for Chapel + Drs.

H 7/2

BOARD OF MANAGEMENT
OF THE PROPERTIES OF THE G. E. L. CHURCH
HEAD OFFICE: G. E. L. CHURCH, RANCHI.

Ranchi

3-1-1964

The Rev. P. C. Minz,
Pastor, G. E. L. Church,
Rourkela

Dear Rev. Minz,
I am told that you have brought
some case against some members of
the Church in the court of law on account
of which our Gossner Mission Director
Dr. Berg could not take part in the
Reception which you had arranged.

Please let me know at
once about this matter. I shall be
anxiously waiting to hear from
you in this connection.

Yours sincerely
J. B. G.
Director

BOARD OF MANAGEMENT
OF THE PROPERTIES OF THE G. E. L. CHURCH
HEAD OFFICE : G. E. L. CHURCH, RANCHI.

1 Chairman

Rev. J. J. P. TIGA M. A., B. D; S. T. M.
President, G. E. L. Church, Ranchi.

2 Secretary

Mr. P. D. KANDULNA B. A.
27, Hume Pipe Road,
P. O. Jamshedpur,
Dist. Singhbhum.

3 Treasurer

Mr. P. D. KANDULNA B. A.
27, Hume Pipe Road, Jamshedpur.

Ref......

Dated.....

4 Member

Mr. N. E. HORO, B. A.,
Secretary,
G. E. L. Church, Ranchi.

5 Member

Mr. C. M. HORO
Treasurer,
G. E. L. Church, Ranchi.

6 Member

Mr. ELEAZAR LAKRA,
New Garden, Siromtoly
Ranchi.

7 Member

Dr. PATRAS TOPONO,
Lal Siromtoly,
Ranchi.

STAFF:

1 Manager

Mr. P. D. KANDULNA, B. A.,
27, Hume Pipe Road,
P. O. Jamshedpur.

2 Assistant Manager

Mr. NAEMAN TOPPO,
G. E. L. Church
Ranchi.

3 Tahsildar

Mr. DANIEL EKKA,
G. E. L. Church,
Ranchi.

C/349, Sector 16

Rourkela-3.

7.2.64

The Director

Joint Mission Board.

Dear Sir,

I received your letter dated 3.2.64. I thank you for the same.

In reply I have to write as follows:

1. I have brought no case in the Court of law against any member of the church, not even, in any church Court.

2. I got two letters one from the Pramukh Achhyaksh Dr. Bage and the other from the Rev C B Arnd. Achhyaksh Onssa Anchal. In both of these letters I was directed to arrange for a reception in honour of Gosner Mission Director Dr. Berg. I got the letter from the Onssa Achhyaksh on 5.1.64 and at once I tried to contact Rev C B Ekka and Rev E A Kundo through Shri J A Tiley, Mrs Hemron, myakub Khalkho and ^{Mr} David Orega whom I met personally. I talked with Shri Santosh Topoo and contacted also Mr S. J. Horo

through him. I arranged for a meeting at my quarters on 8.1.64 at 6.30 P.M. in order to make the arrangements. A good meeting took place. All concerned were informed by me to assemble at 5 P.M. on 10.1.64 at Ply. Glory the place of worship. About 30 Christian brothers including Lutherans, Anabaptist Evangelical, Lutheran, Anglican, Methodist, C.M.S. and about 150 non-Christians were waiting for Dr. Berg. We two pastors Rev S. Soy of Raitobinkura, Mr. S.J. Horo, Mr. A.M. Topno, Mr. A.M. Luguu, Mr. Julius Turkey, Mr. K.M. Kujur, Mr. P.P. Kerketta, Mr. J.F. Kerketta, Mr. M.D. Timu, ~~Kerketta~~ Mr. Kalep Kuo and I were among those who were waiting for him till 8.45 P.M.

We were very much disappointed and specially the non-Christians because we could not get the message we expected from our most respected Director.

As far as I could ~~not~~ I tried to do the task given

to me by the Pramukh Adhyaksh
Dr. Bage and the Adhyaksh Rev.
C. B. Aind.

with best regards,

yours truly,

J. P. Linz

Pastor, 7.2.64

G. E. L. Church,

Ranikela.

Copy to -

1) The Pramukh Adhyaksh,
G. E. L. Church, Ranchi.

2) The Adhyaksh,
Onssa Anchal, Rajgangpur.

G. E. L. CHURCH, ROURKELA

SUNDERGARH, ORISSA.

C/O 30, Sector 6

Rev. P. C. Minz, L.th.
Chairman

Rly. Doubling Colony,
Rourkela - 2

Ref. No.

Dated 25.3.1963

The Adhyaksh,
Orissa Anehal,

Dear Sir,
I along with Rev. Durgachand
Birnutrapur made a personal
approach to have a talk to you
on 22.3.63 but unfortunately you
were not available at the head quarters
And now I ~~now~~ have to write you
what I would have talked to you.

As per advice on 8.3.63 I
contacted Mr. P. Dey for his sugges-
tion of a place to hold a meeting
on 31.3.63. He has very kindly
suggested me three places
which are as follows -

Abstract from his letter of 15.3.63
1) Pinnapani Church - we have
birth right to claim on this, but I
am afraid you cannot call a
meeting for holding there, as
you have been debarred from
doing any pastoral activities p/o

(2)

than as per Adhoc Committee arrangements by the Commission at present.

2) Mahulpali Church - keeping other things equal meeting can be held there, but I doubt you will be able to hold the meeting there.

3) Samuel Church (Ply Colony Doubling Colony) - the property belongs to Mr. Samuel Topko, but we had 4 years continuous church services there and as such we have about $\frac{1}{3}$ of the occupancy right (as per your version).

The above mentioned places have been rightly suggested by Mr. P. Dany to which I do quite agree to hold the meeting under your auspices.

Sir, now it is up to you to select one of these places for the same. I shall be very gladly attend the meeting at any one of these rightly suggested places only and I shall ask others also to attend it. It will be another most important meeting after the Commission appointed by the K.S.S. last year, in the Church history of Rowkela.

G. E. L. CHURCH, ROURKELA

SUNDERGARH, ORISSA.

Rev. P. C. Minz, L.th.
Chairman

Rly. Doubling Colony.
Rourkela-1

Ref. No.

Dated 196 .

I appreciate you that you have talked of this meeting to the Director J. M. B. and he has agreed to attend so that I and others might not misunderstand you.

From you and others I learnt that the complains against me have been made also to other officers of the J. M. B. specially to its chairman Rev. Kloss I gathered experiences in the last few months (last years) several complains have been made against me e.g. from Old N. 2 and Mr. S. J. Horo have been made to Rev. Kloss which put him into ~~un~~necessary and unnecessary trouble and gave him right and wrong impression against me. In order to let him have the right knowledge of Rourkela he also be asked to attend the meeting.

P.T.O

(4)

I am doubtful if an invitation for this meeting is extended ^{to him} he will be prepared to attend the meeting within a short period.

At present in spite of non-cooperation of our people I am trying my level best to get a place temporarily arranged for Sunday worship. (Good Friday and Easter Day which are drawing nearer and nearer). We have decided at our recent meeting to have one place worship for the people of whole Romkela Parish consisting of at present five or six congregations on Good Friday (12.4.63). In the past weeks since we agreed upon to call this a meeting on 31.3.63 I was busy after this and I shall be remained busy in the next weeks also.

This big project might keep me fully engaged. And owing to this I might not get time to keep the things ready for inspection on 31.3.63.

I and the people of Romkela

G. E. L. CHURCH, ROURKELA
SUNDERGARH, ORISSA.

Rev. P. C. Minz, Lth.
Chairman

(5)

Rly. Doubling Colony.
Rourkela-1

Ref. No. _____

Dated _____ 196 .

Pamsh will remain very much grateful to you if you will kindly suggest a suitable place where this purpose of ours shall be served to the best satisfaction temporarily or permanently.

If you will stick to the date agreed upon for the meeting on 31.3.63 without selecting the place another chairman will be added to me to inform the people. ~~I shall~~ Keeping aside the above mentioned task I shall have to go from door to door to tell them of this meeting. So far I have not informed the people officially as the place is not ascertained for this.

Keeping in mind the present situation of difficulties and the unsuitability of date to me and others I pray you to kindly postpone it and fix a

day sometime after the Easter ^{day} ~~in~~
to which the notice may kindly
be given to the officers of the J. N. B.,
to the complaining party and me.

In the mean while let our non-
co-operation grow more and more
and more complaints against me
from here be submitted to the
authorities concerned, till the
congregations in Rowkele are
completely disorganised and destroyed.
during your ^{very} first term of Adhyatshakti
in Orissa Anchal.
with best regards

yours truly,
Rev D. P. Sinha
25.3.63.

copy to

The Director
J. N. Board.

C/230, Sector 6
Rowkela-2.
15.3.63.

The Director,
Joint Mission Board.

Dear Sir,

When I shifted to the new-
township I rightly told you in
the first week of Jan, 63 to get
a H.S.L. quarter preferably at
Rs. 30/- per month as its quarter-
rent. Accordingly ~~to~~ you ~~directed~~
directed Rev. J. Soy to send the
money. The quarter rents along
with my salary for the month
of Jan & Feb. 63 have already
come to the Achyalesh. But
I have to let you know that
I did not draw it as the
said quarter was not occupied
by me. Still now I am
staying with Mr. S. Tige
occupying one room. Since
he has given me one room
seriously he is feeling much
inconvenience ~~to~~ with his
family. As he has showed

You please come down to.

Rowkela on 21.3.63 at the latest
though the furnished money will not
be received 31.3.63
A. J. J.

his generosity to ~~me~~^{us} at this crisis,
now it is upto him & you and
Rev. C. B. Arndt to decide ~~whether~~
if he be given a lump sum
(not rent) in return to his genero-
sity. It must be mutually decided
by you both. If the payment is
taken up for consideration it may
be fixed between Rs. 8-10.

The offoresaid quarter is
under ~~consideration~~^{negotiation}. The quarter
owner is willing to give it
temporarily for a period of six
months but the quarter rent is
not yet disclosed by him.
~~For~~ Indirectly I have heard
he wants to give it at Rs. 60/-
per month.

I am making contact with other
H. S. L. employees also to get a
quarter at little lower quarter
rent. If you agree to the said
quarter ~~at~~ at Rs. 60/- P.M. I shall
occupy it soon. Till some agree-
ment is made of a quarter the

House rent must not be sent here
after.

I received my salary from ~~Rev. C.B. Ains~~ Mrs.
Ains ~~£~~ a sum of Rs. 146.00 and for Feb
63 and Rs 3.42. as being the payment of
medical bill on 22. 3. 63 even in his
absence from the Hd. Quarters.

With best regards.

Copy to

Rev. C.B. Ains,
Rajgurun.

yours truly
Rev. J. G. Ains

Railway Colony Congregation
G.E.L. Church, Rourkela-1.
Dt. 14-12-63.

My dear Kerketta.

Sub:- One warship at Rly. Colony.

Ref:-Your letter dt. 4-12-63 and
our discussion dt. 8-12-63.

Yishusahay, We had a talk on the above subject
and concluded the following.

That, Since Rev. P.C. Minz dissolved the constitutionally formed Mandli Panch on baseless grounds and made a attempt to crass this congregation by neglecting its pastoral activities, this congregation has been amalgamated with Ispat Township congregation under the kind shephardness of Adhyksha, Orissa Anchal. As such, if at all any meeting or discussion is to be held, should occure with the amalgamated Mandali Panch having the Adhyksha on the chair which I believe to be the correct and short cut solution of this dispute.

however, further discussion if necessary
may kindly be referred ~~xxx~~ to the Mandli Panch,
Ispat Town direct.

Hope our conclusion will percolate cool
stream between the detached group and join us to
observe happy colourful ' CHRISTMASS' 1963.

With love.
Your's truely in Christ.
Sd/ S. Herenz.

14-12-63.

Copy to Sri S.J. Horo, for information. This has
ref. to our verbal talk on 9-12-63.
Copy to the Anchal Adhyksh, Orissa for information

Panpoh
22.12.63.

My dear Mr. Herenz.

Many thanks for your kind letter dated 14-12-63. In reply I have to point out that the Railway Colony Congregation continues to worship on the same place where it has been worshipping for the last six years. It is very ~~stxxx~~ strange for you to call your group as "Railway Colony Congregation", I do not think that Adhyaksh ~~Rev.~~ C.B. Aind who is a very wise administrator will agree to be the Chairman of a meeting in Rourkela without the express invitation from the present Constitutional authorities of Rourkela.

The flimsy grounds you have given as your reasons for separating yourselves from this long standing and well established Congregation are not justifiable and are not accepted. We are also sorry to note that you never brought this matter neither before the Mandal Panchor any other proper authority for about one full year nor called a meeting in this respect and you are pointing it now which appears to be out-dated.

I think that you are mislead and misguided. We ought to think or do on the constructive line and Not on ~~xxxxxx~~ destructive line.

As a very sincere friend and brother I ^{would advise request} ~~xxxx~~ you to come back and join us in the worship in our usual place. This is the only right way to celebrate the happy "X mass".

Sincerely yours.

Sanjeev
22/12

Copy to Anchal Adhyaksha, Orissa.

Director, Joint Mission Board.
for information.

TRUE COPY.

A drive for establishment of the Lutheran Community in Rourkela under the rapidly growing conditions.

The Lutheran Christians have a very poor record in the History of Rourkela in comparison to other communities. Although ~~there~~ there are two old well established Lutheran Congregation with their own chapels, one at Mahulpali and another at Furnapani (Now sector-18), the position of the people at present is very pitiable. The church at Mahulpali is still existing, ~~while~~ while the other has been demolished by the authorities for the purpose of establishment of the Steel Plant in Rourkela. In both the aforesaid places Church services are regularly being conducted untill to day and the members who are residing near about these places attend Church services in them. But in both the said churches there is need of proper administration and as such there is neither ^{prosperity nor progress of belief} any establishment. Besides these there are also several other places where church services are functioned by the people in Rourkela which they have formed themselves under the leadership of rev. P.C. Minz for the sake of convenience and easy ^{approaches} ~~upprogress~~. In other words it may not be out of place to say that as there is no establishment for the people of Rourkela for their worship or to offer prayer to their Lord, ^{thus} ~~Thus~~ they have been scattered like any thing.

There are authorities over all these aforesaid Congregations who are managing the work whatsoever but there is no prospective and peaceful drive to lead the people towards better establishment, there are multifarious thought and leaderships. In every place where there is a Christian Congregation the people are told that they will be established some day by being provided with sites for chapels or Churches by the authorities which they have attempted-. All these Congregation have their own views. They are not of one agreed opinion with each other in any point. All

have hopes of becoming successful and being fulfilled of their demands which they have made before the authorities. No body opens his eyes to see that he is coming out of a single tree. All ^{have forgotten} have further to remember that a branch can not establish itself by going way from the tree. This point of view is frequently prevailing among the people of these place. It may be said that the people have become overcome with superfluous and evil understandings. It is natural that the inhabitants will automatically become unsubmissive and uncultured where there is want of establishment..

It is therefore become urgent to have a drive for establishment of the Lutheran Christians in Rourkela. Since 1958 Rev. P.C. Minz of the joint mission Board has done his best to gathered the scattered Christians and started holding Church worship on sundays and on Weekdays. Some times he held services on three places on the some sundays. Unfortunately later on a spirit of division began to work among Christians in Rourkela which may be described in the following way as far as my knowledge goes:-

Various Church services conducted by various Pastoral leaders.

I.	II.	III.	IV.	V.
Rev. P.C. Minz.	Rev. C.C. Minz.	Rev. C.B. Aind.	Rev. C.A. Kundo.	Rev. C.B. Ekka.
		Rev. S. Soy.		
(1) Railway Colony Rourkela-1.	(1) Jalda	(1) Mr. Herenz's quarters since 30-12-62.	(1) Jhir pani.	(1) Pura pani.
(2) Railway Colony Bandomunda	(2) Mahulpali.	(2) Mr. S. Toppo's qrs. Sector-16. since Sept. 1962.		
(3) Resettlement Colony Bandomunda.		(3) Mr. P. Dange's qrs. Sector-20.		
(4) Tangarpali.		(4) Jalda since Oct, 1963.		
(5) Panposh.				

It will be seen from this that the Rourkela Lutheran are under five separate Pastoral leaders and it appears

that the Pastors~~xxx~~ are playing with the Lutheran Christians here and it may be that in the end they will destroy the Lutheran Community and nothing will remain. The measures for the drive for establishment of the Lutheran Christians in Rourkela may be set up under the following points at issue:-

1. ~~Rourkela~~ Rourkela is now an Industrial town. The Christian community of the Lutheran Church must be governed by the Central authority duly appointed by the K.S.S.
2. There should be regular and registered office duly established by the said authority. This Office must be fully under the control and disposal of the said authority.
3. As this is a growing town special efforts should be taken to cope with the supervisory work and future development and establishment for this place.
4. There should be at least two Pastors well versed and qualified for this place.
5. There should be special staff in the Lutheran Church office for maintenance of records of this place.
6. There should be proper arrangement of conveyance and means of tours and journeys for the Pastors in Rourkela.
7. There should be duplicating and typewriting machines in order to circulate useful information and instructions among the members.
8. The people in Rourkela are to know that they are to build up their community in Rourkela by themselves. No body else will build ~~it~~ it for them. They must be joining in the drive for establishment in single mindedness^{men} and in one spirit.
9. They must jointly fight for their demands for establishing themselves in Rourkela without which there is no possibility of success.

10-(a) They must fight for a Church to be built at
Contd-4.

at Sector-18, Rourkela-2.

(b) They must fight for a Church to be built at the Railway Colony at Rourkela-1.

(c) They must fight for development and improvement of the Mahulpali Church in Rourkela-1.

It is hopeful that the Honorable Director Rev. J.J.P. Tiga of the joint Mission ~~trusts~~ Board will take these problems in the best and highest levels of considerations and will pour down drops of refreshing water in the deserted heart of the Lutheran citizens and wash out the tears of being ^{long} weeping fellow folks. We believe that we will get one living word from him to this end.

Sd/ Z. Ekka.
Uditnagar.
Rourkela.

Encl:-

A copy of a letter
from Sri S. Herenz to
Mr. Kerketta for information.

Services held by various pastors
~~Services~~ ~~Barakala~~ Dec. 14, 15. ~~14~~

- I Rev. P.C. Minx x II Rev C.C. Minx III Rev C.B. Bird
 or Rev S. Soy
1. Rly Colony Rkela! 40 families 1 Jolda 1 Mr S. Henning's quarters
 (X) since Dec 30 1962
 2. Rly Colony Banda 40 families 2. Jhokul palli 20 f 2. Mr S. Tonono's
 20 f 20 f Mrs - Dr no. A104
 3. Resettlement colony 30 f 3. Sector 16
 Bandamunda 25 families since Sept 1962
 4. Tancanalli 30 families 3. Mr P. Dany's
 15 - 0 qrs no. C/145
 5. Pan host 8 families 4. Jolda - one
 15 f Section - C Block
 since Oct 1963
 for some brethren
 who have come
 from Barawara

IV ~~Rev C.S.~~ Rev C.A. Kundo
V ~~to~~ Purnipani VI Rev C.B. Elella

- ① These two groups have gone out of Purnipani
- ② Have gone out of Jolda
- ③ Has gone out of Rly Colony - since Jan 1963
 visited by Revs Bird & Soy - about
 20 families

The Parish was dissolved by the K.S.S.

G. E. L. CHURCH, ROURKELA

SUNDERGARH, ORISSA.

Rev. P. C. Minz, L.th.
Chairman

Ref. No.

C/349, sector 16
Rourkela-3

Rly. Doubling Colony.
Rourkela-1

Dated 31.1. 1964

The Director,

Dear Sir,

I regret to inform you that I ~~am~~ have not yet completed the Annual report to be submitted to you. There are two congregations which have not yet given me the same.

The correct figure which was due from Shri Sohan Tisa to the Church is Rs. 33-88 N.P. only. Please fill it up. The total amount which Shri Sohan Tisa owed to the Church was Rs. 242-85 N.P. only.

~~I do~~ Lastly, I have to go to Jagrakhanda to bring my wife here. I may leave Rourkela on the 12th night and come back

on 17th morning. Please grant
me 5 days leave.

Rest is all right.

yours truly,

S. P. Lin

Case of Sri Shau Tiga

Mandli Audani during the
tenure of his Treasurership -

Rs 208.97 up.
242.85

Rent Jan 63	30.00
Feb 63	30.00
March 63	30.00
April 63	30.00
May 63	30.00
June 63	30.00
July 63	30.00
Aug 63	30.00
Sept 63	30.00

270.00
242.85
27.15

Rs 270
Rs 208.97
Rs 61.03
Rs 39.00
Rs 22.03

for a voucher which
was ignored

Rs 270.00
208.97
61.03

This is to certify that Sri Shau Tiga owed Rs 208.97 plus Rs 39.00 to the Ronhela Mandli - total Rs 247.97. Since the pastor's quarters at Rly Colony was destroyed, the pastor occupied part of the flat of Sri Shau Tiga for Jan to Sept 1963. Acddg to the rate of rent at Ronhela the rent was fixed at Rs 30/- (Rupees Thirty) per m. Thus the total amount of rent payable to Sri Shau Tiga was Rs 270/- Vouchers have been obtained but money not paid. Thus the dues are recovered with an excess amount of Rs 22.03 This excess amount has not been paid to him waiting for final action to be taken by the Committee which has not yet met.

J. P. P. P.
15.12.63.

Meeting at Narsela. Rg colony
~~Manda~~ Ranch

Rev P. C. Mux ——— Chairman

Sri K. M. Kufin

Sri Maschda, ~~the~~ Tira

Sri J. Elka

Sri Samuel Toppo

Sri K. Kuo

——— member

Sri Elka, Elka

——— member

Sri Theophil Toppo

——— member

+ Rev. J. J. P. Tiga Director Jm B

It was resolved that the amount owed by Sri. Johan Tiga be considered as squared up and that he be paid the excess amount of Rs 22.03 up. realised from him.

Note for a Church + quarters.

True Copy

Adviser for establishment of the Lutheran community in Rourkela under the rapidly growing conditions.

The Lutheran Christians have a very poor record in the history of Rourkela in comparison to other communities. Although there were two old well-established Lutheran congregations with their own chapels, one at Mohulpalli and another at Purnapauri (now Sector 18), the position of the people at present is very pitiable. The Church at Mohulpalli is still existing, while the other one has been demolished by the authorities for the purpose of establishment of the Steel Plant in Rourkela. In both the aforesaid places Church services are regularly being conducted until today and the members who are residing near about these places attend Church services in them. But in both the said Churches there is need of proper administration and as such there is neither any prosperity nor progress of better establishment. Besides these there are also several other places where Church services are functioning by the people in Rourkela which they have formed themselves under the leadership of Rev. P.C. Mishra for the sake of convenience & easy approachable. In other words, it may not be out of place to say that as there is no establishment for the people of Rourkela for their worship or to offer prayer to

to this road. Thus they have been scattered like anything.

There are authorities over all these aforesaid congregations who are managing the work whatever but there is no positive and peaceful drive to lead the people towards better establishment. There are multifarious thoughts - and leaderships. In every place where there is a Christian congregation the people are told that they will be established some day by being provided with sites for chapels or churches by the authorities which they have attempted. All these congregations have their own views. They are not of one agreed opinion with each other in any point. All have hopes of becoming successful and being fulfilled of their demands which they have made before the authorities. Nobody opens his eyes to see that he is coming out of a single tree. All have forgotten to remember that a branch cannot establish itself by going away from the tree. This point of view is frequently prevailing among the people of this place. It may be said that the people have become overcome with superstitions and evil understandings. It is natural that the inhabitants will automatically become unsubmissive and uncultured where there is want of establishment.

It has therefore become urgent to have a drive for establishment of the Lutheran Christians in Rourkela. Since 1958 Rev. P.C. Minz of the Joint Mission Board has done his best to gather the scattered Christians and started holding church worship on Sundays and on weekdays. Some times he held services in these places on the same Sunday. Unfortunately later on a spirit of division began to work among Christians in Rourkela which may be described in the following way as far as my knowledge goes:

Various Church services conducted by various pastoral leaders

<u>I</u> Rev. P.C. Minz	<u>II</u> Rev. C.C. Minz	<u>III</u> Rev. C.B. David + Rev. S. Seng	<u>IV</u> Rev. C.A. Kundo	<u>V</u> Rev. C.B. Ekka
① Railway Colony - Rourkela 1	① Jolda	① Mr. Herenz's quarters since 30.12.62	① Jhik-palli	① Purna-palli
② Railway Colony Bandanunda	② Midnapalli	② Mr. S. Topono's qrs - Sector 16 since Sept 1962		
③ Resettlement colony, Bandanunda		③ Mr. P. Dang's qrs - Sect 20		
④ Tangarpalli		④ Jolda - since Oct 1963		
⑤ Pauperoh				

It will be seen from this that the Rourkela Lutherans are under five separate pastoral leaders and it appears that the pastors are playing with the Lutheran Christians here and it may be that in the end they will destroy the Lutheran community and nothing will remain.

The measures for the drive for establishment of the Lutheran Christians in Rourkela may be set up under the following points at issue:—

1) Rourkela is now an Industrial town. The Christian Community of the Lutheran Church must be governed by the Central authority duly appointed by the K.S.S.

2) There should be regular + registered office duly established by the said authority. This office must be fully under the control and disposal of the said authority.

3) As this is a growing town, especial efforts should be taken to cope with the supervisory work + future development + establishment for this place.

4) There should be at least two pastors well versed and qualified for this place.

5) There should be special staff in the Lutheran Church office for maintenance of records of this place.

6) There should be proper arrangement of conveyance and means of tours and journeys for the pastors in Rourkela.

7) There should be duplicating and typewriting machines in order to circulate useful information and instructions among the members.

8) The people in Rourkela are to know that they are to build up their community in Rourkela by themselves. Nobody else will build it for them. They must be joining in the drive for establishment in singleminded—

singlemindedness and in one spirit.

- 9) They must jointly fight for their demands for establishing themselves in Rourkela without which there is no possibility of success.
- 10) a. They must fight for a Church to be built at Sector 18, Rourkela-2.
 b. They must fight for a Church to be built at the Railway Colony at Rourkela-1.
 c. They must fight for development and improvement of the Mohulpali Church in Rourkela-1.

It is hoped that the Hon'ble Director Rev. J. J. P. Tige of the Joint Mission Board will take these problems in the best & highest levels of considerations and will pour down drops of refreshing waters in the deserted hearts of the human citizens and wash out the tears of long weeping fellow folks. We believe that we will get one living word from him to this end.

Encl:

A copy of a letter from Sri S. K. S. 2nd to Mr. K. S. Ketter for information

Sd/- Z. Ekka
 Uditnagar,
 Rourkela

True Copy

Railway Colony Congregation
S. L. Church, Roundels-1

My dear Kesappa,

Dt 14.12.63

Sub - One worship at Rly Colony

Ref: Your letter dt. 4/12/63 and
our discussion dt. 8/12/63

Mishusahay, we had a talk on the above
subject and concluded the following.

That, since Rev. P. C. Munn dissolved the
Constitutionally formed Mandli Panch on
baseless ground and made a attempt
to cross this congregation by neglecting
its pastoral activities, this congregation
has been amalgamated with Ispat Township
congregation under the kind shepherds
of Adhyatsh Orssa Buchal. As such,
if at all any meeting or discussion
is to be held, should occur with the
amalgamated Mandli Panch
having the Adhyatsh on the chair
which I believe to be the correct
and short cut solution of this dispute.

However, further discussion if necessary
may kindly be referred to the Mandli
Panch, Ispat Township direct.

Hope our conclusion will percolate
cool stream between the detached
groups and join us to observe happy
colourful "CHRISTMAS" 1963

Copy to Shri. S. J. Hore for information. With love,
This has ref. to our verbal talk on 9.12.63. Copy to the Buchal
Adhyatsh, Orissa for information. Yours truly in Christ
(S. Hore) 14/12

G. E. L. CHURCH, ROURKELA
SUNDERGARH, ORISSA.

Rev. P. C. Minz, Lth.
Chairman

Ref. No.

C/230, sector 6
Rourkela-2.

Rly. Dabbling Colony,
Rourkela-1

Dated 27-8-1963.

Dear father,

I am in receipt of your letter of the 21st instant. I am glad to learn that the date of Biramini's marriage has been accepted by Jamshedpur people without hesitation.

Now I have to adjust my programme to be with my brother's marriage at length Oct. 03 at Jamshedpur and Kolk. etc.

Rev. Dr. P. Senik will be leaving Rourkela on a furlough next week which will not keep me full time what ever functions I shall have to participate in his absence.

It is to let you know that I have already sent a Rs. sum of Rs. 15/- as being the part cost of our booklet "Prachar". Unfortunately it is sent to Chaitanya. I do hope the m-c. will be redirected to you. Remuneration to be realised in due course.

if we have not yet been able to
get ready the documents with
shri Samuel Topko regarding the
church compound in Ply. Colony
Roundella-1. Dr. Pensek has already
agreed to find out money for the
necessary construction of buildings
and help also help to Shri Samuel
Topko. Unfortunately Shri Samuel
Topko is ill ^{now} since last few days.

The full K.S.S. ^{has} greatly started
to bring peace in the Orissa Church.
at its recent meetings at Rajgarh
pur. Not to expect anything good
from the K.S.S. at present when
they themselves are the creators of
the parties. There was a demand
from the house that all K.S.S.
members should tender their
resignation as early as possible. There
was a tussle for two and four
synods in Orissa Church. Dr.
Pensek helped me a lot to get
duplicated the report and
reports recommendation of
Bishop Meyer which was widely
distributed to the attendants.

I shall be sending a list of
people to be invited at Birorani's
marriage. Please let me know

I am need finance in this connection.

improving my health.

With very best regards affectionately.

Yours truly
D. P. P.

Roukela

7.3.1963

Rev. P. L. Minix

Dear Rev. Minix,

As planned already, I am coming to Roukela on the 9th evening. I wanted to stay there for more than two days in order to attend to all the important items but since I have got a letter from Mr. Ball Secretary of the JmB. that the Board is meeting on the 12th inst. I must come away on Sunday evening back to Chai-hassa in order to go to Ranchi on the 11th inst.

I propose to come by train No. 30 Hdr. Bombay Express which arrives at Roukela at 20:13 hrs. and I would like to return by Sambalpur Passenger which leaves Roukela at 17:32 hrs. I may change my mind and come by my jeep but the time of arr. and dep. will be about the same.

With best wishes,
Yours sincerely
J. K. Jha

and programmes of the Mahasabha and the CC.

(ii) The CC advise any synod so that there may not be any hinderance with the constitutions to her executive power and function.

(iii) If a synod Sabha with its majority vote or consent requests the CC to make certain enquiry within the synod then the CC must do it without any delay.

(iv) Even if the synod Sabha shall not make such request, the CC shall have the right to make such enquiries, if after due consideration she believes it to be necessary in the interest and for the good of that synod or for the entire G.E.L Church. After that the full CC shall consider over the enquired matters and shall give a suitable recommendation to the synod. If the synod shall not take the necessary step in that matter then the CC shall take the necessary step as seen fit. For instance, the CC can suspend any officer for reasons other than moral or remove any officer from his office or make working arrangement in a synod for a short period. Temporary arrangement for carrying out the works of the synod.

(v) If the CC thinks that a particular synod has reached and taken steps beyond its power and authority, then she can order the synod to correct or withdraw such resolutions and steps taken. The CC can do the same whenever the resolution or steps are against the system, casence, and spirit of the constitution and bylaws of the G.E.L.C or they are harmful or destructive to the faith teaching (doctrine) objects, practice, and programmes of the Church or they are a matter of discouragement, inconvenience, and disturbance to the men and women of the synod.

ARTICLE ELEVEN.

The Ministerium.

1. The Ministerium shall meet whenever necessary. It shall be constituted according to clause even of article three, It will elect its members by itself, frame rules for conducting itself, and shall present the full report of its work to the Church Council for approval.

~~It shall examine and approve the cond~~



etc. 52/10

Rhela

Ref. No. 566/59.

Ranchi,
The 19th. May, 1959

Cand. P.C. Minz L.Th.
Rourkela.

My dear Prabhucharan,

We got your letter which you wrote after your return from Rajpur. We are glad to know that you had a good and useful trip.

Bironen is finishing her exam. tomorrow and then she is planning to go to Poona for the S.C.M. Summer College.

I am planning to tour in Orissa from the 6th. to 13th. June. I shall be in Birmitra-pur on Saturday, the 6th. June and spend the following Sunday there. From there the same day I want to go to Rourkela and then to Dahijita and other places. During this visit I shall also try to visit Rato-birkera.

With best wishes,

Yours Sincerely,

Pragya 19/5
President.

NOTICE

Is hereby given that a meeting of the two parties involved in the cases in the Law Court will be held on Tuesday the 19th. May 1959 in the Theological College room at 5 p.m. All are requested to be present.

Subject for consideration : All cases in the law court.

Chairman, Church Council Hd.qrs. Congregation North Zone Mandli Panch	Chairman, Hd.qrs. Mandli Panch Ranchi.
---	--

Church Council	Names of Parties Signature	North Zone	Signature
----------------	-------------------------------	------------	-----------

Rheela

25th. May

The Rev. P.C.Minz L.Th.

C/O The Adibasi Hotel,

P.O.Rourkela, Dt. Sundargarh.

My dear Prabhucharan,

You must have been expecting to hear from us since you returned to Rourkela. I myself had been extremely busy with the new Constitution and your sister Barone fell ill and she has not yet fully recovered. She is much better now and she is making rapid progress. During her ill health she lost the address of the office which you gave her. I wonder if there is still time for her to apply for the post. If you want her to apply please send her the address.

By the way, I am going to Ambikapur via Raigarh on Monday the 30th. inst. by the Howrah - Bombay Express which passes Rourkela at 18:50 hrs. If you are free I shall be happy to meet you at the Rly Station. The train stops at Rourkela for only five minutes but that will be enough for a short important conversation.

Jolpothem has gone to Nawa Bhandaria for the Bihar Christian Youth Organisation Camp. The three others who are here are always planning this or that for the summer but till now we have succeeded in persuading them not to go anywhere. Banchu and Bairakhi are doing some study. Banchu is very happy that she stood first in her English Examination last term, securing 91 out of 100.

We are always thinking of you and praying for you.
With best wishes,

Yours Affly,

Baba
J.J.P.Tiga

Copy
Rkela

Pastor Minz
C/230 Sector 6
Roukela 2

Urgent call from Goswami School
Roukela Postponed

Director Tiga

Rev. J. J. P. Tiga

Director,
JOINT MISSION BOARD,
G.E.L. Church, P.O. Chaibassa,
Dist. Singhbhum, (Bihar).

G. E. L. CHURCH, ROURKELA

SUNDERGARH, ORISSA. C/230, Sector 6.

Rev. P. C. Minz, Lth.
Chairman

Ref. No. H

Rly. Doubling Colony,
Rourkela-4-2.

Dated 12.2. 1963.

15/2/63

Rkela

The Director,
J. m. Board, Chairbassa.

Dear Sir,

I do hope you might have received my monthly reports of the previous months together. As regards our congregation in Rly. Colony Rourkela-1 which has been tried to abolish from there by the Land Acquisition Officer is showing great ~~time~~ stand on its foundation. For several weeks people did not turn ^{up} for Sunday worship on the right place. Surprisingly more than expected people attended Church service on Sunday last ~~at the~~ in the burning sun. ^(10:15 AM) The new place which was arranged by the local mandli Panches without my approval has witnessed a great shortage of its worshippers. I am not assured that the new place of worship arranged by the mandli Panches will have to stop their Sunday worship on the new place.

P.T.O.

In my previous letter I sought your permission to visit Bhubaneswar and the Christian area at Macknight. Now I have to withdraw that because time does not suit me. Just yesterday I received an invitation from Rev. K. C. Wright M.A. M. Th. ^(Cal) to attend a study Conference on "The Christian women in Modern Industrial community" to be held in Singapore, from 22nd to 24th Feb 63. This conference is arranged by the N.C.C. All hospitality and 3rd class travel will be provided but the registration fee of Rs. 2/- is payable.

I have already given my name for registration. I do hope there will be no objection from your side. I want to get down at Chitranjan for a day or two. On my return journey I may come via Ranchi.

Yours truly,
P. M. 2

15th Feb 1963

My dear Rev Min X,

I thank you for your letter of the 12th inst and your monthly reports. Just to say that your invitation to Singapore is according to my suggestion. Rev. Wright has invited you because I had suggested your name to him. I shall be very glad if you attend this Conference - any extra expense will be paid to you by the Jmtd if you submit a bill.

It is very unfortunate that there has accrued a difference between you and the Maudslough (perhaps Mr S. J. Horro + his group). I want to come and try help a solution so that you all work together harmoniously. It is likely that I shall come to Rowlela on the 29th inst. Please inform others also (especially Mr S. J. Horro).

With Yishusahay.

Yrs. sincerely
J. Bliga

से एक में सेव भरे होते हैं। वह पूछता है : "दोनों थैलों में क्या अन्तर है ?" बच्चे देखते हैं कि उन में से एक थैला तो मोटा है, जब कि दूसरा चौड़ा है।

उस के बाद वह एक थैले में थोड़ा पानी भर देता है और बच्चे देखते हैं कि उस पानी में कोई रंग नहीं है, वह बड़ी आसानी से इधर-उधर झुलकता रहता है, फिर थैले का रूप ले लेता है। वे यह भी देखते हैं कि वह नर्म है, सेवों जैसा कड़ा नहीं है।

तृतीय चरण में मिलग्रॉम थैले में कुछ हवा फूंक कर उस के मुंह को जल्दी से बन्द कर देता है। बच्चे कुछ भी नहीं देख पाते किन्तु उन्होंने पहले जो कुछ देखा है, उस के आधार पर वे यह तर्क करते हैं कि चूंकि थैला फूल उठा है, अतः उस में कुछ होगा अवश्य। अतः वे यह सीखते हैं कि अदृश्य होते हुए भी हवा एक पदार्थ है।

अपने प्रत्यक्ष प्रदर्शनों और प्रयोगों को और आगे बढ़ाते हुए मिलग्रॉम यह प्रदर्शित करता है कि हवा से भरा थैला एक पुस्तक के वजन को संभाल सकता है। बच्चे इस नई जानकारी को अपने इस ज्ञान के साथ सम्बद्ध करते हैं कि मोटर-गाड़ियों को 'हवा के चार थैलों' द्वारा रोक दिया जाता है। जब थैले का मुंह खोल दिया जाता है, तो पुस्तक गिर पड़ती है, और हवा बाहर निकल जाती है। बच्चों ने देखा है कि जब मोटर-गाड़ियों के टायर पिचक कर फट पड़ जाते हैं, तो वे ढह जाते हैं।

जिस समय थैले से हवा बाहर निकलने लगती है, उस समय बच्चों को अपना चेहरा थैले के मुंह के पास लगाने का मौका दिया जाता है ; इस प्रकार वे बाहर निकलने वाली ठण्डी हवा का अनुभव करते हैं। जब शिक्षक कहता है कि गतिशील हवा को 'पवन' कहते हैं, तो बच्चे अच्छी तरह समझ जाते हैं।

प्लास्टिक के थैले का प्रयोग

प्लास्टिक के थैले का पुनः प्रयोग करते हुए, मिलग्रॉम एक अन्य वैज्ञानिक तथ्य को समझाता है। उस की विधि इतनी उत्तम है कि बच्चे बड़ी आसानी से उसे समझ जाते हैं। वह दफ्ती की नलिका के एक सिरे को एक थैले के मुंह में लगाता है, जब कि नलिका के दूसरे सिरे पर दूसरा थैला रखता है। जब वह एक थैले को दबाता है, तो उस के शिशु दर्शक 'हवा' को गतिशील अवस्था में देखने लगते हैं, क्योंकि

G. E. L. CHURCH, ROURKELA

SUNDERGARH, ORISSA. C/230, sector-6

Rev. P. C. Minz, L.th.
Chairman

Rly. Doubling Colony.
Rourkela-1-2.

Ref. No. 10/A-

Dated 5.2. 1963.

The Director,
Joint Mission Board.

Dear Sir,

I do hope you might have received my ~~to~~ monthly reports of the previous months. Specially note the reports of Nov & Dec. 62 In this report also there is some important matter for which I need your help. I am getting help from others also but it seems their help and advice may not bring a good result.

secondly, I am planning to attend a Christian Mala at Madkaghat ~~towards~~ the which will be held towards the end of this month. In the course of that I would like also to see the work of Rev Pannalal in community Church Bhitai. He has already extended an

invitations to me since long before.

There is much possibility that I shall be the pastor of Baptist Church ~~and~~ ^{and} also about time worker of the English congregation here. These two are under consideration now. I have already given my consent to the Baptist Church. Rev. Outlaw comes once in two months to them which is not sufficient. I do hope you will kindly agree to help them.

I am awaiting for your earlier reply.

With best regards.

Yours truly,

Rev. J. H. Plins



Code

Recd. from

By

Sent at

H

II

To

By

Handed in at (Office of Origin)

Date _____

Hour

Minute

Service Instructions

W. G. L.

Handed in at (Office of Origin)
A-8 Rowke W

Date NOV 1964

Hour
10

Minute

Reyfigaborgneschuch
chus

19

 E

18

51

my house and chapel
demolished yesterday advise
further — — — — — xel ming

rev ming

MGIFPA# 104-1-11-00 3536, Bks. [T-3]-[53]

Director,
JOINT MISSION BOARD,
C.E.L. Church, P.O. Jhaibassa,
Dist. Singhbhum, (Bihar).

Rhela

Christain Industrial Service

Editors : Rev. A. Stephen. Rev. P. Pannalal. & Mr. M. A. Z. Rolston

DEVOTIONAL

"Take therefore no thought for the morrow: for the morrow shall take thought for the things of itself. Sufficient unto the day is the evil thereof." Matt.6: 34.

In this age of planning we are apt to endeavour to provide for the future needs. Even in family and individual life one thinks of the future and tries to ensure it even if partially only. Those of us who plan for the future are credited with prudence. Those who seem to live in the present alone without any thought of the future are taken certainly to lack wisdom. But here is our Master himself who asks to take no thought of the morrow, for the morrow, he says, will take thought for the things of itself. To some this advice would sound over-optimistic, to others it would sound foolish to ignore the future and not to plan for it. Specially today when most people talk about the uncertainties of the future and emphasize planning and preparation Christ's words seem to be confusing. But are they confusing ?

Is it not true that most people are inclined to either muse over or grieve for the joys and privileges that were or might have been in the past and either fear the future or are too confident of their preparations for it ? Is it not true then that our thoughts over the past which sleeps for ever and our speculations of the un-

known future are not of much avail since our dwelling too much either on the past or the future makes the present dormant ? Jesus very rightly warns us against such weakness which lessens the value of the present. He wants us to take each day as it comes from our gracious God as a blessing and full of promises and to live it fully in gratitude. He wants us to take each day in its stride and live it fully in faith without consuming ourselves with worries and anxieties of the future. Borrowing worries from the future must certainly come in our way of seeking to meet God's requirement of essential goodness and it must weaken our faith in his goodness, mercy and faithfulness. It weakens our faith in his promise that he is always with us even unto the ends of the earth. But living the present fully, day to day in accordance with His will strengthens our faith and we know without speculating that he will be with us on the morrow as He is with us today. The 'today' lived fully in faith and gratitude is the greatest assurance for the tomorrow. Then why worry and be anxious for the unknown tomorrow ? Why not make the best of today by being awake with it to fulfill the will of Him who in His mercy and goodness makes our tomorrows into todays and blesses them for us ?



The Church In Industry.

by M. A. Z. Rolston

(Mr. Rolston's Second address at Rajpur Pastors' Conference last year is published below and is a sequel to the one published in the December 1962 issue of this bulletin.)

o o o

We have already discussed the Mission of the Indian Church to industrial India, and now are in a position to assess to some extent the efforts that are being made to fulfil it. The efforts are far from startling especially because at this stage they are confined to equipping the Church in industry for its Mission. We, however, have the satisfaction that the Church in India is trying to avoid making the mistake the Church in the West made in being indifferent to industry specially during the industrial revolution and immediately after. The Church has discovered this new frontier and has engaged itself in its mission with some concern. The main drawback that checks the progress is that the industrial world is a strangely unfamiliar world to the church which hesitates to commit mistakes and is overcautious and unadventurous. This, however is far better than if the Church were altogether indifferent to the new challenge that claims its attention.

Socio-economic Change

The source of the new challenge is the socio-economic change that sweeps through the country today. Ever since freedom was attained, India has set herself to the much needed task of economic transformation. Consequently rapid industrial growth is evident everywhere in the country. (Unfortunately, industry was never before seriously considered by the Church as a field for its ministry. If only the Church had not ignored this field in the past we would be able today to enter for the Mission into this new phase of rapid industrial expansion with confidence and courage.)

Accelerated industrial development is not changing the economic pattern alone. It is changing the face of the country and bringing social changes too. More and more industries are coming to old industrial cities like Kanpur. These cities had preserved the village-like character in their slums which are now being cleared and their people being rehabilitated. These former slum-dwellers, along with workers for the new industries, are being placed in the new colonies springing up on the outskirts of the cities. This is tearing people away from their accustomed neighbourhoods, and re-locating them in these new colonies where they are thrown together with all kinds of people in a situation where social adjustment is an essential need. The resistance of these people to adjustment is resulting in anonymity and uprootedness. Christians, like others, are moving to these new suburban colonies where they are thrown together with members from several denominations as well as with non-Christians. While they are eager to seek fellowship with fellow Christians, they fail to appreciate the need of fellowship with men of other faiths. One would expect a community of Christians to help in building up the larger community in order that people may develop a sense of belonging, but unfortunately the Christians are mostly busy with their own problems.

New industrial cities like Durgapur, attract people from all over the country. They are drawn from groups differing in culture, tradition language, etc. In these new cities also people

are seeking new adjustments which will not be possible unless they discover things they have in common with others. Here, a new Christian fellowship is emerging which also is heterogenous. Although this group is more enlightened than the Christians in the suburban colonies of the old towns, they also are busy strengthening their fellowship and have not thought of bridging the gulf that exists between them and those who live outside their fellowship. These Christians are, however, more fortunate than their brethren in old towns as they are not directly affected by the rivalries between the different denominational churches that serve the old towns. Thus they are at an advantage insofar as building a good and strong Christian community is concerned.

The Spearhead of our Mission

These Christians that we find today either in the old or new industrial towns must form the frontline for the mission. They are in an enviable position and they enjoy an advantage over other Christians in that they have a double identity with their nonChristians counterparts, that of being workers sharing the work bench as well as that of being neighbours in the industrial colony. Whether in the workshop or in the place of habitation they are right in the midst of the people for whom they have a commission. They have, in other words penetrated that secular world where they must witness. They are Christians who are on the 'Frontier' although they have not planned or laboured to be there. And, therefore, what may be termed by others as the 'unconscious penetration of the frontier by Christians' is to us the plan of God for the revival of His people and the redemption of the industrial society. Here certainly is the nucleus of a dynamic community - a true koinonia - which the Church must use to face the challenge of and plant the

Cross at the heart of the industrial revolution in the country. It is exceedingly exciting to see the walls of the much cherished narrow parish crumbling down and giving place to a new one whose frontiers are pushed farther and wider out to include in its ministry even those phases of life with which in the past the Church refused to have anything to do.

Developing the Sense of 'Being'

It has been said before that our laity, who work and live under the shadow of industry are the spearhead of the Church for the industrial mission. Unfortunately we have very few in the industrial Church who may be called the laity. The laity are only those who have the consciousness that they are the chosen of the Lord and who demonstrate spontaneously that they have been called out of the darkness into his marvellous light, have obtained mercy and are his people. This is what may be called the 'laos-consciousness'. The laity are those Christians who do not keep their life and their faith in different compartments and these are in a very small minority in the industrial Church. We are, therefore, engaged at the moment in developing among industrial Christians this consciousness of 'being' Christians. The root of this consciousness of 'being', from which springs the laos-consciousness, is in worship. When the chosen people of God worship together regardless of the differences of affiliation or tradition, we develop the sense of 'being' Christians-of belonging together for a divine purpose. This sense of being is extremely important for without it we cannot become conscious of our neighbours, who live outside the sphere of this fellowship, in the context of our mission. Witness is a Christian act, and a Christian act can spring only from Christian 'being'. We have, therefore, given priority in

our programme to helping Christians in industry discover their existence, so that they may finally begin to discover their function as Christian members of the industrial community. Consequently, one can find in the old towns House Churches springing up on the outskirts. In these new housing areas of our old cities where it is almost impossible to provide adequate building for worship, which generally have a denominational basis, we have fresh opportunities of building up the true Christian fellowship which will be above denominationalism. Christians here are struggling to sweep away the fictitious dividing lines created by denominations. In the new cities also union congregations are coming up and majority of the Christians there are against the denominational division of their fellowship.

It must however, be mentioned here that man's primary experience of the urban community today lies not in the place of his dwelling but in the place where he works; where he confronts the political party, the trade union or the commercial association. A Christian becomes painfully aware of his inadequacy here since in most cases he is hardly acquainted with the fundamentals of his faith and since he has never thought on the questions of the relevance of the Christian ethics to the demands of a world in which he works and earns his livelihood. Rivalries, conflicts and tensions are most acute in the place where he works and where his ministry of reconciliation is most needed, and the real task before the Church is to prepare him for his ministry here. He has to be prepared for an active and responsible involvement in; e. g., the trade union movement, and has to be educated and trained to understand the crucial issues affecting industrial life in the light of Christian teaching and to act accordingly. And it is important

for us to remember that if we want Christian principles to become the basis of judgement in industrial life we have to make a collective effort for a decisive Christian witness in it.

A real, vital and dynamic Christian fellowship is essential for making an impact upon the industrial society. In a community with tensions and conflicts our task is reconciliation and we will never achieve our aim if we remain a divided and broken fellowship. Besides, our community must keep its doors open for those outside it and our willingness to accept them must never be conditional. Through union Churches and interdenominational House Churches we are endeavouring to close the gaps within; and through institutes and literature we are trying to educate our people about industry and the revolutionary Christian ethic that applies to it and which is far different from the inoffensive prudential morality in to which most of us have transformed this ethic. We are guilty of slowness and slovenly methods in our moves in these directions. However, we can say that our efforts have started a conversation within the Church in industry which itself is not a mean accomplishment. We have come to realize the importance of the local church to the Christian mission in industry and are now laying emphasis on local institutes in our industrial towns. Our literary efforts are so far confined to our bulletin alone and we admit that it is not sufficient for the needs. The main difficulty in this field is dearth of people who can write with confidence.

The building up of the industrial Christian fellowship and the education and training of our people for their ministry are formidable as well as exacting tasks especially when we consider the demands of the industrial routine

in the life of our people. It is, therefore, very gratifying to note that the Church is now engaged in this long and painful process of acculturation of the Christians in industry. We must also always remember that in the mission there is no place for complacency.

Already, in a few places, Christians seem to be so satisfied with their success in establishing their churches that they have started thinking that all is done that needed to be done. They need to be shaken out of their contentment and made to realize that they have only begun what they are required to do. It is unfortunate to note that our industrial churches have not made effective contacts yet with the trade unions or the commercial associations. Here and there a few individuals work with these agencies but the Church is still indifferent. Our people are not to be blamed very much for this. In the past they were taught and directed never to have anything to do with these agencies and political parties. Now we have to make them unlearn much, before they will be able to assimilate what is being given to them. The Church has to realize that the heart of its ministry lies in its relation to a world from which these social agencies can not be torn away. Besides, they are integral and essential to industrial life because their primary aim is to give the people in industry who are members of a lonely crowd, the much-needed, sense of belonging'. If they have so far failed in achieving this aim it is because they have not been able to recognize their proper role since they have been in the hands of those who have used them for exploiting the industrial masses for furtherance of their own interests. This is one of the main reasons why Christians must get involved in the complex industrial society, since indifference to these agencies amounts to leaving them completely in undesirable hands.

An overwhelming majority of our church ministers as well as laymen (laymen in the ordinary and current meaning of the term and not in the New Testament sense) are of the opinion that the involvement of Christians in trade unions, political parties and commercial associations will be fatal to the unity within the Church. The Church will get divided since those of its members who are active in these associations will contaminate the life of the Church by bringing into the Church the disruptive influences of these agencies. Nothing can be more fatal to the mission of the Church than such an erroneous notion. A Church which has lost its reconciling influence is dead and has lost completely the sense of its mission. A living Church leaves an impact on everything it contacts and is never swept away by their unhealthy pressures. The Church in industry is fighting against this disease which has eaten at the roots of its evangelical life.

Our Great Need-- An Adequate Ministry

In their report 'Towards the Conversion of England' the Commission on Evangelism appointed by the Archbishops of Canterbury and York wrote, "The spiritual temperature of a congregation depends chiefly on the parish priest. That awful responsibility is his, and he cannot escape from it. Generally speaking the Church cannot rise higher than the lives of its clergy The parish priest is the gift of the Ascended Christ to the Church in order fully to equip his people for the work of serving- for the building up of Christ's Body.' This is very true of our Indian Church too. The Church in India depends much more than the Church in England or elsewhere on its ministry for its spiritual rise. One may agree with it or not; but the truth will remain. Wherever there is ministerial leadership in the Church, eager goodwill comes in response from at least some in the congregation; but

wherever there is not such leadership, enthusiasm for evangelism gets dissipated and lost. And to provide leadership, guidance and initiative the ministry ought to be fully equipped. With a few exceptions, the present ministry in the Indian Church is proving very inadequate for the industrial mission. In the first place, our ministers unfortunately are not properly trained for their task. I am not belittling or condemning the earnest and devoted teaching efforts that our theological schools are making because they perhaps cannot do more in a limited time with a full curriculum. What I am suggesting is that far too little or nothing at all is being done to direct our ministerial training towards equipping the ordinand to meet the practical realities of his work in a parish. So far as I know nothing is being done to prepare ordinands for their ministry in the industrial parish. The result is that most of our ministers serving the Church in industry do not even have a nodding acquaintance with the pattern or the problems of industry. These are ministers who are blind to the needs even of their own people and it will not be wrong if we say that they are 'strangers to their peoples'. Secondly, our ministers have usually a very narrow circle of influence since they like to keep themselves tied to their clerical world and never venture out to make contacts with the outside world. A Minister who hardly knows anything about either trade unions or the industrial law will never have the courage to move among people who either belong to a trade union or who deal with one. But if they belong to a very narrow world the fault is not very much theirs. They have not been trained to go out of their bounds and they remain faithful to the traditions that have been given to them by their institutions. Something is amiss with the system of ministerial training in India which

demand redress; otherwise, in a few years more, the problem of ministry for the growing urban-industrial congregations will become too acute to be handled by our theological institutions.

I admit that the work of God, in any field, is not the exclusive responsibility of any one person or a class of people. It is not the exclusive responsibility of the ministers of the Church to evangelize industry; rather it is the task of a community of which they are representatives and leaders. It is their task to employ the unemployed members of their congregations in the work of the Lord. It is their task to prepare them, guide them, encourage them and inspire them for the sake of the Church. It is their task to understand the complex nature and the needs of their parish and to share their insight with their people in order that the entire apostolate of the Church may be used to lift Christ up not only in the life of the Church in the narrow sense but in the life of the Church that invades the secular world to conquer it for Him and permeates it to change its tenor to make it a worthy gift for the Lord and King of the Church.

WORKERS' SEMINAR - KANPUR

A workers' seminar organized by the Kanpur Industrial Evangelism was held on 27th Jan. 1963, at Afeem Kothi Chaoraha, a crowded labour area of the city. Professor Nirmal Singh of Christ Church College introduced the subject 'Emotional integration in Industrial workers'. The speaker emphasized the need of educating the workers in matters of citizenship, cooperation and self-help. He said there are other things that the Govt. alone could do e. g. providing elementary education and adequate housing in which family life would be possible which is a deterrent to many acute social evils. Self expression is essential, The speaker said, and there ought to be adequate provisions for this too. Shri Misra said that work should be given a status in society but exploitation hinders in this. It is essential, therefore, for workers to create an organization that could terrify the exploits into giving not only a social status to work but also to accede to other legitimate demands of workers. The workers otherwise will always remain frustrated.

Mr. Rolston closed the seminar with his remarks. He said that the worker could never give his undivided loyalty to his occupation unless he is given a social status and his labour is valued and respected and such loyalty is essential for his emotional integration. This dignity of the work and the social status of the worker will have to be built up by the worker himself. Christians believe, he said, in a working God. Work does not dishonour God. on the other hand by working God has given work an honourable place and any honest worker's labour is respected by God. So far as the social status of work is concerned Mr. Rolston emphasized the dignity of those who serve. He illustrated from Jesus' life telling about the washing of the disciples feet. He said that according to Jesus one who serves

others is great and since workers serve society with their labour they must remember that they are men of worth. This will help them shake off their inferiority complex. In the end he said that the workers must organize and be strong but their strength should be for self-confidence and not for terrifying any wing of the society. It is easy to misuse power but such power is undesirable. The workers must organize, but for self help and for discipline.

This seminar was the second one on Emotional Integration in Industrial worker. The news on the first one was covered by the December issue of the bulletin.

A. R. Yusuf.

SOCIAL EVENING FOR PERSONNEL FROM INDUSTRY.

The CIS invited some staff members from the local Indian Institute of Technology, the International Labour Organization, some of local employers and Church leaders of Kanpur to an informal social gathering on 19th Jan. 1963. After tea Rev. J. K. Pennington and Mr. M. A. Z. Rolston spoke briefly of the work of witness and service in industrial Community in India.

Mr. Rolston screened a documentary film strip "Occupational Evangelism in Japan". The group was very much impressed by the excellent film strip.

S. S. Robinson.

IMPORTANT NOTICE

Mobile Team Visiting Industrial Centres

Under the auspices of the National Christian Council a mobile team of experienced men from Japan, Germany and the Indian Church will visit industrial centres toward the end of this year. The team will meet members, trade union members, workers and leaders, employers and representatives from labour departments in

the areas they visit. Pastors and Church leaders are requested to start contacting such leaders in industry as are mentioned above because it will be the responsibility of the local industrial churches to organize these contact meetings. Besides, unless the Church knows, meets and and wins confidence of such leaders it cannot serve the industrial community.

Some Suggestions : 1. Meet Industrial leaders informally.

2. Wherever possible organize workers seminars.

3. Organize informal meetings or discussion groups for workers and managers.

4. Visit trade union offices and meet and make friends with leaders and members.

5. Encourage Church members to be trade union members.

Study Conference In Durgapur

Under the joint auspices of the Lay Academy and the Bengal Christian Council a study conference will be held in Durgapur, West-Bengal, on February 22nd to 24th, 1963. The subject of the study will be "The Christian Woman in the Modern Industrial Community." The subject will be discussed under the following topics:--

I- The Church's Role in Industrial Society, And the place of woman in this.

2- The Present Position of women's work in Industrial India- And the Latest Thinking on this subject

3- The Specific Service of Christian women in Modern Industrial Community.

4- The Training of Christian women for their forms of Service.

Another house Church in Kanpur

Another house Church has been started under the auspices of Kanpur Industrial evangelism in the city nearly six miles towards the south from the heart of the town. Juhikalan. as this part of the city is known, has one of the new industrial housing colonies of Kanpur. The Juhi house Church has started with seven Christian families of different denominations and it is hoped that others in places around Juhi will avail of the benefit of this unit. Mr. & Mrs. Failbuse have gladly offered to make arrangements for the services every Sunday evening. Kanpur Industrial Evangelism extends its thanks to them.

News pleas !

We will appreciate if our centres will send news for the Bulletin so that Kanpur news do not dominate. Or is no progress being made in other places worth sharing with our widely scattered brotherhood ?

Christian Industrial Service

Editors : Rev. A. Stephen,

Rev. P. Pannalal &

Mr. M. A. Z. Rolston

O God the Father, Creator of heaven and earth; Have mercy upon us.
O God the son, Redeemer of the world; Have mercy upon us.
O God the Holy Ghost, Sanctifier of the faithful; Have mercy upon us.
O holy, blessed, and glorious Trinity, one God; Have mercy upon us.
Jesus, born in poverty;
Jesus, workman at Nazareth;
Jesus, Lord and brother of us all; Have mercy upon us.
Jesus, friend of the poor;
Jesus, feeder of the hungry;
Jesus, healer of the sick; Have mercy upon us.
Jesus, calling them that labour and are heavy laden;
Jesus, companion of the outcast;
Jesus, who camest not to be ministered unto but to minister; Have mercy upon us.
Jesus, loved by the common people;
Jesus, denouncing the oppressor;
Jesus, betrayed for the sake of money; Have mercy upon us.
Jesus, crucified for us;
Jesus, seated on the right hand of the Majesty on high;
Jesus, interceding for us; Have mercy upon us
From love of money and pride of position;
Good Lord deliver us.
From dishonesty in business and from laziness in our work; Good Lord deliver us.

From class-conflict and biased judgement;
Good Lord deliver us.
From oppression of the poor and from envy of the rich; Good Lord deliver us.
From thriftlessness and from love of vain show
Good Lord deliver us.
For men who face peril; and For women who suffer pain; we beseech thee to hear, us good Lord.
For those who till the earth; and For those who tend the machinery; We beseech thee to hear us, good Lord.
For those who work in breweries and bodegas in fisheries and factories; we beseech thee to hear us, good Lord.
For those who toil in mines and mills in forests and fields;
We beseech thee to hear us, good Lord.
For those who plan and those who finance
For all employers, formen and overseers; We beseech thee to hear us, good Lord.
For all who labour with heart and hand with mind and muscle; We beseech thee to hear us, good Lord.
For all who are poor, broken or oppressed,
For all whose work is without honour or interest; For those who have too little leisure
For those who cannot find work For those who will not work;
We beseech thee to hear us, good Lord.
Lord, have mercy upon us Christ, have mercy upon us Lord, have mercy upon us

REPORT ON THE CIS ANNUAL GENERAL MEETING.

The second Annual General Meeting of Christian Industrial Service was held in the Methodist Compound, Dhanbad, on 14th and 15th July, 1962, under the Chairmanship of Dr. E. C. Bhatta of the National Christian Council. Rev. J. K. Pennington conducted the opening devotion.

The first part of the meeting was conducted as a conference which was addressed by Rev. K. E. Wright of Calcutta and Rev. P. N. Das of Bengal Christian Council.

Rev. K. E. Wright spoke of a plan for establishing a lay academy for the training of the laity for their ministry. The following resolution was adopted :

"Christian Industrial Service in its Annual General Meeting held at Dhanbad on 14th and 15th July 1962 listened with interest to a statement prepared by Rev. K. E. Wright proposing the establishment of a social and industrial centre in North India. C.I.S. believes that such preparation of the laity for their total mission as is outlined in the proposal is both relevant and needed. Laymen are always ready to express their need of a deeper understanding of their faith and their need of a deeper religious life. We further recognize the need of relating that faith and personal religion to the industrial structure and associated organizations within which the laity finds its daily work. Ministers and pastors are also in need of a centre where they can meet from time to time in order to keep up to date in their thinking and action. Also recognizing that many churches have already the need for such centre, we commend the proposal for a lay academy to the churches and regional councils for their careful consideration and fullest support."

Rev. P. N. Das, Secretary of the Bengal Christian Council read a short but very relevant

paper on the need of adequate technical training for youth in the country. On this subject the A. G. M. expressed itself in the following resolution:

"Christian Industrial Service in its Annual Meeting held at Dhanbad on 14th and 15th July 1962 discussed the question of Church's contribution to technical training. Reference was made to the fact that there are several technical training institutions within the Churches of North India, but the information concerning these institutions needs to be made widely spread. It was further noted that we have a very great responsibility to Christians who have gained admission to government and other technical training institutions and we invite the attention of the Student Christian Movement to this matter. The plight of the unskilled worker and the need for his training was stressed. Many Christians have experienced difficulty in gaining admission to the various training institutes at present in existence. Sometimes this is due to a failure to meet the educational requirements demanded. C. I. S. listened with great interest to the proposal to establish a technical school at Durgapur under the Bengal Christian Council. Durgapur is one of the new industrial centres of India and because of the rapid development taking place in the whole area it was felt that real scope for providing basic industrial training for boys with little education and a more advanced course for those who have read up to about the VIII.

C. I. S. gives its unanimous support to the Durgapur scheme and commends it to the Churches and Regional Councils for active support."

The business session of the A. G. M. started with the reading of the minutes of the 1st A. G. M. Also the annual report of the Secretary was presented which appears in this issue elsewhere. The minutes and the report of the Secretary were accepted. The problem

facing Bhilai Community Church since the management of the Hindustan Steels had served on it a notice to vacate possession of the Church site allotted to them was discussed and following resolutions were adopted :-

(1) Resolution sent to Hindustan Steels Ltd :- Copy to Home Minister. "The Christian Industrial Service Annual Meeting in Dhanbad (Bihar) has been deeply distressed with the action of the Hindustan Steels Ltd. in giving notice to the Bhilai Community Church to hand over vacant possession of the site allotted for Church building. The allotted site has been purchased by the Community Church, dedicated, and is being used as a place of Christian worship.

"We consider that the action of the Hindustan Steels Ltd. is discriminating and a denial of the fundamental right of worship of a minority community, as such we disapprove and condemn it. We, at the same time, urge the Government to help and facilitate the Christian Community in Bhilai so that they may continue to have the place for their worship."

(2) Resolution sent to Members of Bhilai Community Church "The Christian Industrial Service at its Annual Meeting in Dhanbad on 14th and 15th July, 1962 noted with deep concern the state of uncertainty and the difficulty with which the Bhilai Church is faced in regard to the Church site allotted to it. We can fully realize the feeling of discouragement of the members of the Bhilai Community Church, and expressing our sympathies with them that we are with them in their effort to assert their constitutional right."

(3) Resolution sent to National Christian Council of India :-

"The Christian Industrial Service in its Annual Meeting on 14th and 15th July, 1962 noted with appreciation the interest the National Christian Council has shown in the problem of the Bhilai Community Church in regard to

their Church site. At the same time we request the NCC to continue to give further possible help and advice to Bhilai Church in their effort to retain possession of the dedicated site."

The Secretary informed the members about arrangements made by the NCC for a WCC team to visit the different industrial centres in country to share with the Church in industry in India their experience of the industrial mission and solicited co-operation of the centres to make the visit of the team profitable. Information has since been received that the visit of the team has been postponed for about a year for some very valid reasons. It is to be hoped that our interest in the visit of the team whenever it may come, will remain alive.

The treasurer presented a financial statement for the year which was accepted and the A. G. M. passed a vote of thanks to Mr. R. O. Oliver who very kindly audit the CIS accounts. The budget presented was approved and the Treasurer was authorized to put Rs.2,700:00 in Reserve. The Chairman was authorized to appoint a new treasurer when Rev. Pennington left for England.

The Chairman suggested that a survey of the centres specially in the Bengal-Bihar industrial belt be made for the enumeration of Christian migrants and their needs. After a thorough discussion it was recommended that the Executive Committee should look into the details of the survey.

The following industrial Churches were accepted into the membership of the CIS :-

1. The G. E. L. Church, Jamshedpur, Bihar.
2. The G. E. L. Church, Birmitrapur, Bihar.
3. The G. E. L. Church, Gua, Bihar.
4. The Chakeri Community Church, Chakeri Kanpur, U. P.

Reports from Ausansol Region, Bhilai, Durgapur, Kanpur and Neyveli were heard and accepted.

Lastly a vote of thanks was passed to visitors and specially to Rev. J. E. Titus for wonderful hospitality all enjoyed and for arranging a very successful and informative excursion

to Sindi Fertilizer Factory.

Bishop G. Sunderam closed the meeting with his blessings.

SECRETARY'S ANNUAL REPORT-1961-1962.

Mr. Chairman and freinds :

This is an occasion for us when we can look back to assess whatever our accomplishments may be, and also look forward and plan together, eliminating errors, step toward achieving our goal. This involves failing as well as learning and gaining in and for His service and witness. In this we are together although we 'come together from different corners of the country, different conditions in some cases and have even different experiences.

Prior to July 1961 goodwill and common purpose kept us together. This belonging together which prevails amongst us has ever since been strengthened by the constitution which we approved and adopted in July last year. The CIS family has since expanded and membership contributions have been received from Neyveli and Asansol region also raising the membership from five to seven. Yet another awaits your formal approval for its membership; I hope that before this conference winds up Jamshedpur region and Rourkela will have full membership of the C.I.S. family.

In the last AGM the chairman had pointed out two of our severe weaknesses, viz lack of adequate literature for distribution and absence of local institutes. We have failed so far to bring out any CIS publication and one of our weakness continues strong to this day. We all feel that we are handicapped in our efforts due to lack of proper literature for distribution in our constituency in the country, yet somehow we have not yet tightened our girdles to take up this task as honestly and as seriously as the need demands. Therefore, here and now I put it to our selves to make our resolve to get over this hur-

dle of either lack of resources, time or concern, for we must not wait in laziness or unconcern when others are flooding the industrial centres with literature which is not only inadequate but even dangerous to real values of life.

In regard to Institutes we have made a begining. I congratulate Durgapur in this matter which has wrested the top position from Rourkela which was offered the first opportunity of arranging the very first local institute. It is too early to say whether Durgapur Institute has been successful. Nevertheless a begining has been made which, I am sure, will be followed up in other places.

I regret to report that we have not been able to bring a Hindi issue of the bulletin out. Rev. Pannalal, on second thought, decided that he could not take the responsibility of the Hindi bulletin. The bulletin in English has however been regularly published though I feel very strongly that it needs much improvement. Recently some friends have demanded that articles and information on technical training also be regularly published in the bulletin.

The problem of sites for Churches in the steel townships has not yet been solved, In spite of our requests and approaches made to the Minister for Steel and the Minister for home Affairs, and in spite of their assurances Christians are finding it difficult to built Churches or Chapels. I have recently had a letter from Rev. Pannalal that the local administration in Bhilai has asked them to return the land they had purchased and to apply for the refund of the money paid for it. This challenge has to be taken seriously and I am sure we will recommend to the NCC strong and immediate action in this regard.

In this annual general meeting we have been fortunate to have friends who have drawn our attention to the needs of different agencies or institutions which can help to make our witness more effectively by broadening our prospective and helping us look at the whole man. Before we leave here we must definitely plan to relate ourselves closely with these agencies for mutual assistance for the sake of better service to the country which is a part of our witness.

And now in the end I thank you all for your cooperation and help that I have freely received from you in every thing and urge that we forget what lies behind us and strain to press on to the goal even the task of witness to Jesus Christ, the Christ, who has not left us alone in this mission and is ever true to the promise He made, "And I will be with you all the time, to the very end of the world".

M. A. Z. Rolston
Secretary, CIS

THE CHURCH IN NEYVELI

Neyveli is a modern Township in the South Arcot District in South India growing up fast because of the Lignite Mining Project sponsored by the Govt. of India. The building of the Township itself is part of this project and in its fully developed phase, it is expected to provide accommodation for about 10,000 families with a population ranging from 50,000 to 75,000. More than 3,500 houses in the Township have already been occupied by the project employees.

The Neyveli Lignite project is the biggest among the Projects included in the Five year Plans so far for South India. The Project is vast in scope embracing within its ambit a Mining Scheme, a large Thermal Power Station a Fertilizer Plant, which will be one of the largest of its kind in the World, and a Briquetting and Carbonisation Plant, for processing Lignite into a smokeless fuel which can be used for industrial and domestic purposes. There are at present more than 20,000 employees engaged in the construction of the project. The permanent strength of the staff of the Corporation during the full production stage is expected to be of the order of 10,000.

Among the employees of this project there are at present nearly 200 Protestant

Christian families, besides single persons, totalling about 600 members. We can expect this number to grow rapidly with the progressive development of project as more and more new employees are drafted for the service in the Corporation. Most of these Christian members belong to established Churches, like the Church of South India, Tamil Evangelical Lutheran Church, Arcot Lutheran Church etc. The spiritual need of the Christian populace in the project area are taken care of by the Arcot Lutheran Church. Since Neyveli is situated within their field. To cater to the spiritual needs of the rapidly growing Christian Congregation at Neyveli, a full-time resident pastor has been appointed with a helper, both with their headquarters in the new Township. Although the Neyveli Pastorate is affiliated to the Arcot Lutheran Church, with a view particularly to meet the needs of the members of the Congregation who belong to the Church of South India, one Sunday every month is set apart for C. S. I. order of worship and the administration of Holy Sacrament according to the order by a visiting Pastor of the C.S.I. deputed for this purpose. The C.S.I. order of Service is frequently on other noncommunion Sundays also.

Efforts have been set afoot to secure a suitable site in the Township for putting up a

Church to meet the permanent needs of this growing Congregation. Thanks to these efforts, we have now been able to secure from the Corporation a site in the Township on monthly rental of about Rs. 45/- for building a Church. We are very happy to announce with a thankful heart that the Danish Missionary Society Home Board has come forward with a magnanimous donation of a sum of Rs. 37,500/- to serve as a handsome beginning on which to build the Neyveli Church Fund. We are in need of a Church large enough to accommodate at least 400 worshippers at a time, a separate Parsonage and Parish hall, besides quarters for the Catechist and Deacon. We require funds to the extent of at least Rs. 1,00,000/- to meet this need.

As local Christians, we are doing our best to raise funds among ourselves and contribute to the maximum extent possible towards the achievement of this goal. But our efforts alone, however vigorous and self-sacrificing they

may be, will not suffice, notwithstanding the liberal donation from Home Board, to help us achieve this goal and unless our Christian brethren, friends and wellwisher come forward to our help; the fulfilment of this great task entrusted to us will elude us for a long time to come.

You can help us in two ways—firstly by sending in your liberal donations towards this sacred purpose and secondly by passing on this Appeal of ours to your friends who may kindly be happy to contribute to God's work and purpose by helping the cause. Your donations may kindly be sent to the undersigned "For Neyveli Church Building Fund."

Rev. E. S. Christadoss
(Pastor)

Block 19-C 55/I
Neyveli-I
South Arcot.
South India.

NEWS

An industrial institute organized by the CIS was held in Durgapur on 24th June 1962. The theme of the institute was 'God in Industry' which has been selected as the theme for our institute in different centres. Leaders of the institute were Revds. R. M. Singh, Allen Stephen, K. E. Wright, Mr. Miller, Mr. J. M. G. Ram, and the Secretary of the C.I.S.

The worship service was conducted by the Revds. R. M. Singh and Allen Stephen of Durgapur. M. A. Z. Rolston, Secretary of the C.S.I. preached the sermon.

In the morning session Rev. K. E. Wright of Calcutta addressed the institute on 'The Gospel and the mission of the Church to Industrial India'; He said that the Good news we Christians proclaim is the good news of Reconciliation. We believe and proclaim that

God, in Jesus Christ, was reconciling the world to Himself. It is the restoration of the broken relationship between God and man. It is at the same time restoration of the broken relationship between man and his fellow man. For our Gospel to be relevant both aspects must be emphasized. This task of communicating this gospel of reconciliation is committed to the Church. This is what the Church exists for and should be doing all the time. The Church has to relate this gospel to the life in industry to bring it under the lordship of Jesus Christ through whom God reconciles.

Mr. Miller, a British trade unionist spoke on 'Honourable Behaviour in Trade Union'. He stressed that the union is an agency which ought to instil an orderly conduct in the workmen by conducting itself in an orderly way. This done, the union can become instrumental

in bridging the gap between labour and management. In England, Mr. Miller said. The union had the above aim.

Mr. James M. G. Ram spoke on 'Training the Youth for Industry' and referring to the Christian technical institutions he said that the task of the Church is not merely to train clever technicians but to train clever technicians for the country and train them to be good men, men of character.

Mr. Rolston said that in view of the

fact that several social agencies were engaged influencing life in industry, the Church had a special task. While others scratched at the surface to find causes of ailments in industrial society the Church has to go to find the real cause of conflict and apply the Christian influence to remedy it. Christian love, fellowship and understanding which will cure the malady can only be taken into the industrial life by the Christians who are in the agencies associated with industry. The presence of the Christian there was therefore essential.

SECOND ASIAN CONFERENCE ON INDUSTRIAL EVANGELISM.

The East Asia Christian Conference is planning the second Asian Conference on Industrial Evangelism in 1963. Mr. M. A. Z. Rolston, Secretary of the CIS, attended the meeting of the committee on Christian Witness in Industrial Society in Kyoto, Japan, which has planned the Conference for October 1963. India has been allotted 4 delegates by this committee which takes full responsibility for the travel of 2 delegates and expects the country to raise funds for sending the others two. Hospitality will be the responsibility of the EACC Committee.

Recognizing that the task of Christian Witness in Industrial Society is largely that of laymen, the Conference will consider the following four aspects of the industrial mission.

1. Social Responsibility of the Church in Asian Industrial Society.
2. Channels of Christian Communication in Asian Industrial Society.
3. Rapid social change and Renewal of the Church in Asia.
4. Training of the Laity in Asian Industrial Society.

NEW APPOINTMENT FOR C.I.S. SECRETARY

Mr. M. A. Z. Rolston, Secretary of the C. I. S. has been appointed a secretary of the National Christian Council of India. His portfolios will be Economic life and Industrial Evangelism. Mr. Rolston is expected to join the NCC staff not later than 1st July 1963.

Mr. Arthur R. Yusuf B. A., B. D. has been appointed Industrial Evangelist by the North India Synod of the UCNI to be responsible for the work in Kanpur. The CIS family welcomes Mr. Yusuf to its fold.

A REGRET

This issue of the CIS bulletin comes to readers after a considerable absence. The Secretary, whose responsibility it is to publish

it, regrets that he was unable to bring it out due to busy time in extensive travelling he has done in the months gone by.

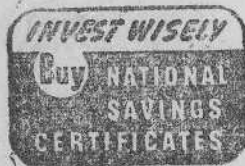


The East Asia Christian Conference is the second Asian Conference on Industrial Evangelism, which was held in 1963. Mr. M. A. Z. Rolston, President of the Industrial Society in Japan, was the guest speaker at the conference. He emphasized that the task of Christian evangelism is to witness to the industrial workers in the East Asia region.

Published by Mr. M. A. Rolston from 7/115 Swarup Nagar, Kanpur.

Mr. M. A. Z. Reisman, Secretary of the C.I.S., has been appointed a secretary of the National Christian Council of India. His portfolio will be Economic life and Industrial Evangelism. Mr. Reisman is expected to join the NCC staff not later than 1st July 1963.

SECRET



Rhela

INDIAN POSTS AND



TELEGRAPHS DEPARTMENT

Class }
Prefix } Code _____ No. _____ C

Recd. from _____

Sent at _____ H. _____ M.

By _____

To _____

By _____



actions

Words

=0 P11A 35. ROURKELA 22 11: REV TIGA KOKARKHORHATOLY RANCHI

TO

Recd. here at

H.

M.

=SHIFTED SECTOR G: SAFELY =REV I MINZI =

MGIFPAh.—1074—11-11-60—2,37,560 Bka. T-3

Rhela

C/230, Sector 6
Rourkela-2
4.6.63.

प्रिय पिता जी,

आप को अपने बहुत बखत
में समुझल हूँ।

कगारुं के लू लू ने मुझे
लिखी है कि लू के बालों में
आरे ले आये हैं मैं किसी प्रकार
को रोक दो कं बूढ़े हूँ। आपका
मन पर तो है कि इसी बूढ़ी
में आये संबंधी कुछ बात
और दरदर ले जाय। आभा के
इसके इन बातों को आप को
मैं लिखी हूँ। मैं गोपनीय
लिख रहा हूँ। यह मैं लू
मौलिक में बरकरार के लू फोम मठ
वही जहाँ लूंगा। लिखानी आगे
जल्दी से गिर जायेंगे। मैं
Dr. Roush के लू में मठ पर
यह एक मठ लूपा है लिखने
कर देता हूँ।

यहाँ Reconciliation Comm.

6 और पिता में आ रहे हैं।
उलके यह है इन मामलों में
आरम्भ होगा। मध्य लेता
आप आगे लूहा है यहाँ आगे
लूता। लूते जल्दी काय है। लूते
आप लू लूहा मठ मठ लूते है लूते

अन्तर्देशीय पत्र
INLAND LETTER



The Director

Joint Mission Board
G. C. L. Church Chairmen
P. O. Chairmen,

Dt Symphonium.

तीसरा मोड़ Third fold

भेजने वाले का नाम और पता :- Sender's name and address :-

Reinhold Kling

Cf 230

Rev. Mr. [illegible]

इस पत्र के अन्दर कुछ न रखिये NO ENCLOSURES ALLOWED

पृष्ठ काट कर खोलिय To open cut here →

As from Rhelaibassa,

My dear Charan.

I don't remember whether
I assigned the lessons for N.T. (10 pds)
and Ch. Hirt (7) If it is not
yet fixed then I propose that
you take the parables of Jesus
Christ concerning the Kingdom of God.
and if possible, Sermon on the Mount.
In Ch. Hirt you may choose any seven
Patriarchs (and if you like) some
great missionaries. You are free to
make your own choice. I am unable
to go Arrah as I have important-
evangelistic opportunity on 13th and 14th
instants near Sini. I make to make
use of this opportunity. I hope to
see Rev. Soy before he leaves for
Arrah. Today I am at Ranchi.

with best wishes
Your affectionately
sd. J. D. P. Tigg.
Baba.

C/230, Sector 6
Rovnla-2
16.2.63

The Director,

Dear Sir,

Thank you very much for your
letter dated 15th. 12.6.63. The given
date of your arrival at Rovnla does
not suit me. I am leaving Rovnla
for Dnepropetrovsk on the 19th evening and
~~I want to~~ I have to leave D.
Rovnla Dnepetrovsk on the 21st
evening. I want to ^{to} left at
Cherkashen ^{on 19th night} on 20th.

morning I want to
see you at
Chaitassa. I do
hope you will
wait for me at
Chaitassa.

Rest is alright
yours truly
D. Singh
16.2.63

पोस्ट कार्ड

POST CARD

REPLY

केवल पत्र
ADDRESS ONLY



The Director
Joint Mission Board
G. G. L. Church

P.O. Chaitassa

Dt. Singhbhum

26th. July, 1963

My dear Rev. Minz,

Thanks for all the letters received recently. 1. I note that you may have to go to Calcutta to see the General Manager. I wish you success in your efforts to get the piece of land you are trying for.

2. I have passed all your bills as far as I got them last month (Rs. 22.00 & 11.07 & 28.83), total sum of Rs. 61. 83. I hope you got all these along with your salary for June 1963. Rev. Soy sent it to Rev. Aind on the 5th. of July.

Handwritten: J.S. v. [unclear]
3. House rent : Rev. Soy has stopped drawing rent for the house. Rev. Aind has asked him to stop sending any more rent to him. I am going to write to the Treasurer about it. I learn from you now that you have been paying to Mr. S. Tiga Rs. 30/- p.m. as house rent. Please confirm it and send me the receipts so that I may draw the amount from the Treasurer or ask Rev. Aind to pay as much as he has received. You should not pay it from your pocket.

4. I learnt from Rev. Khalkho that you did not get the telegram. I was all the time the train was standing at the Raourkela railway station, looking for you. Never mind, I am sorry for the telegram reaching late, but we can't help it now.

5. The marriage date has to be fixed much in advance as you know how booked I am for various engagements. You should give an early attention to this matter and let me have your decision so that the other party may also have an opportunity to consider and decide.

With best wishes,

Yours Affly,

Handwritten: J. S. Tiga

Handwritten: 26.7.63

22/10/55

Sale of Old Typewriter

Medical W. Jacob Att W

Receipts

Receipts

60242.98

71500.00

B
T
T
C
1
1
D
E
C

R
E
P
S
I
C

C/230, Sector 6
Rourkela-2
13.7.63.

Dear father,

I hope Rev. Khalkho might
tell you why I could not
see at the Rly. station,
Rourkela on 4.7.63. Unfortun-
ately your telegramme
was handled over to me
on 5th July which was
behind the scheduled time.
The same day your I
received your letter also
asking asking my consent
on the proposed date of
my marriage. In reply to
this I would say at present
I am not in a position
to think deeply of my
marriage on the proposed
date. I am extremely busy
now after the mandali
affairs. Let us stick to
within the month of October
but not to the date. Durip

to my heavy program
I am not in a position to
spare some time for this. You
have asked ~~too~~ ~~me~~ proposed
this too early. Please
grant me time up to
August the end of August
It is conf. concerned with
private and public. By
the way Dr. Respectable
Rev. Dr. I did Reusah
~~learn~~ I knew the fact but
felt it is a high time.
In the meanwhile I shall
get enough time to discuss
this with them.

Before Oct. the most
essential thing I feel
most that is a separate etc.
I still feel here but
inconvenient in some
respects. Dr. Rev. Aind
will not pay attention
to this. I know this very
well from my previous.

experience. Please authorize
me to arrange a strike
the new township. Rev. ^{close}
^{in 1937}
has already agreed to
give Rs 60/- P.m. as the
gr. rent.

It is to let you know
according to your kind
above suggestion I am
giving Rs 30/- P.m. to Shri
Sohan Tripathi ^{from Jan 63} in spite of Rev.
Hind held up and stopped
the gr. rent coming from
the D. Mr. B.

Lastly, the General
Manager has kindly sent
~~the~~ the following in reply
to our reminder. A true
copy of which is enclosed
herewith. Rev. Dr. Purohit
advised me to see the
G.M. in person and get
it done as early as possible.
From reliable sources

we heart that he is due
to come to Rowville to-
morrow. If he comes
here a delegation has
been appointed to see
him for the same. In case
of failure I may go to
Centerville personally next
week.

I am well in good
health.

Yours affectionately
J. H. H.

Should I send the prices
of "Pioneer"?

From Rev. P.C. Minz,
C/230, Sector 6,
Rourkela-2, Dist Sundergarh.

To The General Manager,
S.E. Rly., Garden Reach,
Calcutta-43.

Sub: - Chapel to carry on our Religious Functions.

Ref: - Your letter No AW/ 17322 Dt. 4.7.1963.

Respected Sir,

While thanking you for your kind and sympathetic attention that you are paying to us in connection with the construction of a Chapel within Rly. Colony, Rourkela-1 for worship, we would like to put forth our present and immediate need before you.

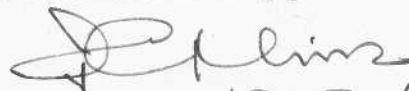
That since the demolition of our Chapel in the Rly. Colony Rourkela particulars of which have already been intimated to you in our letter dated 1.4.1963, the christian congregation continued to offer prayers on Sundays and on festive days occasions under open sun. The unforeseen days thus, under all sorts of trials glided away.

But since now the rainy season has set in it has become very very difficult to offer our prayers in open place. Instances have occurred that in one and two occasions the attendants and the pastor had to take the help of umbrellas while the church services were going on.

That since it would be quite difficult to carry on prayers/offerings under heavy, incidental and incessant rains we are compelled to erect a temporary shed in said place. So that we may be able to continue our prayer offerings in the manner adjudged as well and befitting by any caste or creed.

Once again we hearty thank you for your kind attention and we are anxiously waiting to hear your favourable decision.

Yours faithfully,



17.7.63.

(Rev. P.C. Minz)

Chairman,

G. E. L. Church,
ROURKELA

Rourkela-2.
17.7.1963.

Copy to:-

The Director,
Joint Mission Board,
G.E.L. Church, Chaibassa (P.O.),
Dist Sundergarh.

" TRUE COPY "

License Under Section 9, Act XV of 1872.

TO ALL TO WHOM THESE PRESENTS SHALL
COME.

Governor of Orissa.

Send Greetings:

Whereas as by an Act passed by the Governor General in Council on the eighteenth day of July, One thousand eight hundred and seventy two, being Act No. XV, and entitled "THE Christian Marriage Act, 1872" it is provided that marriages may be solemnized in India by any persons licensed under the said Act to grant Certificates of Marriages between Native Christians; And whereas it is also provided by Section 9 of the said Act that the State Government may grant a license to any Christian, either by name or as holding any office for the time being, authorizing him to grant Certificates of Marriage between Native Christians And whereas the Governor of Orissa has thought fit to grant to Rev. P. C. Minz a Christian, a license to grant certificates of marriages between Native Christians:

~~It~~ It is hereby certified in him, does hereby licence and
P.T.O.

and authorise the said Rev. P.C.
Mimz as and being a Indian
Christian, to grant certificates of
marriages between persons who
are Native Christians within the
District of sundugark under
the administration of the Govern-
ment of Orissa.

Given under my hand and
the seal of the Government of
Orissa, this day of January
one thousand, nine hundred
and sixty three.

By Order of the
Governor

sd/ Illegible
31. 1. 63

Secretary to Government

D GP (Health) 467-408-15. 3. 1955

sd/ M. Hemrom,

22. 3. 63.

Secretary,
G. E. L. Church,
Chotanagpur & Assam.

C/230, Sector 6
Rowkela-2.
16. 7. 63.

The Director,

Dear Sir,

As per your advice &
hereby I am sending you
two true copies of Marriage
Licenses granted to me by
the Government of Orissa.
To kindly publish these in
our departmental quarterly
Bulletin "Prachin" for
public information.

Yours truly

Rev. J. P. Chinn

16. 7. 63.

Chairman

G. E. L. Church,

Rowkela.

I am sorry not being
able to submit monthly
report since May, 63.

I shall be sending it
soon.

C/230, sector 6

Rourkela. 2.

19. 7. 63.

मारे भैया,

मिश्र सहाय । मैं आप: सभल
हूँ । तुम लोगों का कुशल बताता
हूँ ।

मैं ने मां को आश्वस्त किया था
कि जहाँ से पेन्शन का बिहान
पेज दूंगा वह अब तक कई कारों
से नहीं मिल सका । तभी भोजपुरी का
एक कारवां था कि मैं जितने पैसे
ठहरा हूँ वे सभी दुष्टों से बंटी न
गये वे जो बहुत देर से
पैसे आये । लौटने पर भोजपुरी
पर तब तक कि बिहान उनकी
आवश्यकता से मैं अधिक हूँ ।
वह सब से पहले बोल रहे कि
आवा देंगे । मैं उनकी बातों के
अनुसार दुविधा में रहा और
वही मिल सका । मैं आश्वस्त
मिचता हूँ मां इसके आश्वस्त में बनें
और जगह को बना रखो लोग
मैं फल या पत्तों का प्रतिभा
वह के द्वारा पढ़ा है मैं
दंगा । उतरी गंगा आकर
इसे ले जाऊँ ।

P.T.O.

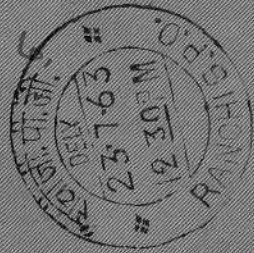
अन्तर्देशीय पत्र
INLAND LETTER



Mr. Jolpolhem Tiga,
vill. Kokar Khorhatoly,
P.O. Lalpur,
Dist. Ranchi

भेजने वाले का नाम और पता :- Sender's name and address:-

Rev. *[Signature]*
C/230, Sector 4
Roukela 2.



पहला मोड़ ← First fold →

← तीसरा मोड़ Third fold →

द्वारा मोड़ Second fold →

पृष्ठ काट कर खोलिय To open cut here →

[illegible]

५५१. अथ कृतः प्रश्नः

۴۲

— ۱۹۶ —

Rowkela-2.
19. 4. 63.

The Director,
J. m. B., Chakbasa.



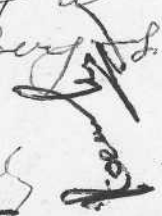
Dear Sir,

Several matters important
matters have to be consulted with
you immediately. For which I
expected you on 31. 3. 63 at
Rowkela. I again tried to
contact you over phone through
Magistrate Chakbasa yesterday and
day before yesterday. But I
failed to trace you.

Please let me know as early
as possible by the return of express
letter when you will be available
at Chakbasa. It would be much
better if you can come here
shortly. I would have gone to
Chakbasa if at all today if I could
know definitely that you are
available there.

Hereby, I am enclosing a
long pencil box for you.
More when we meet.

With best regards, yours


Chautauqua

20.12. 62

My dear Rev. Minz,

I have received your telegram and I am very sorry that your house + the chapel have been demolished. Please find some other house and the Jm B will pay the rent whatever will be the amount.

With best wishes

Yours Affly

J. Ortega

20/12

Qc

29-4-1963

Rev. C. B. Hind, Adhyalsh
Orasa Auchal,

Dear Rev. Hind,

I agree that you keep the rent money of Rogof with you and please on the strength of this accumulated amount, try to find some house for Rev. P. C. Minz (rather the Rouhela Pastor, wherever it may be). I shall not pass for any more rent unless & until a house is found and the rent is fixed. May I know where Rev. Minz stays now and is he staying free of rent?

Thanks

Yours sincerely

D. B. G. A
Director

Copy to:

1. Rev. P. C. Minz

2. Rev. J. S. Treas's Aosh

अपने प्रारम्भिक जीवन में ही निक्सन को उस समय शोक का अनुभव हुआ, जब इनके एक छोटे भाई की ७ वर्ष की आयु में ही मेनिंजाइटिस (गर्दन-तोड़ बुखार) से मृत्यु हो गई और इनके बड़े भाई १८ वर्ष की आयु में दाय रोग से परलोक सिधार गये थे ।

श्री निक्सन ने ह्विटियर में अपनी प्रारम्भिक एवं माध्यमिक शिक्षा समाप्त की थी और १९३४ में ह्विटियर कालेज में अपनी श्रेणी में द्वितीय रहे । उत्तरी कैरोलाइना, में ड्यूक विश्वविद्यालय के ला स्कूल में अध्ययन करने के लिए इन्हें एक छात्रवृत्ति प्राप्त हुई, जहां से इन्होंने १९३७ में कानून के विषय में ससम्मान उपाधि प्राप्त की ।

कैरोलाइना में वकील होने के पश्चात् श्री निक्सन ने ह्विटियर में एक रेसी फर्म में शौकरी कर ली, जो वकालत का व्यवसाय करती थी । एक वर्ष के भीतर ही निक्सन उस फर्म में एक भागीदार बन गये । उसी वर्ष २१ जून, १९४० को श्री निक्सन ने ह्विटियर की एक शिक्षिका पैट्रिसिया रयान से विवाह कर लिया । उनकी दो पुत्रियां पैट्रिसिया तथा जूली हैं ।

श्री निक्सन ने ५ वर्ष तक ह्विटियर में वकालत की और वे आंशिक रूप में डिप्टी सिटी अटोर्नी के रूप में भी कार्य करते रहे । उसके पश्चात् ये वाशिंगटन में प्राइस एडमिनिस्ट्रेशन के कानूनी कर्मचारियों में सम्मिलित हो गये । वहां ५ महीने तक कार्य करने के पश्चात् इन्हें अमेरिकी नौसेना में लेफ्टिनेण्ट जूनियर ग्रेड का कमीशन मिल गया और १९४२ में इन्हें कार्यभार सौंप दिया गया । ये १३ महीने तक दक्षिण प्रशान्त में कार्य करते रहे, जहां इन्होंने दक्षिण प्रशान्त के युद्ध में दो स्टार और दो प्रशस्तिपत्र प्राप्त किये । १९४६ के जनवरी मास में ये लेफ्टिनेण्ट के पद से मुक्त हो गये ।

नौसेना से पृथक् होने से कुछ समय पूर्व इनसे रिपब्लिकन नागरिकों की एक समिति की ओर से जैरी वूडहिस के मुकाबले में कांग्रेस के चुनाव में लड़ा होने के लिए कहा गया था, जो डेमोक्रेटिक दल की ओर से ५ बार कांग्रेस के सदस्य चुने जा चुके

C/230, Sector 6

Round 14-2.

30. 4. 63

Dear Rev Roy.

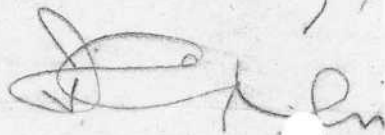
I do hope you might have received my letter dt 28.3.63 reminding you of my P.F. which I stopped since Jan 63. usually you have been sending my contribution to the ~~Post~~ Treasurer ~~direct~~ Rev C.B. And ~~direct~~. Now it has been stopped by you without my knowledge.

I humbly request you to kindly keep continue to deposit my contribution to my P.F. and send me the balance of my salary. My contribution due from the month of Jan 63 be sent together to the Treasurer of my April salary 63.

P.T.O

Thanking you

yours truly,



30.4.6

copy to

- 1) Rev. C.B. Andrews, Treas
- 2 The Director J.M.

an *Refuse*

C/230, sector 6
Rourkela-2
26.4.63

4/1 The Director,

Dear Sir,

I am now bound to place my grievances before you for your kind consideration.

Four days are left more that the month of April will pass away and I have not received my salary for the month of March 63. on receipt of the intimation given by Rev. C.B. Aind I went to him for the same but I returned home unpaid as usual. I approached him thrice in the month of Feb. 63 to draw my salary for the month of Jan. 63.

You may just think of my hardships which I have to undergo now without money. I am still now wifeless yet I need a big amount of money timely paid to meet
D.T.O.

my current expenses. There are
lot of dependents on me of whom
some are students. By irregular
payment they have to pay
defaulter fines every month.

Moreover this source about
payment is quite unconservative
with much harassment.

I therefore request you to
kindly look into the matter
deeply and make arrangement
for regular payment.

Thanking you

yours truly,


26.4.63

Copy to

1. The Chairman, J. M. B.
2. The Secretary do.

G. E. L. CHURCH, ROURKELA
SUNDERGARH, ORISSA.

Rev. P. C. Minz, L.th.
Chairman

Ref. No.

Rly. Doubling Colony.
Rourkela-4 2.

Dated 12. 2. 1963.

Replied

Dear father,

As per request of mother in Ranchi to Dulai Phufe regarding my marriage taking much initiative since she went back to Jharkhand in Jan. last. she has suggested a girl of Kamke which is a Creech nurse there. she strongly recommends that I should make her my life partner. I have never seen and know nothing of her before. At this situation I am now in fix to give my preference. Please help ~~me~~ by giving your willingness if you know her best and ^{consider} to be fitted to me.

So far Phufe and has written me that her mother and brother do quite agree to this but the not the girl. I am writing shortly to her which is much more important. I am writing shortly to her to make me clear.

Yours lovingly
G. E. L. Church

17th Feb 1963

Rev P. L. Ming

My dear beta Charan,

I have to inform you that mother + I have gone through your letter req. the proposal of Dulari Jaiswal. Since, as your phupha says, the girl is not willing, we think that there is no use talking about it. If the girl herself is not prepared, the question does not arise. We are earnestly thinking for you and God willing, we shall surely succeed in His own good time. Meanwhile we shall always be prepared to have suggestions from you.

Bisaram met with an accident on the 5th inst. We came to know about it on the 10th inst. While on duty, by a sudden electric flash he got burnt in his face and two arms below the elbow. He was in the main hospital until the 10th and got discharged from there - but he has to visit the hospital once in two days. Yesterday I brought him to Charbassa for a change. He is out

प्रेसिडेण्ट ट्रूमैन उस समय इण्डियेण्डेस (मिसूरी राज्य) में थे। विदेश मन्त्री श्री डीन एक्सन ने प्रेसिडेण्ट को यह परामर्श दिया कि वाशिंगटन का अधिकारी दल कोरिया में संयुक्तराष्ट्र-संघीय कार्यवाही किए जाने के पक्ष में है। इस प्रकार सरकार ने इस अवसर पर शीघ्रतापूर्वक और एकमत हो कर कार्य किया।

दूसरा अवसर उस समय उपस्थित हुआ, जब जनरल मैकार्थर ने कोरिया-संघर्ष को यालू नदी पार तक ले जाने की सिफारिश की। इस अवसर पर श्री डीन रस्क ने युद्ध को सीमित रखने की जोरदार वकालत की।

सेना में, विदेश विभाग में, और राकफेलर प्रतिष्ठान के अध्यक्ष के रूप में श्री डीन रस्क को बार-बार कठिन निर्णय करने पड़े हैं और यह कार्य अब उन के जीवन का अंग बन चुका है।

उदाहरणार्थ, १९५८ में प्रतिष्ठान की माप केवल २ करोड़ २७ लाख डालर थी, जबकि उस का खर्च ३ करोड़ १६ लाख डालर तक पहुँच गया था। लैटिन अमेरिका, अफ्रीका, पश्चिमी एशिया और एशिया के अन्य भागों की शिक्षा और प्रशिक्षण सम्बन्धी आवश्यकताओं को पूरा करने के लिए, उन्होंने प्रतिष्ठान की पूंजी से ६० लाख डालर की अतिरिक्त पूंजी प्राप्त की।

प्रतिष्ठान के अध्यक्ष की हैसियत से हंगरी के विस्थापित छात्रों और विद्वानों के पुनर्वास की व्यवस्था करने के उद्देश्य से श्री डीन रस्क बुडापेस्ट और वियना की यात्रा भी कर चुके हैं। उन्होंने पोलैण्ड में कृषि और विज्ञान के विकास के लिए भी बहुत कुछ किया है।

राकफेलर प्रतिष्ठान की स्थापना १९१३ में हुई थी। १९१३ से लेकर अब तक यह प्रतिष्ठान विदेशों को ७० करोड़ डालर से अधिक की सहायता सुलभ कर चुका है। राकफेलर में श्री डीन रस्क ने ८ वर्ष कार्य किया। इन आठ वर्षों में उन की देख-रेख में प्रतिष्ठान ने विदेशों में २४ करोड़ ७० लाख डालर की धनराशि खर्च की।

dangers by the mercy of God and all the arms,
 fingers, eyes etc. are in perfect condition. He
 is recovering speedily and we hope in one
 more week he will not need any medical
 attendance and then we shall take him to
 Ranchin for a rest.

The Joint Mission Board has recognized your
B.A. fail and has kept you on the D.A. L.Th. scale.
Please let me know at once what you have been
getting until now - salary + allowances, exactly
and separately. With love and friendship
Yours Affly
Baba

Miss B. Tiga, M.A., Dip-in-Ed.
Headmistress

ADIBASI BHAWAN,
KARANDIH, P. O. SUNDARNAGAR,
Dt. SINGHBHUM, BIHAR.

Ref. _____

Dated 196

24th April, 1963

The Rev. P. C. Minx L. Th.

My dear Rev Minx,

This is to inform you that the Mission house and the chapel at Roushela are going to be dedicated on 19th May, 1963 at Borshol, Midnapur. In this connection we shall have the JmB pastors' Conference on the 17th + 18th May there itself. All the JmB pastors are requested to be present. There are buses from Tata to Baripada + Baripada to Borshol. You can go from Chaihasa also through Hata, ~~Rangpur~~ Rairangpur, + Baripada. Your bus fare etc. will be paid by the JmB. You should be there on the 17th. I am going ahead.

Yours sincerely
J. B. Legu

अन्तर्राष्ट्रीय समाचार

प्रेसिडेण्ट आइजनहौवर और प्रधान मन्त्री मैकमिलन द्वारा शान्ति और न्याय की स्थापना में आशा व्यक्त

लंदन : ३१ अगस्त को रात में 'प्रेसिडेण्ट आइजनहौवर और ब्रिटिश प्रधान-मन्त्री श्री मैकमिलन ने समस्त विश्व में शान्ति और न्याय की स्थापना के उद्देश्य से विचारधारा और कार्य सम्बन्धी एक चतुःसूत्रीय योजना में अपनी आशा व्यक्त की। प्रेसिडेण्ट आइजनहौवर और प्रधान मन्त्री श्री मैकमिलन के बीच टेलिफोन पर २० मिनट तक वार्ता हुई, जिसे ब्रिटेन और यूरोप के लाखों दर्शकों ने देखा।

फ्रांस के प्रेसिडेण्ट देगाल के साथ प्रेसिडेण्ट आइजनहौवर की वार्ता

रेम्बोइले, फ्रांस : ३ अगस्त को प्रेसिडेण्ट आइजनहौवर ने फ्रांस के प्रेसिडेण्ट चार्ल्स देगाल के साथ अनेक महत्वपूर्ण विषयों पर विस्तार के साथ वार्ता की। यह वार्ता, पेरिस से इटालिया-पश्चिम ५० मील की दूरी पर, श्री चार्ल्स देगाल के ग्राम्य निवास-स्थान पर हुई।

श्री खुश्चेव को 'किसी भी अमेरिकी घर को अच्छी तरह देखने' का निमंत्रण

डेस मोइंस, वायोवा : 'दि डेस मोइन्स रजिस्टर' नामक पत्र ने मध्य-पश्चिमी अमेरिका के इस नगर के निवासियों की भावना को व्यक्त करते हुए, जहां सोवियत प्रधान मन्त्री श्री खुश्चेव अपनी अमेरिका-यात्रा के सिलसिले में आने वाले हैं, कहा है कि 'यदि सोवियत प्रधान मन्त्री यहां के निवासियों की किसी भी गली में घूमें, उनका द्वारा खटखटायें और उनके निवास-स्थान को चारों ओर से अच्छी तरह देखें, तो उन्हें अमेरिकावासियों और उनके जीवन-यापन के ढंग का सच्चा चित्र प्राप्त हो सकता है।

श्री

G. E. L. CHURCH, ROURKELA
SUNDERGARH, ORISSA.

Rev. P. C. Minz, L.th.

Chairman

Ref. No.

3/A-63

ep 30, sector-6.

Rly Doubling Colony.

Rourkela-1-2

Dated 196 .

The Secretary,
G. E. L. Church, Purnapani.

Dear Sir, - 43
with reference to your letter
dt. 28.12.62 - 29.12.62 I would like
to say that the Commission has
temporarily empowered to function
your local Church Committee
which is not the main church
as it was not formally constituted
tionally. Actually the Commission
has put your local Church
Committee into trial. And I
know very well that your local
Church Committee has failed
to a great extent to function
according to the decision of the
Commission dt. 13.5.62 (vide
K.S.S. Commission decision dt.
13.5.62. P.T.O

G. F. L. CHURCH, ROURKELA

SUNDERGARH, ORISSA

Further I strongly say that your
local Church Committee must
not be given any charge of the
property by the Board of
Management of Properties, G. F. L.
Church, Ranch

yours truly,

Rev. J. D. D. D.
8/63

Copy to all concerned.

Rowkeela-
9.7.59.

Dear father,

I got two of your progre-
-mones for Rowkeela - but without
effect. May I know what was
your purpose to visit Rowkeela?

After the mahasabha last
I met Rev. Z. Chakko and
bought his permission to have
our Sunday services in mahal-
-pala. I got a reply in nega-
-tive but he is happy that
I am at Rowkeela. moreover
he made suggestion to me
that I must combine my-
self in Rowkeela. This he said
he is afraid of one that his
people would leave him.

For our people we have
erected a small chapel in
front of my quarters. Now

150 people can conveniently
sit in this chapel.

After we got the copy
of your application sent
to the Rev. Pind. regarding
my ordination. I do not
know he has replied you
or not. Indirectly I have
heard the opinion of Rev.
Pind. He at present he
is not in favour of my
ordination. unless I make
second marriage or dina-
-tion will never take place.
I consider it not a loss.

It he has heard me
this I should have said
"नै यत् नै तत् न मन् यत् नै")

Attempts are being
made by that evil
woman that I shall
marry Dayamani. whom
-soever she has proposed
he got a negative
reply.

on July 29th may leave Ranchi for a week.

I have already submitted an application to the Registrar C. U. for permission. Mr. A. K. Das the head clerk has written me that he had forwarded my application to him. I do hope I shall be granted to appear.

I am giving some time on holidays but not very seriously.

Dr. Russell has come back from Nilgiri but so far I have not met him.

Support the case of Purnapani with money.

There is a cent per cent hope that the decision will be given in our favour. With yours every truly
Chandra

अन्तर्देशीय पत्र

इस पत्र के अन्दर कुछ न रलिये



Mrs. A. Tige
G. E. L. Church, Ranchi
Ranchi
Ranchi.

भेजने वाले का नाम और पता :-

Chandra
Ranchi
Bundargarh.



प्राप्त कर का रसिद

गोम्सनर एबे'जेलिकल लूथेरान कलीशा, राउरकेला पेरिस के बिये सुसंवाद

राउरकेला पेरिस के लूथेरान मसीही भाई-बहनों को यीशु सहाय ।
यहोवा परमेश्वर की ओर से मेरे पास आया यह सुसंवाद मैं आप सभी को पेश करता हूँ ।

“तू जाकर उत्तर दिशा में ये बातें प्रचार कर यहोवा की यह बाणी है, हे भटकने वाली इस्राएल लौट आ, मैं तुझ पर क्रोध की दृष्टि न करूंगा, क्योंकि यहोवा की यह बाणी है, मैं करुणामय हूँ, मैं सर्वदा क्रोध न रखे रहूंगा । केवल अपना यह अधर्म मान ले कि तू अपने परमेश्वर यहोवा से फिर गयी और सब हरे पेड़ों के तले इधर उधर दूसरों के पास गयी, और मेरी बातों को नहीं माना, यहोवा की यह बाणी है ।”

“हे भटकने वाले लड़को लौट आओ क्योंकि मैं तुम्हारा स्वामी हूँ. यहोवा की यह बाणी है । तुम्हारे प्रत्येक नगर पीछे एक, और प्रत्येक कुल पीछे दो को लेकर मैं सियोन में पहुँचा दुंगा । और मैं तुम्हें अपने मन के अनुकूल चरवाहे दुंगा, जो ज्ञान और बुद्धि से चराएंगे । उन दिनों में जब तुम इस देश में बढ़ो और फूलो फलो तब लोग फिर ऐसा न कहेंगे, ‘यहोवा की वाचा का सन्दुक’ ; यहोवा की यह भी बाणी है । उसका विचार भी उनके मन में न आएगा, न लोग उसके न रहने से चिन्ता करेंगे ; और न उसकी मरम्मत होगी । उस समय यीरूशलीम यहोवा का सिंहासन कहलाएगा, और सब जातियाँ उसी यीरूशलीम में मेरे नाम के निमित्त इकट्ठी हुआ करेंगी । और वे फिर अपने बुरे मन के हठ पर न चलेगी । उन दिनों में यहूदा का घराना इस्राएल के घराने के साथ चलेगा और वे दोनों मिल कर उत्तर के देश से इस देश में आएंगे जिसे मैं ने उनके पूर्वजों को निज भाग करके दिया था । मैं ने सोचा था, मैं कैसे तुम्हें लड़कों में गिन कर यह मनभावना देश दुं जो सब जातियों के देशों का शिरोमणी है । और मैं ने सोचा कि तू मुझे पिता कहेगी, और मुझ से फिर न भटकेगी । इस में तो सन्देह नहीं कि जैसे बिस्वासघाती स्त्री अपने प्रिय से मन फेर लेती है, वैसे ही हे इस्राएल के घराने, तू मुझ से फिर गया है यहोवा की यहो वाणी है ।” ॥ यिर्ममाह ३: १२-२०

धन्यवाद हो यहोवा परमेश्वर का जिसने मुझे यह सुसंवाद दिया और धन्य है आप जो यह सुसंवाद पाते और मानते हैं ।

१-४-१९६३
सी/२३०, सेक्टर ६
राउरकेला—२

प्रभु में आप सभी का,
पाद्री पी. सी. मिज
पेरिस चैरमेन
जी. ई. एल. चर्च,
राउरकेला ।

Rev. P. C. Minx LTH

My dear Rev. Minx,
Thanks for your letter + M.O. The money reached me at a time when I have the greatest need - it was indeed God's plan. Mother is now at Jamshedpur with Biscanum who has joined his duty today. He needs some one to look after his food etc. at least for some time.

Rev. Aind, Adhyaksh had told me already about the proposed meeting to be held on 31.3.63. I have already agreed to attend this meeting. I have to attend to a case in the court here on 30.3.63. So I hope to go by Jeep via Mandharpur. I shall try to arrive by early morning on the 31st, if not by 30th night.

Wishing you everything well.

Yours Affly

J. K. Jena

GOSSNER EVANGELICAL LUTHERAN CHURCH IN CHOTANAGPUR AND ASSAM.

REV. J.J.P. TIGA, M.A., B.D., S.T.M.,
PRESIDENT,

G.E.L. CHURCH COMPOUND, RANCHI.
Dated the 23rd APRIL, 1958.

REF: NO 1246-61/58.

S U C H N A.

T. All Synod Presidents, for information and the needful.

Gossner Evangelical Lutheran Kalisha ke sab angon ko sunhi kiya jata hai ki is sal Lutheran Theological College men fir se naye bidyarthi liye jayenge. Sab Synod Adhikariyon se niwedan hai ki apne apne halke ke sab Mandliyon men uski janti de dewen:

- a). Admission ke liye imtihan: Mangalwar 20.5.1958.
- b). Centre - Harek Synod Headquarters men.
- c). Imtihan Nirikshak - Synod President ya wahajise wah bharawa.
- d). Imtihan ke bishay.

Pahili bela. 20.5.1958

7. - 8.30. I. Purana Niyam - Purn sankhya	100.
9. - 10.30. II. Naya Niyam - " "	100.

Dusri bela. 20.5.1958.

2. - 3.30. III. Git & Catechism	Purn sankhya	100.
4. - 5.30. IV. Mandli Britant	" "	100.

Sawal kagaj sab Synod President sahebon ke pas susama men bhej diya jayga. Darkar ho to Black-board men sawal likh diya jany.

Synod President umedwaron ke darkhston ko aur unke imtihan kagajon (jababon) ko kripa karke registry dank ke jariye nimin pate par bhej den.

REV. DR. M. BAGE, ACTING PRINCIPAL,
LUTHERAN THEOLOGICAL COLLEGE,
BABU LANE, G.E.L. CHURCH,
RANCHI.

Darkhast ka form Synod Presidenton se milega. Darkhast ka form thik se bhar kar sab sipharishon ke sath Synod Presidenton ke jariye bhejna chahiye. (1) Sab darkhasht (2) Nij jivan ki sanchhipt byakhya (3) Aur jabab kagaj 25.5.1958 tak Acting Principal ke pas pahunch jana chahiye. 30.5.1958 Seminary Board men unke likhit darkhaston, imtihan ke phal tatha jiwani par bichar kiya jayga aur Church Council ke pas antim phaesla ke liye sipharish kiya jayga. 31.5.1958 ko Church Council ka phaesla hoga tatha sab chune huwe umedwaron ko turant khabar diya jayga.

Sab purane aur naye bidyarthi 14.6.1958 ko Ranchi pahunchenge aur 16.6.1958 se class ka arambh hoga.

NO. 1262-93/58. Copy to (1) REV. DR. M. BAGE
FOR INFORMATION
(2) ALL TILAKA CHAIRMEN.

J.J.P. TIGA.
CHAIRMAN,
SEMINARY BOARD,
(PRESIDENT, G.E.L. CHURCH)

20.3.63

Rev. P. C. Muir

Dear Rev. Muir,

Thanks for your letter.
Rev. Rind, Adhyaksha told me
already about the proposed
meeting to be held on 31.3.63
and I have already agreed
to attend this meeting. I have
to attend to a case in the
court at Chailgaon on 30th
inst. Therefore I may not
be able to reach on that
day, but I shall try to go
on 31st morning. I hear that
my jeep can go via Naula
bazar.

With best wishes
Yours Sincerely
Dr. Ranga

Extract from the Minutes of the meeting of the
Post-graduate Committee, 17/1/62.

4. Business arising.

(a) Draft syllabus in Christian Worship (M.Th.)

The Registrar presented the revised draft syllabus in Christian Worship (cf. p.262)

It was recommended:

(i) that this draft syllabus be sent to the affiliated B.D. colleges inviting their comments and suggestions on it.

(ii) That the Post-graduate Committee recommends to the Senate to hold a meeting of the M.Th. Board of Studies in Christian Worship sometime in 1962 to finalise this syllabus in the light of the comments received from the affiliated B.D.Colleges.

(iii) That Rev. J.R.Chandran and Rev.David Lyon be invited to join the Board when it meets for this purpose.

(c) M.Th.Booklist in Branch III, Christian Theology (cf.p.262).

The Registrar reported that Booklist in M.Th.Branch III Christian Theology has been printed and published. Recorded.

5. Additional Post-graduate Degree Course (cf.p. 262 of 1961 Res. IX (a) and (b)

(a) Title of the proposed new post-graduate degree (cf.p.295 Res. 5 (b))

In response to the request of the Council of Serampore College to reconsider the title of this course, the Post-graduate Committee again considered the matter and resolved to submit the following recommendation to the Senate.

/Recommendation: That the new degree be called the Master of Religious Studies. (M.R.S.)

(b) Rules and Regulations for the new Master of Religious Studies.

The Post-graduate Committee studied the draft rules and regulations prepared by the Executive and after necessary changes recommended it to the Senate for approval.

(c) Syllabuses in the different branches of studies in M.R.S.

.....
(iv) The Field of Christian Ethics.

The draft syllabus was approved in 1960. The Committee now recommends to the Senate that it be printed with the regulations.

(v) Field of Practical Theology.

The Convener of the Board of Studies has redrafted it as per the recommendation of the Post-graduate Committee.

After minor changes it is now recommended to the Senate for approval.

(vii) Field of Christian Doctrine.

Important dates

7-18 - Jm's basket of coffee at Borshol

19.V.63 — Dedication at Borshol

unordained members shall always be atmost equal. If however for the term of any two years, the CC deems necessary to change the rates(propertion) between the ordained and unordained members, she shall have the right to do so, but if there whall be necessity of arranging for the fubure terms then the CC must keep the previous changes in mind.

If the CC shall have to plan for such election then ordinarily so for possible, she should arrange by ballot.

(k) Whenever the Church Council knows that some community, or institution or special working group is not justly represented, then she shall have the power to advise our or more synods that as the synods elect their representatives, they should think of electing at least one representative from such community or institution or the special working group. Such representatives must remain within the fixed quota for the synods.

(l) Whenever the Church Council feels the need of representation from a particular community or an institution or a special working group, then she can appoint(nominate) one representative more than the usual number of the Church Council for a term of one year. But she can appoind(nominate) only one such representative in a year.

According to the sub clause (1) whenever the CC nominates an additional member in the Church Council, then he shall be a CC ex-officio delegate to the Mahasabha of that year.

Except three or four officers mentioned above and the two years term members of the CC, the rest all the CC members shall work for a term of four years. Moreover they can be re-elected for another four years term. But except for the officers of the Church no other member can remain member of the Church Council continuously for more than eight years. After 200 full years from the completion of the eight year, any member can again be elected as the member of the Church Council.

2. The presence of thirteen member shall make the quarum of the Church Council.

3. The Church Council can not sit more thantwice a year. She must sit at least once a year, and this shall be called

her annual Sabha. Her duties shall be to carry out the re-

the resolutions of the Mahasabha being the representative of the Gossner Church and shall perform all tasks of the Mahasabha between the period of its sessions. She shall coordinate the works of all ~~committees~~ committees, take reports ~~from~~ of the works of different committees. Show the Mahasabha the detail budget of the ensuing year, arrange for the filling up the vacant posts of the workers, and she shall do all such works entrusted to her by the Mahasabha. She shall present full report of his work in the Mahasabha.

4. The Church Council shall form the small executive committee by electing the officers of the Church and five other members. At least four members of the executive Committee must be unordained (laymen) persons. The executive Committee shall not have the right work on behalf of the full Church Council between its sittings but it shall be authorised to do works which need immediate attention and execution.

5. If a member of the Church Council (i) dies (ii) is excommunicated (iii) and having received notice himself twice continuously from the regular meetings without just and sufficient reasons, then that person would be considered as withdrawn from the membership.

Cutt off (Chalked out). In place of the dropped out member for the remaining period of the same term, the same synod or which he was the representative, shall elect a new member.

6. Whenever the heads of different institutions of the G.E.L. Church shall not be elected as the delegates to the Mahasabha from the synods, then she shall have the power and privilege to call or invite them to the Mahasabha to present reports and give advices, if the CC feels the necessity of their presence.

7. The Church Council shall have the power in administrative matters between her and the synods, according to the following rules.

(i) Whenever necessary the Church Council can order and advice any synod so that the synod workers or functions in accordance with the constitutions and bylaws of the G.E.L.C. and synods Sabha administrative rules, and the rules, regulations orders and

Rev. P.C. Minz
Raisiela

7-3-63

Dear Rev. Minz,

Soon after I posted my letter to you today I received an express letter from Goswami High School asking me to come to Raisiela on 9-3-63 for an urgent meeting. The school has met with a crisis and my immediate attention is asked for. As

such I cannot go to Raisiela now. I shall try

to go as soon as possible after this.

Yours sincerely,
J. N. Singh

JOINT MISSION BOARD
G.E.L. Church, F.O. Chaibassa,
Dist. Singhbhum, (Bihar).

30.4.1963

Rev. J. Soy

Dear Rev. Soy,

Rev P.C. Minz is coming here tomorrow
I request you to pay him direct for
April 1963. He has written to me that
up till 26.4.63 he had not received
his pay for March 63.

Yrs sincerely
J. P. Hegd
Copy to Rev. C. B. And
A. D. S. a. b. n.

G. E. L. CHURCH, ROURKELA
SUNDERGARH, ORISSA.

Rev. P. C. Minz, Lth.
Chairman

Ref. No.

C/230, Sector 6
Bly. Doubling Colony.
Rourkela-2.
Dated 14.3. 1963.

The Director,
Joint Mission Board.

Dear Sir,

I received three of your letters one after another concerning your programme at Rourkela on March 9. 63.

I received my salary for Jan. 63 on March 8. 63 at personal approach to the Adhya kash at Raygumpur. The Adhya kash disclosed to me that a complain under the leadership of Mr. S. J. Hoo has been submitted to him. In order to settle ^{up} the own disputes we both have agreed to call a special meeting at Rourkela on March 31. 63. It would be much better if you will kindly attend this meeting.

The authorities concerned if
failed to do any constructive
work ~~for~~ so far should come
to settle up our disputes arising
one after another. I want that
Rev. Klose also be present at
this meeting. It is a proposal, the
~~not a matter of~~ date my passport,
please let me know earlier
that that the from whichever
sources what the K.S.S. is doing
in this meeting in connection
with Rourke.

You will be happy to know
that we have already submit-
ted an application for a free
church plot at Rly Colony
Pondamunda. The advice was
made by the top officers of Railway.
I am heartily hopeful
for its sanction.

With best regards,

Please find enclosed your truly,
together with a copy of my
reports for the month of
Feb. 63. J. J. J.

C/230, Sector 6
Rourkela-2.
25.4.63

The Adhyaksh,

Dear Sir,

I am in receipt of a copy of your letter dt. 10.4.63 & Rev. J. Soj asking him not to send further house rent till you are informed by me that I have arranged a quarter.

Please let you know that I had to leave my former residence in Pky. Glory. Rourkela-1 as a result of the acquisition of land by the Orissa Govt. on 18.12.62. Ever since this happened I am not staying not under a tree belonging to none but in a H.S.L. Quater which you know very well. This quarter has two rooms of which one is occupied by me completely since Dec. 19, 1962. This type of Quater of which I have occupied one when a none employee of H.S.L. is given on rent is usually changed between Rs. 60-75 P.M.

There was an order from Rev. H. Kloss, at present the Chairman J.M.B. and other well wishers like respectable Rev. Dr. J. Mrs. Pusek, Guman Pastor in 195-9 that I should stay in a H.S.L. Quater in the new township. Accordingly, Mr. P. Dany our Parish Secretary was able to arrange a Quater NO A/57, Sector 7, Rourkela-3 in the new township. I had made every arrangement to occupy that Quater. In the meanwhile I learnt from a reliable source that you were quite indifferent to this I readily cancelled my shift.

Ever since I became homeless you have not written me so far to find out a suitable Quater. As I have gathered experiences previously now I am much afraid of you to arrange a

P.T.O.

Roukula-2.
29. 4. 63

The Director.

Dear Sir,

I hope you might have received the letter at NO 78/66-K.S.-12 dated mill from the Asst to the Secretary, G.C.L. Church, Chhotanagpur and Assam. asking Rev. Th. Dimpdung and me to take delivery our marriage license from A.D. on at Sundergarh. Accordingly we both approached him on March 21, 1963. Unfortunately our marriage license from the above said Officer was sent out our to the Asst to the Secretary on 19.3.63. On receipt of this the Secy & Asst to the Secy sent me its true copy which is not even certified to be its true copy & instead of the Original one. Now I do not understand what is their good purpose behind them in keeping the Original in the K.S.S. Office.

Marriage parties are approaching me as soon as the Lent Season is over. Now I am much afraid of to perform marriages with the true copy. Please make me clear whether I can perform marriages with this or not. I think the marriage license granted by the Govt of Orissa is quite a personal thing to be kept with one all the time.

I have to perform marriage the very first marriage in my

Pastoral life after 19th May 63.
I therefore request you to
kindly contact the Asst. to the
Secy and make available my
marriage license before that.

I am planning to see you on
May 1, 63 at Chateausse and hope
you will be available there.

Thank you very much for
your invitation.

Yours truly

D. L. Blair

Rourkela-1
2.11.62.

The Director,

Dear sir,

I am in receipt of all your letters in time. Please let you know that I shall arrive at Chaibassa on Monday morning.

Yishu Sahay,

Yours truly,
J. P. Singh



पोस्ट कार्ड

POST CARD

साथ में भेजना है
THE ADDRESS ONLY IS INTENDED FOR THE ADDRESSEE

केवल पता
ADDRESS ONLY

The Director,
Joint Mission Board,
G. E. L. Church, Chaibassa

P. O. Chaibassa,

Dt Singhbhum

The Director
Joint Mission Board.

Romela
3.12.62

Dear Sir,

I arrived at Romela on the
same date safe and sound. The
article which is incomplete for the
name of a newly converted Telegu
sister is being sent to
you. Christian Name Christ ~~Lyra~~
Lyraemma

nonchristian name - Choppola

Baptized at Bondamunde Verkkyamma
on 10.6.62 P.T.O.

Please let me
know when you
are passing through
Rourkela so that
I can meet you
at the Rly. station.

Best
with best regards

Yours truly

D. P. Singh

पोस्ट कार्ड

POST CARD

केवल पते
ADDRESS ONLY



The Director
Joint Mission Board
G. E. L. Church, Chaibassa

P. O. Chaibassa

Dr. Singhbhum

Romulea-1.

30. 7. 62.

Dear Father,

Thank you very much for your letter dated the 23rd July. 62. I have just written to daddy in Chelvaadchenpur what important matter we would have discussed on 25th of July then.

From your letter I learnt your fatherly anxiety of my marriage.

At present I do not have any proposal from Romulea. There are some which I have already refused.

As regards the fresh proposal of my marriage I am now in fix to give my consent. ~~that~~ ~~what may be seen~~ How old is she? on being from you I will give my consent. Now I am being forced by all well wishers which I do not like personally at this situation.

The K.S.S. did not meet in this month. I do not know what will happen in Purnepuri where a purely political party is empowered to work as its for maralli Panch. Our people wants you here soon.

Yours off-ly,
D. P. S.

अन्तर्देशीय पत्र
INLAND LETTER



The Director,

Joint Mission Board,
G. L. Church Cnfrs.
P.O. Choubacca,

It Singhbhum.

पहला मोड़ First fold

तीसरा मोड़ Third fold

दूसरा मोड़ Second fold

भेजने वाले का नाम और पता :- Sender's name and address :-

NO ENCLOSURES ALLOWED

यहाँ काट कर खोलिय To open cut here

the 3rd. Aug.1962

REV. P.C.MINE L.TH.

My dear Prabhucharan,

I thank you for your letter of the recent date. I appreciate your difficulties and I want to have a personal talk with you. I indeed admire your courage and the zeal to serve the Lord even in a disturbed situation as it obtains at Rourkela. May the Lord uphold you, guide you, help you and bless you.

As Mr. N.Hemrom and others (he has not given the names) are coming to me on the 4th. inst. I thought of you also. Are you coming? I am a little doubtful because it is a Sunday and you may not be free. But, if it possible without much difficulty in adjusting the programme, I would like very much to meet with you. I had planned to come today to Rourkela myself in order to meet with you and others but as I received a letter from Mr. N.Hemrom informing me about his coming here today, I cancelled my coming to Rourkela.

More when we meet.

With best wishes,

Yours Affly,

कृषि सम्बन्धी व्यावहारिक वैज्ञानिक जानकारी

यह नया कृषि विश्वविद्यालय हिमालय के सुरम्य पर्वतों की शीतल छाँह में स्थित तराई स्टेट फार्म में स्थापित किया गया है। भारत की कृषि प्रधान अर्थ-व्यवस्था के लिए जिस प्रकार के व्यावहारिक शिक्षा प्राप्त युवाओं की अत्यधिक आवश्यकता है, यह नवीन कृषि विश्वविद्यालय उसे पूरी करने में महत्वपूर्ण योग प्रदान करेगा।

इस विश्वविद्यालय का उद्देश्य वैज्ञानिक कृषि-कार्यों और इस से सम्बन्धित महत्वपूर्ण विषयों के सम्बन्ध में व्यापक जानकारी प्रदान करना और उन्हें इस प्रकार प्रशिक्षित करना है, कि वह प्राप्त जानकारी को किसानों तक पहुँचा सकें। इस वर्ष पूर्व भारत के उप-राष्ट्रपति डा० राधाकृष्णन की अध्यक्षता में स्थापित विश्वविद्यालय शिक्षा आयोग ने यह रिपोर्ट की थी कि देश की शिक्षा प्रणाली और देश की शिक्षा सम्बन्धी आवश्यकताओं में बहुत असमानता विद्यमान है।

शिक्षाशास्त्रियों ने देश की शिक्षा प्रणाली में सुधार करने की आवश्यकता अनुभव की और नए तरीकों की सोच शुरू कर दी। अमेरिका के लैण्ड ग्रांट कालेजों और विश्वविद्यालयों में उन्हें उद्देश्यपूर्ण शिक्षा प्रदान करने वाली सफल और आजमाई हुई शिक्षा-प्रणाली की मालक मिली। अमेरिका के लैण्ड ग्रांट कालेजों में छात्रों को जिस ढंग पर शिक्षा प्रदान की जाती है, वह भारत की आवश्यकता पूर्ति के लिए विलकुल उपयुक्त प्रतीत हुआ। भारत की आवश्यकता थी ऐसे छात्रों का दल तैयार करना, जो देश की ग्रामीण अर्थ-व्यवस्था को सुदृढ़ कर सकें। अमेरिका के जीवन में इन संस्थाओं ने अत्यधिक महत्वपूर्ण स्थान प्राप्त कर लिया है, क्योंकि ये शिक्षा-संस्थाएँ अपने क्षेत्र की जनता से सदैव निकट सम्पर्क कायम रखती हैं। इन कृषि शिक्षा संस्थाओं ने अमेरिका की कृषि-व्यवस्था में पुराने उपकरणों और विधियों के स्थान पर आधुनिकतम वैज्ञानिक उपकरण और विधियों का समावेश कराने में महत्वपूर्ण योग दिया है। लैण्ड ग्रांट कालेजों में होने वाले

अनुसन्धान

3rd August 1964

Mr. N. Hemrem,
Secretary, G.E.L. Church at Purnapani,
Rourkela 2.

Dear Mr. Hemrem,

I received your letter yesterday and
I sent you the following telegram :

" COME AS PLANNED ". I hope you have got it.
I shall try to come to Chakradharpur with the Jeep so
that you may not have any difficulty in coming to this
place even if your train is late and buses be not avail-
able. If I cannot go, the driver will go alone with
the vehicle. Please look for him at the gate of the CKP.
Railway station. The Jeep will be there at 8:30 p.m. as
your train arrives there at 20 : 52 hrs.

I shall be expecting you here at about
9:30 p.m. on Saturday, the 4th. inst. I have to go to
Khunti on the 5th. by evening in order to attend a mee-
ting at Dr. M. Bage's house and on the 6th. I shall go
to Ranchi to attend another meeting of the Board of Theol.
Education. I am planning to go to Khunti and Ranchi by
bus. So, we may leave Chaibassa together on the 5th. after
Church Service.

Can Rev. P.C. Minz come with you ?
I have certain matters to talk with him if he can come.
He must not cancel any important programme just for this.
Personally I would like to see him and talk with him
as early as possible. I am not writing to him today .
Please inform him, if you can.

With best wishes,

Yours Sincerely,

DIRECTOR.

P.S. I am writing a note to
Rev. Minz because you may not have
time to go to him when you will
be in a hurry to catch the train.

Rourkela-1.
12-6-62

Rev. J. Soy.

माय को याद - योन्तु सलाम!

धर्मशोधक - एक तेजगु लड़की जिसकी
उम्र १६ वर्ष की है जिसने मलाली से
वार १०-६-६२ से पवित्र बलिदान दे
करा अपना भी।

नाम Miss Christ Graceamma
पुराना नाम " Choppala Venkyamma
मां - बाप का नाम Samuel + Maryam.
बलिदान को जगह - बंडामुन्डा।

गतमाह के M.O. रूप
 अनुसार येरा तरखनाह
 मुझे सीधे मिलनी
 चाहिये पर अरु
 तक नहीं मिली है
 का Rev. C.R. Singh
 से भेजी गयी है।

आपका निवेदन

 D. Singh

पोस्ट कार्ड

POST CARD

जवाबी
REPLY

केवल पता
ADDRESS ONLY



Rev. J. Soy.

G. L. L. Church C.R.P.

P. O. Chakra Chapar

D. A. Singh Bharn.

7th July, 1962

Rev. P. C. Meier & L. H.
S. E. L. Church
Rouhela

Dear Pastor Meier,

I am anxious to know about the present position of the Lutheran congregations in Rouhela and its surroundings. I know how much it means to you to be in charge of disturbed congregations & people. I pray that God may continually guide and direct you. It appears that the K.S. is not going to meet soon in which case the conditions at Rouhela will have to remain unresolved and unattended. Is Rev. And looking after the Purnapuri congregation & who have been co-opted as members of the Mandli Panch, when, and how?

On Thursday we were looking for you at C.H.P. I am planning to pay a visit to Rouhela in near future.

With best wishes, Yours sincerely
J. B. George

Chaikassa
25-6-62

Rev P.C. Minz
Roukela

Dear Rev. Minz,

I have just received a big bunch of papers in two sets, one addressed to the Chairman JmB & the other to me. I shall go through them carefully and then write to you again. Meanwhile please let me know: (1) Do you want me to put the matter before the Board (JmB) & in any case I shall write to the Chairman. Do you want to write to the KSS since it has already taken up the matter? What is the advice of Rev CB Aind, Adhyaksh? (2) From when Rev. C.C. Minz is conducting service at Purnapuri?

In future please send me your carbon copy because I find it difficult to read the pencil copy.

With Christian greetings to you and your Congregation.

Yours Sincerely
J. A. Lige

अमेरिका के एक समृद्ध कृषि-क्षेत्र के सम्बन्ध में एक तीन मिनट की लगातार फिल्म दिखायी जाएगी, जिसमें चित्रों की सहायता से यह दिखाया जाएगा कि अणुशक्ति ने कृषि में कितना महत्वपूर्ण योग दिया है। इससे दर्शक को इस बात का आभास मिल जाएगा कि कृषि-प्रणालियों में क्रान्ति लाने के लिए अणुशक्ति में अपार कामताएं विद्यमान हैं।

साइनडोम नामक नवीनतम प्रक्रिया के द्वारा यह फिल्म १८० अंश के पर्दे पर दिखायी जाएगी। इस प्रक्रिया के द्वारा दर्शक लोग मध्य में बैठे हो कर चित्रों का अवलोकन करते हैं।

अणुओं से शक्ति का प्रादुर्भाव

वहाँ ऐसे चौखटे होंगे जिनसे यह पता चल सकेगा कि किस प्रकार अणुओं के विखण्डन से शक्ति का प्रादुर्भाव होता है और किस प्रकार आइसोटोपों की उत्पत्ति होती है। एक अलग चौखटे में ऐसे आइसोटोपों का प्रदर्शन किया जाएगा, जिनका अधिकतर कृषि सम्बन्धी अनुसन्धान कार्यों में प्रयोग होता है।

द्विगा-प्रतिक्रियावाहक

द्विगा-प्रतिक्रियावाहक की क्रिया-विधि का विस्तार के साथ दिग्दर्शन कराने के उद्देश्य से प्रदर्शनी में उसका एक ऐसा मॉडल रखा जाएगा, जिसके पुर्जे-पुर्जे अलग होंगे। इसके अलावा, मेले की अवधि के दौरान प्रशिक्षण और अनुसन्धान के उद्देश्य से निर्मित एक पूरे आकार का द्विगा-प्रतिक्रियावाहक संचालित होगा। इसके द्वारा अल्प-जीवी रेडियो-आइसोटोपों का उत्पादन किया जाएगा और अनुसन्धान सम्बन्धी ऐसी सहायरी योजनाएं कार्यान्वित की जाएंगी, जिनमें अमेरिकी विशेषज्ञ और नई दिल्ली के भारतीय कृषि-अनुसन्धान प्रतिष्ठान के वैज्ञानिक एक साथ मिल कर कार्य करेंगे।

‘ग्लव वाक्स’

जी.डी. एल चर्च, न्यू टाउनसीप (पुरनापानी) रौरकेला

का सधारण रिपोर्ट

स्थान :- स्थान नागरी रौरकेला के अन्तर्गत
Sector - 18 में जहाँ विद्यमान पुरनापानी
गाँव का गिरजाघर था, ठीक उसी खंडहर
पर 1959 में गिरजा आराधना निमित्त
एक भोपड़ी बनाया गया है।

पाश्चात की भाँकी : (a) विश्वास सूत्रों से
दृढ़ता जाता है कि स्थान टाउनसीप के लिये
गाँव उठाये जाने के पूर्व ही तत्कालीन
पुरनापानी मण्डली में 1956 से नार्थ जैन
का प्रकोप पड़ चुका था।

(b) 1958 में पुरनापानी गाँव उठा दिया
गया। 15-4-58 को गिरजाघर भी ठा
दिया गया। मण्डली तहलर बिहलर हो गयी।
कुछ लोग मीरपानी कोलीनी चले गये, कुछ
H.S.L. में नौकरी कर कम्पनी कार्टरी में रहने
लगे और बहुत थोड़े निजि भोपड़ी बना
कर रहने लगे। उस वक़्त लूथेरन मसीहियों
की आत्मिक भोजन पाने में अत्यन्त ही
कठिनाई होने लगी।

(c) सौभाग्यवश इसी बीच करिडदल
श्री पी. सी. मिंज चर्च कोरिडल की ओर से
निपुण पाकर तहलर बिहलर लोगों तथा
कम्पनी कर्मचारी लूथेरन मसीहियों के आत्मिक
सुख के लिये 17-5-58 को रौरकेला
आये। श्रीसर्गामी साथ लूथेरन मसीहियों की
रखोज तथा संभलन किये। वे उन्हीं के कार्टरी
में रविवार आराधना करने लगे।

(d) 1959 में माई बहनो ने आपसी सहयोग
तथा निजि बन्दे से गिरजा आराधना के
लिये उपरोक्त स्थान पर एक भोपड़ी बनायी

वासी जो अब भी उसी हालत में है। धीरे धीरे
वर्धेरन मसीहियों की संख्या बढ़ने लगी और
तत्कालीन माई बहनों ने उचित समझ कर
॥-१०-५५ को माउली पंच की नीव डाली
जिसमें निम्नलिखित कार्यकर्ता चुने गये।

सभापति - प्रचारक माकुब बड़ा
सेक्रेटरी - श्री सबन हेमरोम
खजान्ची - " इम्मनुएल खलारवो।

ये सभी कार्यकर्ता स्थानीय (displaced) जन
थे। उन्होंने माउली में खेन्दाचारी शासन
करने लगे। माउली आमतौर पर कभी भी
सेन्ट्रलाइज नहीं किये कारण आदिवासी
उन्नति समाज हेतु अथवा निजि आवश्यकता
ओं में खर्च करते थे।

वर्तमान स्थिति :- ता. १२-६-६० को

माउली ने उचित समझ कर Rev. C.B. Aind
के सभापतित्व में फिर माउली पंचों की चुनाव
कुत्र की। कुल ९ पंच ^{पंचों की कुल पंच की} ~~कुत्र की~~ जिसमें ५
(पॉन्च) स्थानीय (displaced) जन थे। निम्न जन
कार्यकर्ता (office bearers) चुने गये।

सभापति - प्रचारक माकुब बड़ा (displaced)
सेक्रेटरी - नवानि-एल हेमरोम
खजान्ची - दाउद बड़ा - (displaced)

माउली में फूट का आरम्भ :- स्थानीय

(displaced) जनों के दो अगुवे श्री माकुब
खलारवो और श्री सबन हेमरोम आदिवासी
उन्नति समाज के राजनैतिक नेता श्री डेविड
मुंजनी के अन्धविश्वासी समर्थक हो गये।
वे सदा माउली को आदिवासी उन्नति समाज
की ओर धसीटना चाहते थे। १६-८-६० को
उन्होंने उस संस्था की ओर से माउली खजाने
से Rs ५०/- माँगा सम्भवतः गिंजी घर से तथा

(3)

उनके घर द्वारा सम्बन्धी हाईकोर्ट में चलते हुए मुकदमा के खर्च के लिये। इससे पहले भी उन्होंने ^{कई बार} बीन बार कर्ज रूप में रुपया लिया था पर वादा कर भी न रुपया ही वापस किया न रुपयो ही का हिसाब ही दिये। अतः सब मण्डली पंचों ने Rs 50/- देने से इन्कार कर दिया। इसे नाराज हो कर ता को उन्होंने Rev. P.C. Minz को लिखित धमकी दी कि यदि उन्हें रुपया न दिया जायगा तो वे हर तरह का मण्डली देने आदि देना बन्द कर देंगे।

आदिवासी उन्नति समाज के सुविख्यात नेता श्री डेविड मुंजनी 1957 से ही यहाँ अपना Headquarters रख कर काम कर रहे थे। उन्होंने इस अवसर का नजायज फायदा उठाया। वह स्थानीय (displaced) वर्धेरन मसीहियों के बीच बलीहा अधिकारियों तथा मण्डली पंचों के प्रति तरह 2 की झूठी, जाद्वार हीन विषैली बातों को फैला कर स्थानीय displaced भाई बहनों के हृदय में मतफूट एवं अविश्वास का बीज बोना शुरू किया। इस तरह फूट की आगुन धीरे 2 बढ़ने लगी।

ता 1-10-61 को लाइब्रेरी कमरे में बैठक थी। श्री मुंजनी सर्व श्री धाकुब खलरवो तथा इलिथाजर कच्छप अंगलिकन प्रचारक के साथ बिना इजाजत लिये मिटिंग में प्रवेश किये। श्री मुंजनी सजेन्डा के बाहर गिरजा घर तथा कक्करपान के विषय बाहस करना आरम्भ कर दिया और धमकी देते हुए कहे कि Rev. C. B. Minz & P.C. Minz और वर्तमान मण्डली पंच को गिरजा घर और कक्करपान के विषय H.S.L. अधिकारियों से कारबार करने का कोई अधिकार नहीं है। श्री डेविड मुंजनी ^{ने} दावा करते हुए कहे

कि 1968 के आम चुनाव में अगर उसको (मुंजनी) को M.P. निर्वाचित कराया जाय तो वह दिल्ली parliament में लड़ कर गिर्जा घर तथा कब्र-स्थान का मामला तय कर वेगा। इसके जवाब में Rev. P.C. Minz ने उन्हें साफ बतलाया कि यह राजनैतिक मामला है अतएव किसी भी हालत में मदद देने को मण्डली लाचार है। इस जवाब से श्री मुंजनी अत्यन्त नाराज हो गये।

ता. 2-10-61 सोमवार शाम को श्री कुंवार हॉर^{प्रतीन} के घर में कुछ स्थानीय displaced माईबहनों की बैठक-किये। वे तरह-2 की झूठी बातों से लोगों का कान भरने लगे। उन्होंने बताया कि Rev. J. J. P. Tigga, Rev. C.B. Aind, Rev. P.C. Minz स्थानीय लोगों की बिना बुजाजत^{पाये} अपनी अधिकारी District Officer से मिल कर गिर्जा घर और कब्रस्थान के विषय कारबार करते हैं। Rev. J. J. P. Tigga और Shri Nihal Hero गिर्जा घर और कब्रस्थान का compensation लेने वाले के रूप में उन्होंने बान्धा डाली जिससे न ले सकें। Rev. जे. जे. पी. तिग्गा, पाद्री आइन्द, पाद्री पी. सी. मिंजा और वर्तमान मण्डली पंच गिर्जा घर और कब्र को नुक़्ती करने वाले हैं। श्री मुंजनी ने यह भी दावा किया वे इन बातों का लिखित प्रमाण कबहूरी में देखा है। उन्होंने कहा कि स्थानीय displaced लोगों को बहरी स्थावरन मसीहियों से अलग हो जाना चाहिये। उन्हें अपना निजि अलग मण्डली पंच बनाना^{गलिये}। उसे बैठकी कर वर्तमान मण्डली पंच को रद्द (condemn) करना चाहिये नहीं तो वे स्थानीय लोगों का डक आर देंगे। उन्होंने यह भी विश्वास दिखाया कि वे Rev. Joel Lakha प्रमुखवादी को लिखेंगे जो उनके लिखे भगल पाद्री और उचारके भंडा देंगे। इन बातों को कार्यान्वित करने के लिये 6-10-61^{आम} को खास आम सभा बुलाई^ग। निम्नलिखित

कुछ displaced persons को आम सभा बुलाई

मिटिंग का नोटिफा मण्डली के निम्नलिखित कार्यकर्ताओं को दी गयी थी।

(i) Rev. P.C. Minz, (ii) Shri P. Dango, Secretary G.E.L. Church Rourkela, (iii) Shri N. Hemrom Secretary G.E.L. Church New Township (Purnapani) & (iv) Shri David Bera Treasurer, G.E.L.C. New Township (Purnapani)

इस बात के घोषणानुसार 6-10-61 शुक्रवार शाम को कुछ स्थानीय (displaced) एम्प्लॉयमेंट माई बहनों की बैठकी श्री डेविड मुंजनी के समापनत्व में हुई। मिटिंग में अटूटीकृत नवालियों की संख्या उजादा थी। उपरोक्त माई घोषारोपण के आधार पर उसने खुद Rev. J. J. P. Tiguvu, Director Joint Mission Board, Rev. C.B. And अध्यक्ष उडिहा अंचल, Rev. P.C. Minz, Chairman G.E.L. Church Rourkela तथा वर्तमान मण्डली पंच पर आविश्वास का प्रस्ताव लाया तथा उसने निम्न लिखित लोगों को अलग मण्डली पंच बनाया (स्थानीय नहीं है)।

समापति - श्री डेविड मुंजनी
 सफेदरी - " सबन हेमरोम
 सहायक सफेदरी - " डेविड ओडेया (जो मण्डली लडा है खजांची में है)

सदस्य - श्री सर्व श्री मुंवार हीरा, यामुब रवल रवी, आनन्दमसीर रवल रवी

ता: 8-10-61 से ही वे अपने कैसले को कार्यवाहक करने लगे। वे गिर्जा आराधना में बराबर रुकावट डालने लगे। गिर्जा दान भी जवरदस्त दीनना शुरू किया। कई मध्यस्थों के द्वारा उनसे समझौता करने का प्रयास किया गया पर सब व्यर्थ रहा। लाचार बंधू मण्डली पंच ने 22-10-61 को एक आम सभा बुला

कर श्री डेविड मुंजनी और उसके मण्डली पंच को रद्द किया गया जिसका resolution मण्डलीसा के उच्च सम्बन्धित अफसरों को भी भेजा गया।

Rev. P.C. Munz 9-11-61 से study leave में चले गये। उनकी अनुपस्थिति में मुंजनी दल वालों ने अधिकाधिक फायदा उठाया/बाँटा। वे मण्डली द्वारा ठहराये हुए भाईयों को आराधना अगुवाई करने से रोकने लगे। उन्हें ने वर्तमान खजाने की दाउद बड़ा को मण्डली दल handover करने के लिये नोटिस भी दिये। 14-1-62 को वे आराधना में विशेष रूप से बाधा डाले। भाईयों को ठेला पत्थर लेकर आरने के लिये डेड़ाये। 21-1-62 को Rev. C.B. Aind, जो Rev. P.C. Munz के study leave में यहां के in charge थे, यहां प्रभुमोजानुष्ठान किये। मुंजनी अनुगाभियां ने किसी तरह का सहयोग नहीं दिया। यहां तक कि वेदी सपड़ा भी नहीं दिये। 4-2-62 Mr. W. Thiel Chairman Board of management J.E.L. Church Properties श्री P.D. कन्दुलना उसे संस्था के सेक्रेटरी तथा Rev. J. J. P. Tivuv के साथ भाये। मुंजनी दल ने उनके नाम में किसी तरह सहयोग न दिया बरण निरार्थक मालोचनाओं से उसका कल्याण समझ नष्ट किया। 17-12-62 को प्रचारक थानुब बड़ा अलग आकर समापतिपद से स्तीफा भर दिये। ^{उत्तरी} ^{प्रचारक} ^{जरा} ^{पर} अगले मण्डली तमने दिये श्री S. J. Hovro Acting Chairman मनोनित हुए। 17-3-62 को श्री David Munz श्री एम. पी. निर्वाचित होने के बाद रौरकेला

(क)

पधारें। उसने उसी 17-3-62 शाम को मुंजनी दल तथा आस पास के सभी नाथि ज्ञान समर्थक मण्डली आगुवों को एक सम्मेलित बैठकी की। तब 18-3-62 को देखा गया कि सेक्टर 4 में गिर्जा करने वाले नाथि ज्ञान, मरिपानी, प्रधानपती आदि मण्डली के भाई बहन भी टाउनसीप (पुरनापानी) में गिर्जा आराधना में भाग लिया। आराधना की अगुवाई श्री C. A. Kindo श्री P. P. P. के कीर्तिदत्त किये। हम शांति संग के साथ से बाधा नहीं डाले। गिर्जा के बाद श्री मुंजनी ने एक मिटिंग भी की और अपने आप को पुनः यहां के मण्डली का Chairman घोषित किया। उन्होंने भी भाई बहनों को बिहवास दिलाते हुए बतलाया कि वे अब M.P. हो गये हैं, Parliament में तथा राष्ट्रपति तथा प्रधान मंत्री से फैसला कर यहां लाखों लाख का गिर्जा घर तथा उनके लिए घर बनवा देंगे। Displaced जन इस मुलभावना से और खुश होकर उसके कथन-नुसार North Zone के समर्थक बन गये। उसी 18-3-62 से Sector-4 में गिर्जा करने वाले (Shri Julius Turkey Group) और सेला टाउनसीप (पुरनापानी) मण्डली में मिल गये। मरिपानी वाले भी 22-4-62 तक लगातार यहीं गिर्जा आते थे।

24-3-62 को श्री Sabam Homram ने लिखित घोषणा दी कि 25-3-62 से आगे Candidate C A Kindo ही यहां गिर्जा आराधना की अगुवाई करेंगे।

(8)

Acting Chairman श्री S. J. H. H. H.
तथा Secretary श्री N. H. H. H. ने
इसका लिखित विरोध किया और उनको
एक साथ बैठ कर आपस में मेल मिलाप
करने के लिये अज्ञात किसी पर सब व्यर्थ
ही हुआ। ता: 1-4-62 को उन्होंने पुनः
किया कि Rev John कुजर 15-4-62
से 22-4-62 तक रोककैला में रह कर
North Zone स्थापित करेंगे। 15-3-62
को वे प्रभुभाऊ के साथ पुरनापानी
मण्डली में इसका उद्घाटन करेंगे।
ता: 4-62 को Acting Chairman
तथा Secretary ने इन सब दलबन्दी
का रद्द ^{पद} ^{पद} चार प्रश्न डाल कर पूछा।
Sec-4 ने सुप्रसिद्ध North Zone
मण्डली श्री Julius ~~King~~ Turkey
ने संक्षेप में शब्दों में जवाब दिया जिसे
को संशय था कि वे पुरनापानी मण्डली
को राटोकिरेरा (North Zone) इलाका
का भाग बना रहे हैं। उन्होंने भी कहा कि
को भार पीट करने की धमकी दी तथा भूरी
गालियाँ भी दीं।

अवस्था नियन्त्रण से बाहर हो गयी।
उसी बीच Rev P. C. Minu Study House
से 7-4-62 को लीटें। वे 12-4-62 को
अध्यक्ष Rev C. B. Mind के आदेशानुसार
North Zone के मण्डली श्री Julius Turkey
से सम्पर्क करते हैं कि मण्डली में किसी
तरह का गड़बड़ी न हो पर उनकी भी बात
नहीं रखी गयी। अन्तिम भाग की अत्यन्त सम्भावना
थी अतएव मण्डली पंच ने स्थानीय पुलिस की
सुरक्षा मांगी। ईश्वर की दयवत्ता है कि पुलिस
अधिकारियों ने तत्काल सुरक्षा प्रदान की।

Contd.

(9)

15-4-62 को जैसा 1-4-62 और 8-4-62 को पुकार
हुआ था Rev. John Kujur Ranchi से नहीं आये
पर Rev. C.B. EKKa उप-अध्यक्ष उडुगु अंचल-
तथा रतौविरकैरा के Rev. C.C. Minz ^{पुलापानी} आया। गिर्जा
आराधना के पूर्व स्वागति S. S. Sri R.M. Sam-
ant Rai ने तीनों पाद्रीयों से पूछताछ की।
Sri R.M. Samant Rai S.S. Police
ने कहा कि गिर्जा घर में बराबर भगड़ा तकरार
होते रहता है अतएव इसको बन्द कर देना
ही अच्छा है। इसके जवाब में Rev. C.B. EKKa
ने तत्क्षण कहा कि गिर्जा घर को बन्द कर
दीजिए। किन्तु भगड़ा बन्द हो जाय। यह सुनकर
Rev. C.C. Minz ने S.S. Police से कहा कि वि-
शय, यह पाद्री होकर गिर्जा घर को बन्द करने
को कहता है। किन्तु मैं इसमें राजी नहीं हूँ
क्योंकि हमारे लोगों को आभिक गौजत पात्रे में
काठनाईया होगी (New township)

पुलिस अधिकारियों के होते हुए भी North
zone वालों ने यथा सम्भाव शांति गंग करने का
प्रयास किया। हमलोगों ने शांति गंग से व्यक्ति
रखने के लिए अन्याय सह लिया जो Rev. C.C.
Minz और Rev. C.B. EKKa को गिर्जा आराधना
कले में दस्तावेज नहीं किया। उसी 15-4-62
को ^{पाद्री की श्री. मिंज} श्री. मिंज ने पुकार किया कि—
(a) मलाशुक्रवार को गिर्जा 8AM से होगा।
(b) Rev. John Kujur नहीं किसी कारण वश
नहीं पहुँचे सम्भाव है वे मलाशुक्रवार तक
पहुँच जावेंगे।

(c) स्थानीय कोमहि के Chairman Sri
David Muzhi दिल्ली से लिखे हैं कि
वे शीघ्र ही Purnapurn गिर्जा घर और कल-
स्वात के विषय राष्ट्रपति के तथा प्रधान
मंत्री से मिलकर मामले को शीघ्र तय करेंगे।

20.4.62 मूलाश्रुतवार हमलोग Rev. P.C. Mainz की अगुवाई में गिराश्रधाना तथा प्रभुभोज में शामिल हो सके। उन्होंने शुरु से अन्त तक रुकावट डालने का प्रयत्न किया, यहाँ तक कि श्री याकुब खलखो गिराश्रधाना के आरम्भ से अन्त तक वेदी पर खड़ा रहा। श्री सबन हेमरेम ने पदों P.C. Mainz को लिखित धमकी भी दिया। श्री याकुब खलखो वेदी पर उठे रहे अतएव Rev. P.C. Mainz को बगल से लाए धाना तथा प्रभुभोज अनुष्ठान करना पड़ा। उसदिन Rev. C.C. Mainz भी हाजिर थे। वे आश्रधाना के आरम्भ में गिराश्रधाना में प्रवेश किये थे पर Rev. P.C. Mainz को जि वेदी पर देखकर वापस लौट गए। अमाश्रुतवार को Nork Zone वाले हमलोगों के गिराश्रधाना समाप्त करने के बाद Rev. C.C. Mainz की अगुवाई में अलग आश्रधाना तथा प्रभुभोज अनुष्ठान किए।

22.4.62 पुनुरुत्थान गौर का कब्र गिराश्रधाना दोनों दल की ओर से एक स्वागतवा एक ही समय में निश्चित था। ~~इस निमित्त~~ अतएव शांति भंग होने की सम्भावना थी। Superintendent of Police Rowkela ने इस जटिल समस्या को हल करने के लिए एक दो व्यक्ति कमिशन नियुक्त किया। जिसमें An Koriam John Chief Engineer (Planning) ~~का~~ President Rowkela Christian Council और Rev. P.M. Khalkho S.P. Church Rowkela थे। कमिशन ने दोनों दल से दो प्रतिनिधि दोनों पक्षों Rev. P.C. Mainz और Rev. C.C. Mainz को विचारार्थ 21.4.62 रात को बुलाया। Nork Zone के स्वामीय ~~के~~ सुपरिनेन्ता श्री जुलियुस तिक्की ने कमिशन के

सामने चार्च कोरिल पर इजाम लगते हुए कहा कि Rev. P.C. Minz को राउकला में नियुक्ति गजान है। Rowkela एक स्थापित मण्डली है जो Rev. P.C. Minz का अंग है। अतएव Rev. P.C. Minz जो Joint Mission Board का कार्य-चारी है यहां अनधिकार रूप में काम कर रहा है। इस बात को उन्होंने Rev. J. Laksh प्रमुख उद्देश्य के लिखित अपील ^(मंड) 1961 के पत्र से द्वारा प्रमाणित करना चाहा। अन्त में शान्ति रक्षा हेतु Commission की राय अनुसार कुछ तथा रिजोलूशन द्वारा का समय अलग निश्चित किए। दोनों देते इस बात पर सहमत हुए कि Rev. C.B. Minz अथवा Orissa अंचल का फैसला ही इस मामले का जायज माना जाएगा। इस स्वीकृति के अनुसार Commission ने Rev. C.B. Minz को पुनर्निर्धारित किया कि वे उचित फैसला समय पर दे सकें।

ता. 29.4.62 को Rev. P.C. Minz आराधना की अगुवाई करने वाले थे। पर नोर्थ जोन वाले निर्धारित समय पूर्व ही आराधना आरम्भ कर दिए। आराधना की अगुवाई मीरपाटी के Candidate C.A. Kundo किया। शान्ति रक्षा का स्थान पर हमला आराधना में नहीं बाधा ही डाले न उनके समान अलग रिजोलूशन आराधना किए।

David Bara
30-4-62

Atcharam
30/4/62

Treasurer

Secretary
30/4/62

For and behalf of G.E.L. Church
Rowkela New Town Ship (Purnapam)

Forwarded for information and necessary action.

P.T.O.

Rev. P. Minz

1.5.62

Distribution:-

1. The Director, J. M. B.
2. The Adhyaksh, ~~Durga~~ Anchal.
3. The S. P., Rautela.
4. The estate officer, Rautela.
5. The President, R. C. Council.

(28)

As from Rly Colony,
Rourkela.
14.6.62.

The Chairman,
Joint Mission Board, Ranchi.

Dear sir,

With reference to your letter dt 29.5.62 I have already given you in short the right cause why I sought the protection of the Police in Purnapani. In connection with the same I met you personally on 13.6.62 and told you.

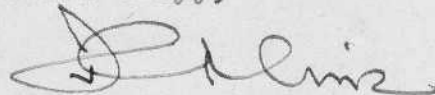
From our discussion I learnt that I have done blunder by not abiding by the Pratigya Patr. Now I think it is quite useless to give you some more reasons to defend me. I felt that the Pratigya Patr is only for me to follow it.

The congregation which was left shepherdless which I organised and taken care for the last four years peacefully now claimed by Rev. C.C. Minz. As soon as I resumed my duty on 8.4.62 ~~imax~~ I was reported by the Office bearers of the Mandli Punch Purnapani that there would be breach of peace on 15.4.62. I reported this to nearest higher authority Rev. C.B. Aind and according to his suggestion I personally ~~max~~ verified it. And I also learnt ~~that~~ there would be breach of peace definitely on 15.4.62. It was announced in Purnapani on 8.4.62 that Rev. C.C. Minz Ilaka Chairman Ratobirkeria and Rev. John Kujur Ranchi were coming to Rourkela on 14.4.62 and they would conduct services in Purnapani on 15th, 20th and 22th of April 62. What does Pratigya Patr say about the jurisdiction?

I discussed it again with the members of the Mandli Panches and we all agreed on 14th April to seek the protection of the Police to maintain peace. I was authorised by the Mandli Punch to approach the S.P. personally and request his protection. I did it accordingly on 14.4.62.

When I have already made blunder by seeking the protection of the Police to maintain peace you are the highest authority to take action immediately. I am anxiously waiting for your action taken against me.

Yours truly,



Copy to 1) The Director, J.M.B.
2) Rev. C.B. Aind, Adhyaksh,
Orissa Anchal.

Chairman,
G.E.L. Church,
Rourkela.

N.B. My letter addressed to the Chairman. J. on. B. dt 11.6.62 is not given to him. He told me that he knew all about this. He might have been told by Rev. J. Lalga. With our discussion I learnt that Rev. Lalga is not impartial.


20.6.62

The Chairman
Joint Mission Board.

Rly. Colony,
Rowkela-1,
11.6.62.

Dear Sir

With reference to your letter of
27.5.62 I would like to give you
the following reasons why I sought
the protection of Police on 15.4.62.

I resumed my duty on April
8.62. As soon as I joined my duty
I was reported by the Secretary
Lurnapani (of the G. E. L. Church
~~Lurnapani~~). On receipt of this report I
approach the nearest higher authori-
ties Rev. C. B. Aind at Rajgungpur.
He rightly suggested me to meet
the following leaders of the M. Zone.
Shri Kuwar Hota, Sector 17, Cand.
C. A. Kundo Jhirpani and Shri J. Tirkey
Sector 4. I met J. Tirkey related
to Rev. J. Lakra, Ranchi. On 12.4.62
at his residence. His wife was here since
1957 in sector 18 ^{quite} nearer to our
Lurnapani Church but she never
joined attended Lurnapani Church.
He got his employment in the steel
plant in 1960. He got his quarters
in sector 4, not far from our church.
He also never attended our church
in Lurnapani (Sector 18). Instead
of that he attended Church
services in Jhirpani out of township.
Since ^{probably} 1960 he opened his quarters
to be held Church services there.
Cand. C. A. Kundo, Cam Jhirpani
came to conduct services there.
Through During my study leave
David Munjri after becoming M.P.

(2)

Came over to Rurupani and compelled
the few misplaced persons who are
blind followers to him ~~and~~ to go to
denounce my the work of J. M. B. and
my right appointment from the C.C.
at Rourkela. He further advised
them to join N. Zone under the
chairmanship of Rev. C. C. Miao
Ratobarkere Dabbe.

Rev. J. Labra, Bramish Achyotik
who has been seeking opportunity
to uproot me since 1961 got the
ready chance. He came over to
Rourkela on March 12, 1961 to
speak on a united Christian
service arranged by the Rourkela
Christian Council, poisoned his
followers. Unfortunately, Shri Samuel
Toppo met him at Mahulpali
on 12.3.61 (in whose house I am
putting up). He tried to mislead

stated by
Samuel Toppo

him, saying, "the Rourkela is
under the jurisdiction of Rev. C. C.
Miao. It is not the jurisdiction of
Rev. P. C. Miao. His position here
is like a water jar which rolls
down either and the other." When
he said this to Samuel Toppo what
more he might have said to
his followers to uproot me.

Soon after he left Rourkela
the reaction of his foolishness
appeared on Easter morning service.
Formally the shipyard people join
our services in sector 18. (in 59, 60)
Though they were only informed
of the church service by me they

purposely came late. As soon as the Easter
was over they under the leadership
of Shri J. Tirkey, Sector 4 sent a
complain against me to Rev. J. Lalra.
In reply to this Rev. J. Lalra wrote
a letter to Rev. C.M. Arind on April 27,
1961 asking him to make investigation to
this. He wrote, "I do not understand
the position of Rev. Prabhu Charan
Ming with regard to the congregation.
So far I know that Rev. C.C. Ming
was minister to the spiritual needs
of these congregations."

According to the suggestion of David
Mungui the people of Purnapuri
approached Jhipur people and Shri
J. Tirkey Sector 4. He attended the
first church service on 18.3.62 in
Purnapuri. On 18.3.62. He was
welcomed by David Mungui. Since
that day he began ^{to show} his presence
activities there in the Purnapuri
congregation. He showed the same
letter to written by Rev. J. Lalra
to illustrate people of Purnapuri,
to the Police and to the
Commission too. On 13.5.62, Rev. J. Lalra
has written that my appointment
in Purnapuri is illegal. When
then he produced this letter
before the commission on May 13,
62. Rev. J. Lalra kept quiet.
He did not try to make it
clear.

From Shri J. Tirkey on 12.4.62
I learnt that there would be break

of peace definitely for which something must be done. Getting the first hand information from the leader of N.Z. Shi J. Tuirley I consulted this matter with the following members of Purra Sami manille ^{Purra} S.J. Horo Acting Chairmen, N. Hemron, Secretary and D. Bara Treasurer ^{the secretary}. We all ~~unanimously~~ agreed to seek the protection of the police. On April 14, I along with Mr. P. Deep sey. approached the SP. at his residence and submitted our application to for his help. There would have much bloodshed and church ^{would} have been locked up for good by the police if I had not sought the protection of the police. All Christians in the township and non Christians too will witness to that Shi J. Tuirley under the leadership of Shi J. Tuirley the N.Z. people had planned to kill me the Acting Chairman, the secretary and me.

Purra Sami church was built before I joined Rouskela which I rebuilt. I looked after this congregation peacefully for the last four years. Now why Rev. J. J. J. says that he does not understand my position here and sends his party pastor to claim it. It was duly announced in Purra Sami on 1/4. 62 and 8.4.62 that Rev. J. J. J. and John.

Kujar will conduct Church service on 15.5.62. They called them with a view that they would ^(include) Rurnapani in the N. 2. It was their challenge for which they invited the people of all nearby congregations.

SW 15.4.62
Now I fail to do not understand why those Pastors who got the Pratigya Patri before me did not abide by it. In fact Rev. C.C. Ming and Rev. C.R. Ekka instead of Rev. John Kujar Rameki came on 15.5.62. They did not include me to conduct service on 15.5.62. ~~though~~ I was present then.

Rev. C.C. Ming conducted services separately on 20.5.62 and 22.5.62 in Rurnapani. It seems that the Pratigya Patri is only for me to obey to not others.

Rev. J. Lalra too did not read it out in Rurnapani when he came here as the chairman of the common session. He mentioned only. The people of his party got this Pratigya Patri said that it is published by me not by the persons mentioned therein.

From the congregations under N. 2 I enquired that this Pratigya Patri is

not read out in the congregations.

Rev C.B. And asked me to reserve the seats in the Hindustan Hotel for the Commission members. I did it accordingly. I along with Rev. C.B. And received the Mr. P.D. Panna a commission member at the fly station. But to great surprise we saw that Mr. Panna along with Mr. C.T. Panna Ranchi ~~with~~ went with Mr. J. Tutty in Sector 4 instead of staying in Hindustan Hotel.

Rev. J. Lalra also who came here in the morning after the service was over he went with Mr. J. Tutty along with Messrs P.D. Panna and C.T. Panna and took his lunch with them ^{before he gave his decision.} All these show that they came here as a N-2 party. He was never neutral. The decision was given only at about 5 P.M.

I do hope all these facts will suffice to understand the situation in Purnepani.

Copy to

1. The Director J.M.B.
2. ~~Rev. C.B. And, Dinesh Anand.~~

Yours truly,

P. P. Limz

To,
The Director,
Joint Mission Board, G.E.L. Church,
Chotanagpur & Assam.

/Through Proper Channel/

Sub :- General Report of G.E.L.Church New Township
(Purnapani)(Rourkela.)

Sir,

Furnished below please find the general report of our Church to be put up for discussion in the Kendriya Salahkarini Sabha to be held w.e.f. 1st May, 1962.

GENERAL REPORT G.E.L. CHURCH NEW TOWNSHIP (PURNAPANI)

Place:-

A hut was erected in the year 1959 for the purpose of worship at Sector-18 of the New Steel Township just on the ruins of demolished church of the then village Purnapani.

- Past Facts:
- (a) It has been confirmed that the origine of the present most unfortunate tension in Purnapani Church first precepatated in the year 1956 when North Zone casted blow on this Church.
 - (b) In the year 1958, village Purnapani was acquired and avacated by HINDUSTAN STEEL LIMITED. On 15.4.58 the Church was also Bull Dozered by the said Company and the congregation was scattered. Most of the displaced lutheran people went to Jhirpani Resettlement Colony. Some of them are the employees of H.S.L., Rourkela and staying in the Company's residential quarters while very few others made their own huts near the Church. The Lutheran Christians were facing much spiritual hardships.
 - (c) In the mean time fortunately candidate P.C. Minz was deputed to Rourkela by the Church Council to organise and shepherded the Lutheran Christians. He resumed his duty here on 17.5.1958. He searched and organised the congregation very actively. He was conducting services in the employees' quarters.
 - (d) A hut for the purpose for worship was erected in the year 1959 with the co-operation of the members, on the place where old Church stood. Gradually the members increased and ultimately on 11.10.59 a Mandali Panch was formed under the Chairmanship of Candidate P.C.Minz with the following executives :-

Chairman - Catechist Yaqub Bara.
Secretary- Shri Saban Hemrom.
Treasurer- Shri Emanuel Khalkho.

All the above executives were displaced perons. They adopted the policy of autocracy. They never happened to-centralised the church income, but were found to misappropriate the same in Adibasi Unnatti Samaj and Personal use.

Present Situation :-

The congregation deemed fit to form the new Mandali Panch and on 12.6.60 nine Mandali Panch were elected under the Chairmanship of Rev. C.B.Aind, the then Synod President, Orissa. Nomination and election was made Sector-wise and out of 9 Panches, 5 were displaced persons. The following were the office bearers :-

Chairman - Catechist Yaqub Bara(displaced)
Secretary - Shri N. Hemrom.
Treasurer - Shri D. Bara(displaced)

Beginning of

misunderstanding:-

Two displaced group leaders Sarvsree Yaqub Khalkho Saban Hemrom became the blind follower of one Shri David Munzni an opportunist political leader of Jharkhand Party, Gantantra Parishad, Adibasi Unatti Samaj and now of Swatantra Party. These two ring leaders always drag the ignorant congregation towards the political organisations. They demanded Rs.50/- on 15.8.60 from the Church Fund through Adibasi Unatti Samaj probably to meet the expenses of case instituted in the Cuttack High Court regarding ~~xxx~~ Church and personal properties. Before this also several times they took money from church fund on loan basis which they neither refunded nor submitted any account. Hence the Mandali Panch refrained to pay Rs.50/- as asked for. Being disappointed on this account a threatening letter was handed over to Rev.P.C. Minz challenging that they would stop all church contributions among the displaced persons if monetary assistance is denied to them. Shri David Munzni who was organising political groups having his Headquarters at Rourkela since 1957 was then the prominent leader of Adibasi Unatti Samaj. He availed undue advantage of this opportunity. He started baseless allegations against the Church Authorities and present Mandali Panch and thus caused the seed of misunderstanding to germinate and grow gradually.

On 1.10.61 there was a meeting of Library Committee at G.E.L. Church, Sector-18, Rourkela. Shri David Munzni came with Sarvsree Yaqub Khalkho and Eliazar Kachhap an S.P.G. Catechist without obtaining permission of the Chairman and started hot discussions out of the agenda regarding the church and cemetery. He challenged that Rev.C.B.Aind, Rev.P.C.Minz and present Mandali Panch have no right to deal with the H.S.L. authorities in connection with the Church and cemetery. He pointed out that the matter of Church and cemetery can be solved in the Parliament and claimed that he can settle it up if the congregation would contribute every support to get him elected M.P. in the next ensuing election of 1962. Rev.P.C. Minz clearly replied that the matter being purely political concern, church congregation a religious organisation is helpless to give assistance in any shape. Shri Munzni was very ~~xxx~~ much displeased with the reply. He called a meeting of the few displaced persons on Monday the 2nd October, 1961 at Shri Kunwar Horo's Quarter in Sector-17 Rourkela. He instigated people with false allegation against the Church Authorities. He blamed that Rev. J.J.P. Tigga, Rev. C.B.Aind and Rev.P.C.Minz are dealing with the Estate Officer, HSL, Rourkela regarding church and cemetery without consulting the local displaced people. Rev.J.J.P.Tigga and Shri N.Horo, the then President and Secretary respectively of G.E.L.Church might have taken the compensation for church and cemetery if he (Shri Minzni) would have not arranged to stop them. He added that Rev.Tigga, Rev.Aind, Rev.Minz and present Mandali Panch have decided to ~~xxxxxx~~ sell out the church and cemetery. He claimed that he has personally witnessed the written documents in this respect at Uditnagar Court, Rourkela. After poisoning the ears of the displaced persons, he convinced them to be separated from other Lutheran Christians who have come from various places and serving under H.S.L., Rourkela. He suggested and forced them to form a separate Mandali Panch of their own. He advised them to call a special meeting to condemn Rev.J.J.P.Tigga, Director Joint Mission Board, Rev.C.B.Aind, Rev P.C.Minz and present Mandali Panch who are exploiting the fundamental rights of the displaced persons. He assured the people that he would report the matter to Pramukh Adhyaksha and request him to send separate pastor and catechist for the displaced persons. They decided to hold a special general meeting of the displaced persons on Friday, the 6th Oct.'61 evening, the notice of which were served to the following executive members :-

- (1) Rev.P.C.Minz, Chairman G.E.L. Church, Rourkela.
- (2) Shri P. Dang, Secretary, -do- -do-
- (3) Shri M.N.Hemrom, Secretary, -do-, Purnapani.
- (4) Shri D. Bara, Treasurer -do- -do-

As per their decision and notice served, a meeting of the few displaced persons was held at the Church Hut on 6.10.61 under the Chairmanship of Shri David Munzni. The numbers of unconfirmed minors was considerably high in the meeting. In accordance with the above allegations Shri David Munzni himself moved the proposal of no-confidence on Rev.J.J.P.Tigga, Director, J.M.B., Rev.C.B.Aind, Adhyaksha Orissa Anchal, Rev.P.C.Minz, Chairman, G.E.L.C., Rourkela and present Mandali Panch, GEL Church New Township, Sector-18 (Purnapani). He formed a new Mandali Panch of the following persons :-

- | | |
|--------------|---|
| Chairman | - Shri David Munzni. |
| Secretary | - Shri Saban Hemrom. |
| Asstt. Secy. | - Shri David Oreya (ex-communicated) |
| & Treasurer | - ^{Yakub} Yakub |
| Members | - S/Shri Kunwar Horo, Yakub Khalkho and Anandmasih Khalkho. |

Implementation of the above decisions began from 8.10.61. They disturbed the smooth-go church services. Church offerings were frequently being snatched away by them. Reconciliation was attempted through several neutral persons but to no effect. Ultimately a general meeting had to be called for on 22.10.61 at Sector-18 (Purnapani) Church and Shri David Munzni and his Mandali Panch condemned unanimously. Copy of the resolutions passed in the meeting was circulated amongst the church and other authorities concerned.

Rev.P.C.Minz proceeded on study-leave on 9.11.61. Shri David Munzni and his followers took maximum benefit of the situation. They objected the ~~services~~ conducting of services of the persons appointed by the Mandali Panch. They sent a notice to Treasurer Shri Daud Bara to hand-over all the church fund accounts to them. On 14.1.62, they especially disturbed in the church service. They charged with brick-bats to the persons attending the church.

Rev.C.B.Aind paster-in-charge of Rourkela came to this place (Rourkela) on 21.1.62. He conducted Lord's Supper Service. The followers of Shri Munzni did not co-operate. They even did not give ALTER-CLOTH for service.

On 4.2.62 Shri W.Thiel, Chairman Board of Management, GEL Church Properties with Rev.J.J.P.Tigga and Shri P.D. Kandulna, Secretary Property Board came to Rourkela. The dissident group did not help them in their work.

Catechist Shri ~~Yakub~~ Yakub Bara being disappointed tendered his resignation on 17.12.61; Shri S.J.Horo was nominated as Acting Chairman for the time being.

Shri David Munzni, after being elected as M.P. from Bihar came to Rourkela on 17.3.62. He held a meeting on the same evening at Shri Julius Tirkey's quarter at Sector-4, Rourkela. Here it is necessary to mention that Shri Julius Tirkey was conducting Church services of the North Zone group at his quarter probably since 1959. The meeting was attended by the group leaders of Munzni Group, Tirkey's group, Jhirpani Colony and the other north zone supporting churches around Rourkela. It was observed on 18.3.62 that persons of other North Zone supporting churches like Jhirpani, Pradhanpali etc. also in great number participated at our New Township (Purnapani) Church. The church service was conducted by Candidate C.A.Kindo of Jhirpani.

We, in order to avoid the breach of peace, did not object. After church service Shri Munzni held a meeting and again declared himself as a Chairman of Purnapani Church. No prayer was made before or after the meeting. He boldly assured the people that he would at his earliest convenience settle up the church and cemetery matters with the President and Prime Minister of India.

He claimed that he shall arrange church and houses to be built by the company for millions of displaced persons. This assurance caused the displaced persons to become blind supporter of North Zone. The members of the ~~xx~~ neighbouring North Zone supporting churches continuously attended our church for the period from 18.3.62 to 22.4.62.

Shri Saban Hemrom on 24.3.62 furnished written declaration that candidate C.A. Kindo would conduct church services continuously with effect from 25.3.62. The Acting Chairman and Secretary protested in writing and requested them to co-operate a joint executive meeting for amicable settlement of the misunderstandings, but to no effect. On 1.4.62 they announced that Rev. John Kujur of Ranchi would be coming to Rourkela on 15.4.62 and stay here till 22.4.62. He will organise North Zone at Rourkela. On 15.4.62 and 20.4.62 Lord Supper Service will be conducted by him. Acting Chairman Shri S.J. Horo and Shri N. Hemrom, Secretary on 8.4.62 protested about this and demanded from Shri Yaqub Khalkho the hidden facts of these activities. Baseless reply was given by Shri Julius Tirky, the North Zone Leader instead of Shri Yaqub Khalkho in a very rough angry mood. He stated that they are going to include Purnapani Church to Ratobirker (North Zone) Ilaka. Acting Chairman protested and told that there is no Ilaka known as Ratobirker, but it is Zara Kudar Ilaka having its paster at Ratobirker. Shri Tirky also made threatening and rebuked the members.

Rev. P.C. Minz returned from leave on 7.4.62. As advised by Rev. C.B. Aind, he contacted Shri Julius Tirky, North Zone Group Leader and asked him to stop the disturbances in the Church, but in vain. The situation became out of control. As breach of peace was apprehended, the Mandali Panch decided after proper assessment of the situation to seek the protection of local police. Thanks God, that the Police Authority took prompt action for protection.

As announced earlier Rev. John Kujur did not come here on 15.4.62 instead Rev. C.B. Ekka, Upadhyaksha, Orissa Anchal and Rev. C.C. Minz of Ratobirker were present at Sector 18 (Purnapani Church). Before service Shri R.M. Samantaray, S.I. Police made enquiries from the three pasters. Shri Samantaray stated that the Church is a place of worship, but here it has become a place of ~~quarrel~~ quarrel hence it would be better, in order to put an end to quarrels, ~~to~~ to lock-up the Church itself. Rev. C.B. Ekka immediately agreed that the Church should be locked-up. Rev. P.C. Minz opposed this and told the S.I. Police, "Sir, Rev. C.B. Ekka being a paster is in favour of lock-out of the Church but I cannot agree with him as our congregation will be ~~disturbed~~ ^{disturbed} from getting spiritual bread. The North Zone supporters tried to make disturbances even in presence of Police. To avoid breach of peace we did not interfere Rev. C.B. Ekka and C.C. Minz in conducting service. Rev. C.C. Minz announced the following in the Church :-

- (1) Good Friday Service on 20.4.62 will commence at 8 a.m.
- (2) Rev. John Kujur as announced earlier could not reach here to-day due to some unavoidable circumstances and he is expected on Good Friday.
- (3) The Chairman of the Local Committee Shri David Munzni from Delhi has written a letter that he ^{would} meet the President and Prime Minister of India soon to settle up the Church and Cemetery disputes as early as possible.

On Good Friday the 20th April, 1962 Rev. P.C. Minz conducted both general and Lord Supper Service. The other party tried their best to disturb the service. Shri Yaqub Khalkho stood at the Altar from beginning to the end of service with a object to prevent Rev. P.C. Minz in conducting service and as such Rev. P.C. Minz had to conduct service by standing aside the Altar. Rev. C.C. Minz was also present on the day. He entered the Church in the beginning of the service but seeing Rev. P.C. Minz on the Altar, he came out. Rev. C.C. Minz conducted separate service later on.

Easter Sunday Cemetery Service on 22.4.62 was fixed at the same place and at the same time by the both Groups, hence there was absolute possibility of ^{clashing with} collapsing each other. In order to maintain peace the Supdt. of Police appointed a Two-men Commission consisting of Shri Kurion John and Rev. P.M.Khalkho, a President and Vice President of Rourkela Christian Council respectively. Two members from each group with Rev.P.C.Minz and Rev C.C.Minz were called upon by the Commission.

Shri Julius Tirkey, Leader of North Zone Group made allegations against the Church Council both before the Police and the Commission that Rev. P.C. Minz is a Paster under Joint Mission Board and is supposed to be appointed in some new place, but Rourkela is a well established Church under Ratoberkera Ilaka, hence his appointment at Rourkela is illegal. In support of his statement he was producing a letter of May, 1961 from Rev. Joel Lakra, Pramukh Adhyaksha. The Commission fixed separate time for each group for Easter Morning Cemetery Service. Both the groups confessed that Rev. C.B.Aind is the Anchal Adhyaksha of Orissa Anchal and abide by the judgement from him. On this conclusion, Commission asked Rev. C.B. Aind to furnish his decision in this connection.

Rev. P.C. Minz was to conduct Sunday Service on 29.4.62, but the North Zone Group started service before schedule time. In the interest of peace, we did not oppose the smooth-go of the service.

Sd/- S.J.Horo
Acting Chairman

Sd/- D.Bara
Treasurer

Sd/- N.Hemrom
Secretary

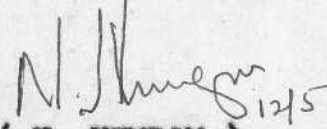
For and on behalf of G.E.L.Church, New Township(Purnapani)Rourkela.

Forwarded for information and necessary action to:-

Sd/- P.C. Minz
CHAIRMAN, GEL CHURCH, ROURKELA.

C.C. to :- 1) ~~Director, Joint Mission Board.~~

- ① 2) Rev. C.B.Aind.
- ② 3) The Superintendent of Police, Rourkela.
- ④ ~~The District Officer, HSL, Rourkela.~~
- ③ 5) The President, Rourkela Christian Council


(N. HEMROM)

The Director,
J. M. Board.

Rly. Colony,
Rourkela-1.
27.6.62.

Dear Sir,

Thank you very much for your letter of the 28th instant. I have sent those papers that you should know the facts. Rev. Kloss told me that you ~~also~~ could not tell him when he asked you.

When the K.S.S. has already taken up our matters it is not necessary to be put up in the Board. Rev. A. who was the Recording Secretary of the Commission will report to the K.S.S. in detail. Just yesterday evening he had come here. I had asked him what is his opinion regarding the J. M. B. work in Rourkela. He told me that it will work here. If Punjabi (local people) will not accept my service I will work among the outsiders (employees). Church services will be divided. Since the Commission came our people have stopped to attend church services in Punjabi. The local members Paul did not shepherd them impartially.

IMPORE COLLEGE



The Director,
Joint Mission Board,
G. E. L. Church,
P.O. Chamba
Dt. Singbhum.

भेजने वाले का नाम और पता :- Sender's name and address :-

Rev. J. Chandra
Raj. Chandra
Rancha, Basse.

इस पत्र के अन्दर कुछ न रखिये NO ENCLOSURES ALLOWED

Rev. G. C. Hiner, Esq. received Services
in Rancha on 15.4.44, 25th of
22th of April, 1942. Since that time
he is not coming again to Rancha
I am afraid if this decision will
continue we will fail to avail the
gift of L. W. P. Here mostly Rev. P. M.
Khalda is staying till he leaves the
area. He has ^{strongly} ~~strongly~~ ^{approved} ~~approved~~ the
church now inclined to leave it. He
keeps to get a reference of it for
an opinion from the church in the town.
Under his direction David Mungin brings
the service in.
Yours truly,
J. Chandra

P/36

Dt 12-5-62

To

The Deputy Supdt. of Police,
Rourkela.

Sub: Church dispute in G.E.L. Church,
(Purunapani) - Sector-18.

Sir,

We are very grateful for your kind action taken to check breach of peace in our Church. Farther we beg to add that our Church "Kendriya Salahakarini Samiti, Ranchi, has deputed a five member Commission consisting of - 1) Rev. Joel Lakra, Pramukh Adhyaksha, G.E.L. Church, Chottnagpur and Assam, 2) Rev. J.J.P. Tigga, Director, Joint Mission Board, 3) Rev. C.B. Aind Adhyaksha, Orissa Anchal, 4) Rev. J. Popno, Paster, G.E.L. Church, Jamshedpur and Mr. P.D. Panna, Member, K.E.S.

The Commission will reach at Rourkela on the 12th May, 1962 evening and stay at Hindustan Hotel, Rourkela. They will ^{b2}attending our Church service at Purunapani, Sector-18 on the 13th May, 1962 at 9.00 AM. Just after the Church service at about 10.30 AM. the Commission will hold a meeting to settle up our Church disputes.

This is for your information and necessary action please.

Yours faithfully,


(S.J. HORO) 12/5/62
ACTING CHAIRMAN
G.E.L. CHURCH, PURUNAPANI


(N. HEMROM) 12/5/62
SECRETARY,
G.E.L. CHURCH, PURUNAPANI.

.....

G. E. L. CHURCH, ROURKELA

Chairman : REV. P. C. MINZ

Secretary : MR. P. DANG B. A.

Treasurer : S. TIGA

A/57, Sector-7 Rly colony,

C/135, Sector 20

C/230, Sector-6

ROURKELA-3-1.

ROURKELA-2.

ROURKELA-2-1.

Ref. No. P-35

Dated the 6th May 1962

To

The Superintendent of Police,
Rourkela.

Sir,

Respectfully we beg to draw your kind attention to our petition dated 14th. April 1962 praying for your kind protection in our G.E.L. church, Purnapani Sector-18 (New township) conflict between two groups.

We thank you very much for your kind protection rendered. As per your suggestion a two men commission was appointed on 21.4.62 consisting of Rev. P.M. Khalkho and Mr. Kurion John its Chairman. The representatives of both the groups agreed to abide by the decision of Rev. C. B. Aind, Adhyaksha, Orissa Anchal. In pursuance of the above Rev. C.B. Aind Adhyaksa submitted his decision to the Chairman Mr. Kurion John on the 28th. April 1962. Now we are anxiously waiting for your the judgement from your end.

We regret to report Sir, that we are still facing the same disturbances in our worship and our Pastor Rev. P.C. Minz was not allowed to conduct church services on 29.4.62 and 6.5.62. Further we beg to mention that on 5th. May 62 we fixed a door in our Chapel in order to prevent any thorough entrance of men and animals, but to our great surprise we found the door and lock were removed on 6.5.62 morning.

We therefore earnestly request your honour to ~~take~~ kindly take early action so as to enable us to worship peacefully.

Thanking you,

Yours faithfully,

Sd/ Rev. P.C. Minz

Chairman, 6.5.62.

G.E.L. Church, Rourkela.

Sd/ S.J. Horo

Acting Chairman, 6.5.62

G.E.L. Church, Purnapani.

Sd/ P. Dang

Secretary, 6.5.62

G.E.L. Church, Rourkela.

Sd/ N. Hemrom,

Secretary, 6.5.62

G.E.L. Church, Purnapani.

(cont. next page.)

G. E. L. CHURCH, ROURKELA

Chairman: Rev. P. C. MINZ
 Secretary: Mr. P. DANG N. A.
 C/135, Sector 10
 ROURKELA-2
 (2) KELA-2

- Copy to:-
- (1) Mr. Kurion John, Chairman of the Commission.
 - (2) Rev. P.M. Khalkho, Member " " "
 - (3) Rev. C.B. Aind, Adhyaksha, Orissa Anchal.
 - (4) The Director, Joint Mission Board.
 - (5) The Estate Officer, n.S.L. Rourkela.

[Signature]
 Secretary

G. E. L. Church
 Purnapani, Rou.

Respectfully we beg to draw your kind attention to our
 decision dated 14th April 1963 regarding for your kind prote-
 ction of our G. E. L. Church, Purnapani Sector-18 (New township)
 between two groups.
 We thank you very much for your kind protection rendered
 on your suggestion a two men commission was appointed on
 consisting of Rev. P. M. Khalkho and Mr. Kurion John
 The representatives of both the groups agreed
 to abide by the decision of Rev. C. B. Aind, Adhyaksha, Orissa
 Anchal. In pursuance of the above Rev. C. B. Aind Adhyaksha
 submitted his decision to the Chairman Mr. Kurion John on the
 28th April 1963. Now we are anxiously waiting for your the
 judgment from your end.
 We regret to report Sir, that we are still facing the
 same disturbances in our worship and our Pastor Rev. P. C. Minz
 was not allowed to conduct church services on 29.4.63 and
 30.4.63. Further we beg to mention that on 25th May 63 we
 fixed a door in our chapel in order to prevent any thorough
 entrance of men and animals, but to our great surprise we
 found the door and lock were removed on 6.5.63 morning.
 We therefore earnestly request your honour to kindly
 kindly take early action so as to enable us to worship peace-
 fully.

Thanking you,
 Yours faithfully,

26/ Rev. P. C. Minz
 Chairman, G. E. L. Church, Rourkela.
 26/ S. J. Horo
 Acting Chairman, G. E. L. Church, Purnapani.
 26/ Mr. P. Dang N. A.
 Secretary, G. E. L. Church, Rourkela.
 26/ Mr. Hentom
 Secretary, G. E. L. Church, Purnapani.
 (cont. Next page)

G. E. L. CHURCH, ROURKELA

SUNDERGARH, ORISSA.

Rev. P. C. Minz, L.tk.
Chairman

Rly. Doubling Colony,
Rourkela-1

Ref. No.

Dated 196 .

To
The Superintendent of Police,
Rourkela.
Sir,

We beg to state that we are holding our church services in Secta 18 (Purnapani) since the last four years. A good number of Hindustan Steel Ltd. employees of our creed, who have no opportunity in the nearby area, also attend the services.

Messrs Yakub Khattar and Sabeau Hemroom who have erected unauthorised hutments near the church plot have been fomenting failing against the church among a class of people at Jhirpani failing to get the help of the church in the recent General Elections. The church authorities being completely a theological body, refused to espouse themselves in political activities.

It is understood that on 15th April 1962 Sunday, the above persons will bring down some persons from Jhirpani and other places to the church in Secta 18

= CONTD =

G. E. L. CHURCH, ROURKELA

SUNDERGARH, ORISSA.

Rev. P. C. Minz, L.th.
Chairman

Rly. Doubling Colony,
Rourkela-1

Ref. No.

Dated 196 .

and create physical disturbances. all fear
that this may take a serious turn and
therefore seek your protection.

Thanking you.

Rev. J. Minz
14.4.62
CHAIRMAN,
G.E.L. Church.
ROURKELA.

yours faithfully
Sd/- P. Dang
Secretary
ON BEHALF OF G.E.L. Church,
ROURKELA.

Copy to 1. The Director
J.M.B, Chakesa.
2. Rev. C. B. Aind,
Adhayaksh, Orissa Bachel.

Director,
JOINT MISSION BOARD,
C.E.L. Church, P.O. Chaibassa,
Dist. Singhbhum, (Bihar).

Khoshatoh
Kolar, Ranchi
14th May, 1962

Dear Rev. Minz,

Today Dr. Junghaus is coming to meet me here at Kolar for a talk re. constructions at Champua. Hence I am here otherwise I had a plan to visit Runkela during these days. I plan to go to Runkela and Barama as soon as I am free from Champua where we want to construct some houses within the months of May + June so that some workers may be engaged here soon to work among, particularly, the Ho's and then to proceed to the Jhangs.

I have heard from members of the K.B.S. that Runkela matter has been postponed until July. What is the present position? I am soon going to Chaibassa - please write to me to my Chaibassa address.

With best wishes,

Yours Sincerely
J. M. Jha

P.S. Banerji has come for her summer vacation + Brown is coming today. She will have to go back to Khushatoh for a few days.

To

Rev. H.Kless,
The Chairman,
Joint Mission Board,
G.E.L.Church Compound, Ranchi,
Ranchi.

Dear Sir,

We the undersigned members of the Gossner Church at Rourkela bring the following facts for your information and immediate necessary action:-

That we who reside in and around the Township of Rourkela, who had been once divided, but by the grace of God are united again and holding our service, but immediately after the return of your employee Rev. Prabhucharan Minz, from his study leave, he again splitted up the Congregation into two (by forming a group who have come here from outside for their earnings in the Steel Town) and unfortunately even the Police were summoned during Palm Sunday Service. But after studying the situation the Police gave his decision that Rev. Prabhucharan Minz should not conduct the service whereas it should be conducted by Rev. Christechit Minz of Ratobirkera, the appointed Pastor for this congregation, till the final decision comes from the higher authority. In spite of the decision of the Police, on Good Friday, Rev. Prabhucharan Minz and his group did not give us chance to conduct our service in our schedule time as they had entered the church at 7.30. A.M. Our programme for Good Friday Service was due to commence from 8 A.M. We patiently waited outside the church as per instruction of the Police, and our Good Friday Service started at 12.00 noon as soon as Rev. P.C.Minz and his group finished their services.

We do not think that the Agreement between Kuratorium and the Gossner Church empower the Joint Mission Board to put its worker in the established congregation of the Gossner Church and split up the congregation, making the Church ridiculous in the eye of the public and the Government.

We, therefore, very earnestly request you to kindly withdraw your worker Rev. P.C.Minz immediately from Rourkela who has been a cause of breach of peace here, and let the established Gossner Congregation here hold their services in peace.

Yours faithfully,

Yakub Khalkho

- ① Vice President - G.E.L. Church Purnapani
- ② *Stenogram. Secy. - do - do*
- ③ *Kusat Haro Prachin - do - do*
- ④ *C.D. Geyssier - do - do*

Copy to (1) Pramukh Adhyaksh,
G.E.L.Church, Ranchi. ⑤ *विपक्षीय समिति का कार्यालय - do*

(2) Director, Dr. Hans Lekies, *Members*
Berlin-Friedenau, *⑥*
Handjerystr- 19/20, W.Germany. ⑦ *आनन्द मसिह समिति*

(3) Incharge, Police Station,
Sector-19, Rourkela.

- (2) Binod Ekka *Palas, m* (24)
- (3) Sming (25) *free*
- (4) Amur (26) *Pokush*
- (5) Sulman *do*
- (6) *का (ने ल) यमिनी*
- (7) *हनुक रक्षा*
- (8) *नवीन कुज्ड*
- (9) F khalkho
- (10) *मसिह रक्षा*
- (11) KUSAL TURKEY
- (12) *Nirmal Rakna*
- (13) *Helel Turkey*
- (14) *प्रेम मेरकेल*
- (15) Asab khalkho
- (16) Canett C.A. Kindo.
- (17) *Ajib Ekka*
- (18) *J.A. Tindery*
19. *Dirkey*
20. *Blakna*
- (21) *S. Khalkho*
- (22) *Colley*
- (23) *M. Brava*

Rly. Colony.
Roulela-1.
21. 5. 62

The Director,
J. M. Board.

I am in receipt of your letter of the 14th April or 17th instant. I am sorry that I was out of station when you came here on 17. 5. 62.

To settle our disputes out of five only three members came. Rev. S. Lalora, P. D. Pannu and Rev. Sind. This committee made the following decisions:-

1. The Achyalekh to be the temporary pastor of the congregation till the next K.S.S. meeting only.
2. The present lunch functions with three co-opted by the lunch and two nomination by the Achyalekh.
3. The offerings be in charge of the lunch for safe keeping in the Pass Book.
4. The lunch will co-operate with the K.S.S. in the release of the church property of Burnasani.

The decisions are alright if these ^{are} followed by the Anti Party. Decision NO 2. The lunch mean the local committee formed by D. Mujari. It will function till July only. The Comm. has not condemned the existing model lunch

अन्तर्देशीय पत्र
INLAND LETTER



The Director,
Joint Mission Board
G. E. L. Chandel, Chaibassa,
P. O. Chaibassa,
Dist. Singhbhum

भेजने वाले का नाम और पता :- Sender's name and address :-

Rev. J. H. Lewis
Rly. Colony,
Rourkela-1.

यह पत्र के अन्दर कुछ न रखिये NO ENCLOSURES ALLOWED

यहाँ काट कर खोलिये To open cut here

पहला मोड़ First fold

दूसरा मोड़ Second fold

and me. It will help us to separate our church property from their personal property. The Board of Directors has publicly expressed their opinion that my appointment is proper. But it is a great surprise to me why they stopped me to come in person. Rev. A. D. had come for conduct some in person and then the Board of Directors on 20.5.62. But I am reported that they did not accept their chairman's report of the Board of Directors. I am little afraid of it. Little can we do suggested this Board of Directors will spoil all the proper matters. Rev. A. D. will come again on 8.6.62 to do the same. I will write you again as my monthly report. Yours truly J. H. Lewis

GOSSNER EVANGELICAL LUTHERAN CHURCH IN CHOTANAGPUR & ASSAM.
RANCHI.

NO 153 /62-KSS-154.

G.E.L. Church, Ranchi
Dated May 8, 1962

Rev. J. J. P. Tiga, G. E. L. Church, Chaibassa,
Rev. J. Topno, Jamshedpur,
Mr. P. D. Panna, Jamshedpur,
Rev. C. B. Aind, G. E. L. Church, Rajganagpur,
Dear Friends,

The commission appointed by the KSS for settling the dispute and restoring peace in Purnapani (Purkela - Orissa Anchal) will be visiting Purnapani by the evening of 12th May 1962 for the purpose aforesaid. On Sunday the 13th May a service will be held at Purnapani chapel at 9 a.m. led by the Premukh Adhyaksh. Immediately after the service the commission will begin its work in the chapel. All persons concerned with this dispute are expected to be present there who will kindly be informed by the Rev. C. B. Aind, Adhyaksh Orissa Anchal.

Members of the commission and all other persons concerned will kindly take note of the date and place of the commission's work.

Yours faithfully,

Mr. Kuman

Sunday, 8-5-62
In Convener,

Purnapani peace commission.

CC: to the Treasurer,
G. E. L. Church.

GOSSNER EVANGELICAL LUTHERAN CHURCH IN CHOTANAGPUR & ASSAM.
RANCHI.

No. 152 / 62-KSS-154.

G.E.L. Church Ranchi.
dated May 8, 1962

Rev. J. Lakre, Pramukh Adhyaksh,
Convener Purnapani peace Commission,
G. E. L. Church, Ranchi.

Dear Sir,

in its

The special full KSS ~~main~~ meeting held from 1st to 5th May 1962 has heard with regret that there is a dispute going on at Purnapani. The situation there according to reports has deteriorated and the KSS has therefore decided to send a commission under the convenership of the Pramukh Adhyaksh. The Commission will consist of five members including the convener which is authorised to settle the dispute and maintain peace in that congregation. This congregation is within the township of Bourkela and lies within Orissa Anchal.

The Commission is therefore requested to visit Purnapani immediately and settle the dispute and restore peace there, and submit a report to the KSS.

Yours faithfully,

h. Kinnam 8/5/62
Secretary,
G. E. L. Church.

CC:- to Rev. J. J. P. Tiga, Rev. J. Topno, Mr. P. D. Panna and
Rev. C. B. Aini, all members of the commission for
information.

To,

The Director,
Joint Mission Board,
Camp Ranchi.

Ranchi dated the 3rd May 1962

Dear Mr.Tiga,

It is understood that as desired by the JMB you have got out the decree paper of the High Court of Cuttack regarding the chapel at Purnapani Rourkela. If it is so I would like request you to send me a copy of the same or in original which will be returned to you after use.

This document is needed today in connection with your letter dated 2-5-1962 regarding Rourkela matters.

If you do not mind the KSS would like to have you this afternoon when this matter will be discussed. Kindly come at 3 p.m. today.

Yours sincerely,

G. E. L. Church
Secretary,

G.E.L. Church

From:

Camp Kakas,
Ravelin

3.5.62

copy
enclosed

Dear Messrs. Bara, Horro + Heun-on and
Rev. Min X, I and many others are in-
deed very grateful to you all for your
tunnel report. I have forwarded them to the
KSS in original along with a covering letter
from me. The KSS has taken up the matter.
Today I had been invited to give information
about the case in the High Court and the
possibilities of securing a piece of land
within the sectors for a Lutheran Chapel.
The matter is still under consideration. I am
no longer wanted to attend the KSS meeting.
Let us hope that God will work out
His purpose under all circumstances.
I think you were right in taking the
help of the police and I appreciate
the timely intervention of the S.P. I do
wish that the matter may be solved
in the best interests of the whole Church,
yea, in the true interest of Christ's Church.
I also hope that you will also patiently
wait for the decision of the S.P. in the
present case and for the action of the
KSS in the whole question regarding
Roumkela. I would still plead with you
that your love and enthusiasm for the
Lord Jesus Christ and His Church may
remain true and blazing. Yours always,
J. M. Nigam

Important formulas

1. Distance between two given points (x_1, y_1) and (x_2, y_2) is $\sqrt{(x_2 - x_1)^2 + (y_2 - y_1)^2}$
2. (i) The co-ordinates of a point which divides the line joining two points (x_1, y_1) and (x_2, y_2) in the ratio $m:n$ are $\left\{ \frac{mx_2 + nx_1}{m+n}, \frac{my_2 + ny_1}{m+n} \right\}$
(ii) The co-ordinates of a point which divides the line joining two points (x_1, y_1) and (x_2, y_2) externally in the ratio $m:n$ are $\left\{ \frac{mx_2 - nx_1}{m-n}, \frac{my_2 - ny_1}{m-n} \right\}$
3. The area of a triangle is $\frac{1}{2} (x_1y_2 - x_2y_1 + x_2y_3 - x_3y_2 + x_3y_1 - x_1y_3)$ whose vertices are $(x_1, y_1), (x_2, y_2), (x_3, y_3)$
4. The three points are collinear if $(x_1y_2 - x_2y_1 + x_2y_3 - x_3y_2 + x_3y_1 - x_1y_3) = 0$
5. The middle point of the line divides it in the ratio 1:1. Hence its co-ordinates become $\left(\frac{x_1 + x_2}{2}, \frac{y_1 + y_2}{2} \right)$
6. The centroid of a triangle whose vertices are $(x_1, y_1), (x_2, y_2)$ and (x_3, y_3) is $\frac{x_1 + x_2 + x_3}{3}$ and $\frac{y_1 + y_2 + y_3}{3}$

In the High Court of Judicature, Orissa, Cuttack.

(Original Jurisdiction)

O.J.C. No. 110 of 1958.

In the matter of

An application under Article 226 of the
Constitution of India

And

In the matter of

Yakub Khalko, son of late Hanuk Khalko,
Member, Managing Committee of the Gossner
Evangelical Lutheran Church, Purunapali,
P.O. Purunapani, Thana Raghunathpali,
District and Munsiffi-Sundergarh

..... Petitioner.

Versus.

1. The state of Orissa.
 2. The Special Officer, Land Acquisition and
Reclamation, Rourkela, P.O. Uditnagar, Thana
Rourkela, Munsifi and district-Sundergarh..
 3. The Hindustan Steel Private ~~Ltd~~ Ltd. Rourkela
Steel Project, Rourkela, Dist. and Munsifi
Sundargarh. Opp. parties.
-

O.J.C.110/1958.

Yakub KhalkoPetitioner.

Vrs.

The State of Orissa & others ...Opposite-party.

For the Petitioner...Mr.R.Mohanty

For the Opp.party ...Advocate General
& Mr.R.C.Misra.

Present:-

The Honourable the Chief Justice,
and
The Honourable Mr.Justice G.C.Das.

Narasimham C.J.

In this application under Article 226 of the Constitution the validity of the acquisition under the provisions of the Orissa Development of Industries and Resettlement of Displaced persons (Land Acquisition) Act 1948 (Orissa Act No.XVIII of 1948) for the purpose of the Hindusthan Steel (Private) Limited, Rourkela, was challenged. Several grounds were mentioned in the petition, but the only ground urged by Mr.R.Mohanty on behalf of the petitioner is that development of steel industry is a purely Union subject and consequently acquisition for the purpose of the Steel project at Rourkela, would not be acquisition for the purpose of the State of Orissa but only for the purpose of the Union, and as such outside the ~~scope~~ scope of Orissa Act XVIII of 1948.

2). The said Act was passed when the Government of India Act 1935 was in force and Mr.Mohanty rightly pointed out that under that Act compulsory acquisition of land was a purely Provincial subject (see item 9 of List II). At

(2)

At the time when the Act was passed, acquisition of land either for the purpose of the Central Government or for the ~~purpose~~ of the Central Government or for the purpose of the Provincial Government, was within the exclusive legislative competence of the State Legislature. The petitioner therefore rightly did not challenge the validity of the Act but pointed out that after the coming into force of the Constitution, the provisions of the Act could be used only for acquisition of land for the purposes of the State or Orissa if the other conditions laid down in the Act are satisfied.

3). It is unnecessary for us to discuss this question because even if we accept this argument as correct it cannot be denied that the development of steel industry in the State of Orissa though it may be undertaken by the Union Government, also serves the purpose of the State of Orissa. As pointed out in A.I.R. 1957 Patna. p.109 (at 111) a scheme or undertaking may have different aspects or facts; it may serve not only the purpose of the Union but the purpose of the State or any other public purpose. The immense benefits which the people of Orissa will derive from the Steel project at Rourkela are too well known. It helps in providing employment for thousands of people in the State, in utilising the electrical energy generated at Hirakud, and deposits of iron ores found in the state, ~~xxx~~ and confers many other indirect benefits on the people of State, arising out of the rise of a big industrial city.

(3)

4). We are therefore satisfied that the acquisition for the purpose of Hindusthan Steel Private Limited Rourkela is valid. The application is rejected, but we make no order for costs.

Sd. R. L. Narasimham

.....

Das, J. I agree.

Sd. G. C. Das.

Orissa High Court,
Cuttack, the 25th. Aug. 1959.

From:

Director,
JOINT MISSION BOARD,
G.E.L. Church, P.O. Chaibassa,
Dist. Singhbhum, (Bihar).

Camp Koller, Ranchi

2.5.1962

Copy sent to
New Bross as
described by
him on 8.6.62
J. Meyer
8/6

To, The Secretary,
K.S.S., G.E.L. Church,
Ranchi

Dear Sir,

The situation in Rousteela is reported to be very serious. It is also reported that during the Passover week and Easter last month there was fear of breach of peace - Revs C.C. Minz and C.B. Elka had gathered people from outside Purnia. The situation is said to have been controlled by the Superintendent of Police and the dispute initiated by Revs C.C. Minz + C.B. Elka is now in the hands of the S.P. for decision.

I regret that the KSS has taken about 6 months to consider the recommendation of Bishop Meyer and meanwhile this unpleasant situation has come. I hope the KSS will not

drive the situation to bloodshed
and dishonour of the Church.

When new police case has
started at Rouhela and the parties
are practically the same as in
1955-60, what is the ground to
say that there is one united Goswami
Church? I am afraid one group
has not yet accepted the decisions
of the Ecumenical Commission and
has no respect for the pledge and
this is the reason why the trouble
continues. To whom shall we
go for redress? As the USS is the
only authority to deal with the
matter, I request earnestly that
the method of silence on the part
of the USS to establish peace in
such disturbed areas of the Church
should no longer be practised. ~~It is only~~ ^{It is only} inviting bloodshed and
division in the Church. I have a
long report from Rouhela and I
submit it in the original for
your consideration and early action.

Yours sincerely
J. Shiga

Encl. I Report from

Rev P. C. Minz dated
28.4.62 in 9 sheets

II Report from Messrs. David Bora,
S. J. Horo, and N. Humpu dated 30.4.62 in 11 sheets.

Copy to: Rev. C. B. Hind, Holyalek Orissa Aitchal
for information and necessary action.

Rev. P. C. Minz
Rly. Doubl. Colony
Rourkela-1. (Orissa)

26. 9. 61.

The Director,
J. M. Board, Chaibassa.

I think you might have expected
this letter earlier as the matter is very
important. I am sorry that I could not
write you immediately after my return
from Chaibassa. Reasons were manifold
which are not necessary to be mentioned.

Just yesterday I met Mr. Y. K. Mahapatra
and we had a talk long talk on
church matter. Our discussion was conclu-
ded that you should come here and
make a personal approach to Mr. P. Das,
the Senior Deputy General Manager
of H. L. Ltd. He is a Christian devote
Christian. According to him Mr. Das is
keeping all documents which have
come from the Central Govern-
ment. It is hoped that he will favour
us in this connection.

I also hope you will appreciate their
views and come soon.

Dr. Pensch has come here lately
on 20th sep. He told me that the
Presidents of the L. W. F. along with
some other distinguished persons
will visit to Rourkela after the
W. C. C. Assembly is over. Perhaps
he would like to see some concrete
work satisfactory progress has
been done here. Moreover
he may like to see the rights

Please bring Flannel govt. for us on
Sunday school it will be organised.

अन्तर्देशीय पत्र
INLAND LETTER



Mr. Director,
J. M. Board, Chaibassa,
P.O. Chaibassa
Dt. Singhbhum.

भेजने वाले का नाम और पता :- Sender's name and address :-

Rev. D. K. Sin
Rly. Doubling Colony,
Ranchi.



इस पत्र के अन्तर कुछ न रखिये NO ENCLOSURES ALLOWED

Steps taken to get the ~~that~~ Church Plot
at Ranchi. We are in mind the importance
of Ranchi in the north. You should give
advice if you agree. Some other Ranchi
people are the legal representative of the
Church. In addition to the ~~from~~ the
Church have been indicated by the
vice president. Rev. D. K. Sin should be
one of the trustees indicating the
place that is in the north. I trust
with something to be done. Some
other place might be as well in area
that is the office. It was only a
week. I have been doing some
with best regards.
Yours truly,
D. K. Sin

Take any careful steps in time to help solve
the situation. You should take all necessary
precautions so that you may not be charged
of aggressive behaviour as the fact of
K.S.S. having taken up the matter, this does
not mean that you should not do your ordinary,
normal, routine duties - You must do them,
and if any one interferes you should still do
them and report about the interference.
I am going to Kelio's house.

I am going to Ketchikan tomorrow. I expect return soon after Easter to Chahassga.

With best wishes and greetings for a Happy Easter,
Yours sincerely, Edna

Yours sincerely, J. H. H. H.

I will opt to let the matter of the
 ten thousand dollars be decided by
 the 1882 and we will accept of
 the decision. I request you to remain
 quiet in matters which relate to the
 dispute between the two parties. I
 myself in the future will not
 with these frequent arguments and
 fight. If any one takes you into
 do not do anything then you should
 tell them that you are waiting for
 the decision of the 1882. Please however
 observe everything carefully and
 report the same to me.

The Chairmen
J. on. Board,

Rly. Colony,
Roumelia-1
6-6-62

Dear Sir

I am in ^{receipt} your letter dated the
the 29th May 62. I thank you much
for this.

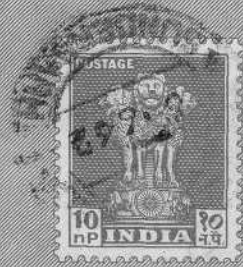
On my arrival ^{from Serampore} I was given "Rough
Pats" and I read it minutely. What
Rev. Lakra told you that I called the
Police is quite true. By calling the
Police I might have made blun.
but situation compelled me to do so

It did I had not sought the
protection of Police there would
have been ^{much} bloodshed in the church
instead of worship.

For this I will give you
sufficient reasons only after three
days. I am at present very much
busy. I do hope you will not
mind this.

Secondly a conference is going
to be held in Mussonie, up. under
the auspices of the Evangelical Fellow-
ship of India. It has selected
me one of the attending Pastors.
out of 47.

अन्तर्देशीय पत्र
INLAND LETTER



The Director

Joint Mission Board

G. E. L. Church Comp

At ~~2~~ ¹⁰ Chaibasa

Jt Sargbhum

भेजने वाले का नाम और पता :- Sender's name and address :-

Jt Sargbhum 7.6.62

Rly. Colony

Ranucella-1

इस पत्र के अन्तर कुछ न रखिये NO ENCLOSURES ALLOWED

Hospitality will be given free of charge
Only I have to bear the Travel exp
Hike concession is available.

I state as very true if you
kindly ~~attest~~ ^{attest} the same. Now
I shall be further experienced from the
ready services.

It will be better if you kindly
allow me talk with you in ~~your~~
Person in Ranchi before ~~the~~ ^{the} 18-
20 for detail knowledge.

Yours truly
Jt Sargbhum
Jt Sargbhum
Jt Sargbhum

ccy
The Director
J. M. B.

EXPRESS DELIVERY

Charlottesville

8.6.62

Dear Brother Kloss,

Enclosed is a copy of my letter
to the U.S.S. Revs. P.C. Meier and
C.B. Hind. I know more than I do &
I think you have to form your opi-
nion from what you hear from them.
I have been more or less an observer
and a post office, because the whole
matter has been in
the hands of the U.S.S.

Yours Sincerely
J. B. G. A.

EXPRESS DELIVERY

Ranchi, 29.5.62

From:

Rev.H.Kloss, Chairman J.M.B.

To:

Rev.J.J.P.Tiga, Director J.M.B.

Dear brother Tiga,

Mostly when we both are meeting it happens in such a hurry that a lot of things are forgotten. A very important point was the most recent Rourkela affair. It is very important for me to know what happened there. For this purpose I had up to now only an oral report by Rev.Lakra. So today I am writing to three persons in order to get a full picture.

a) Rev.C.B.Aind, secr. of the KSS Commission of which you are a member also.
b) Yourself as Director of the JMB. c) Rev.P.C.Minz, the pastor involved.

I asked Rev.P.C.Minz to send a copy of his report in the same time to you for your comment. I would be glad to be informed soon, because things look very bad and the board has not to sit idle.

Wishing you the best for your work at Champua

P.S: I wrote to Bage
as secr. of the Board of
Theol. Ed. Appointment
of Santosh Surin for Prach. Train. School
(see KSS. resolution 1st day) very urgent!
(for

I am truly yours

H. Kloss

Rly. Colony,

Rourkela-1.

8. 4. 62.

The Director,

J. M. Board, Chaibassa.

Dear Sir,

Hereby I have to let you know that I have come back from Serampore on April 7. And I joined my duty on Rourkela on April 8, 62.

I thank you very much that you have granted a long study leave with pay.

On my way to Rourkela I was planning to see you in Chaibassa on April 7. But on hearing from Rev. Hemmow that you were still in Ranchi I came straight to Rourkela.

The situation in Purupani is still the same. I am told Rev. J. Kujar from Ranchi will come to Rourkela on 15. 4. 62. He will stay here for a week and mislead the people in Purupani. I am now in difficult position what to do against him.

Yours truly
P. D. Sharma

अन्तर्देशीय पत्र
INLAND LETTER



The Director,
Joint Mission Board,
At & P.O., Chabassa,
Dt. Singbhum.

पहला मोड़ First fold

तीसरा मोड़ Third fold

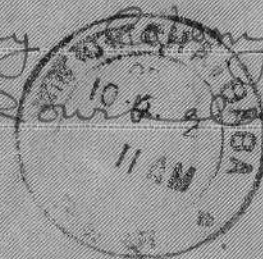
दूसरा मोड़ Second fold

भेजने वाले का नाम और पता :- Sender's name and address :-

J. P. Lim

Rly. Station,

Howrah, 11/4/41



NO ENCLOSURES ALLOWED

यहाँ काट कर खोलिये To open cut here

INVEST WISELY

NATIONAL
SAVINGS
CERTIFICATES

INDIAN POSTS AND



TELEGRAPHS DEPARTMENT

Class }
Prefix }

Code

Recd. from

Sent at

H.

To

By

By

Handed at (Office of Origin)

Date

Hour

Minute

Service

Station

Recd. here at

H.

M.



TO
The director of m. h. govt
gossard gossard charch
Chairane
Come soon wanted by
the P P
B. N. Singh

MGEPD...1074...11-11-61-2,37,560 Eke, [T-30-5/53]



T.I.-56

TELEGRAM No. C/84

The director of

M. B. Gossner

*V.O.
V.P.M.*

JF Tega

Ko Kar

Panchai

Recd by J. R. W. JF Tega
K. K. Kar
Panchai

o/c
18/4



NCITPA-1960-14-9-53-1,51,00,000.

Camp Khoshatoly,
Kokar, Ranchi

27. 4. 62

dear Pastor Mink,

Your telegram reached me
today. My driver has gone
leave on account of sickness
his children. Tomorrow I have a
meeting of the L. Th. College Council.
will come to Ranchiela in the
middle of May, if you still feel my
service as essential. As I have
written to you the matter of Ranchiela
& the work of J. M. B. in Orissa is
under consideration of the U. S. S. I
not wait for its decision before
take any steps on any matter
connected with Ranchiela. I have
already written to you in this connection
and report about the present position
to me & to Orissa Adyabon immediately.

one uss is meeting on the 18th day.
 I am waiting for its quick decision
 and without it I find myself in a
 very precarious condition. I have
 written to you about your own work
 and hope you have been adjusting
 yourself according to the situation.
 Give my greetings to you and the
 members of the congregation.
 Yours sincerely
 J. J. P. Tiga

Christian Institute for the Study of Religion and Society
 Post Box 57, 19, Miller's Road
 BANGALORE

RELIGION AND SOCIETY
 Bulletin of the Christian Institute for the Study of Religion & Society

Certificate of Posting obtained

Rev. J. J. P. Tiga
 President
 GEL Church
 Ranchi Bihar



From: Director,
JOINT MISSION BOARD,
G.E.L. Church, P.O. Chaibassa,
Dist. Singhbhum, (Bihar).

Cuttack Hotel
Cuttack.

22. 2 1962

Rev. C. B. Hind,
Adhyaksh,
Orissa Anchal

Dear Rev. Hind,

I have to report that
after much worry and labour I was
able to get a true copy of the final
order passed by the Orissa High Court
on the petition for in Yakule Chhalkhis
which he has filed against the State of Orissa,
Special Land Acquisition Officer & H.S.P.
Fourthly. The last para of the judgment says:
"We are therefore satisfied that the acquisition
for the purpose of Hindustan Steel Private Ltd
Rourkela is valid. The application is rejected,
but we make no order for costs."

Sd/- Bas. T. Jagree Sd/- C.C. Bas

Orissa High Court,

Cuttack, the 25th Aug. 1959

I shall send you the full text soon.
Copy to:
1. Mr. W. Thiel, 2. Rev. H. Moss
+ 3. Rev. Dr. M. Bage

Yours sincerely,
D. Raja

Werner Thiel,
Chairman
Board of Management
G.E.L. Church Properties
Chotanagpur & Assam
Ranchi.

dated: 25th Jan. 1962

Ref: WT/ht.

The
Rev. J.J.P. Tiga,
Director, Joint Mission Board,
G.E.L. Church Compound,
Chaibassa - Dt. Singhbhum,
B I H A R.

URGENT ATTENTION PLEASE!
=====

Dear Brother Tiga,

Receiving your letter of 21.1.62, it seems to me that you did not get the i n v i t a t i o n for your participation in the meeting at ROURKELA! As I agreed with Rev. Kloss and Mr. Kandulna, your presence is very necessary and will be highly appreciated, - therefore kindly do your very best to come to Rourkela in time - maybe you can travel via Ranchi, to pick up Rev. Kloss here, who will also be attending the meeting in Rourkela.

With greatest thanks and best greetings,

Yours in Christ,



cc/:-

(Werner Thiel)

Rev. H. Kloss,
Mr. P.D. Kandulna.

अन्तर्देशीय पत्र
INLAND LETTER



Rev. J.J.P. Tiga,
Director, Joint Mission Board,
G.E.L. Church Compound,

P.O. Chaibassa,

Dt. Singhbhum, BIHAR.

पहला मोड़ First fold

तीसरा मोड़ Third fold

दूसरा मोड़ Second fold

भेजने वाले का नाम और पता :- Sender's name and address :-

Chairman
Board of Managers
G.E.L. Church Compound
Chotanagpur & Jharkhand



इस पत्र के अन्दर कुछ न रखिये NO ENCLOSURES ALLOWED

यहाँ काट कर खोलिये To open cut here

P/25

Dt 24.1.62

From :- N. Henrom,
Secretary, G.E.L.Church, Purnapani(Rourkela)
Qtr.No.A/99, Sector 6, P.O. Rourkela2.

To :- Mr. W.Thiel, Chairman,
Board of Management, G.E.L.Church Properties.

Sub :- Church Property matters in Rourkela.

Ref :- Your letter No.WT/ht dated 17.1.62.

Dear Sir,

We are much pleased to acknowledge your kind letter of 17th instant and thank you very much for the same.

Inspite of our repeated request the local displaced persons did not furnish any document as proof regarding the ownership of the Church Plot. They filed a case in 1958 in the High Court of Cuttack and it is learnt that judgement was made against them. Rev. J.J.P.Tigga on 13.10.61 was requested and entrusted to obtain a copy of the said judgement and accordingly we hope he must have obtained the same. Further Rev. Tigga has got one letter from Shri S.N.Mazumdar, the then Managing Director, HSL, Rourkela, wherein it has been stated that the existence of our Church institutions shall remain un-affected. Kindly arrange to collect and bring the said copy of judgement and letter which may help us to tackle the matter at a time.

Mr. P.K.Das, Senior Deputy General Manager, HSL, Rourkela who is a Baptist Christian, is fully aware of the facts of our Church Plot. Hence if you feel necessary kindly intimate him of your arrival at Rourkela and meet him on 4.2.62 evening positively. Kindly also intimate Mr.M.A.Khan, Estate Officer, HSL, Rourkela so that he may arrange to discuss in the matter on 5.2.62 because of the fact that our work must not remain undone.

Regarding cremation ground, practically we have already burried one dead body in the allotted plot, which can be taken over officially by you on your arrival.

With best regards and love.

Sincerely yours in Christ,

(N. Henrom)

G. E. L. Church
Purnapani, Rourkela

Dated

Copy to :- Rev. C.B.Aind.
✓ Rev. J.J.P.Tigga.

cutback d 11:00

Heavily at 7:00

Chunpua

D. Singh. Advocate

Cutback

Telengal

... and thank you very much for the same.

... of our repeated request the local displaced persons did not furnish any document as proof regarding the ownership of the Church Plot. They filed a case in 1958 in the High Court of Cutback and it is before that judgment was made against them. Rev. J. B. K. on 17.10.61 was requested and requested to obtain a copy of the said judgment and accordingly we hope we must have obtained the same. Further Rev. J. B. K. has got the letter from Rev. S. S. K. and has stated that the existence of our Church institutions shall remain unaffected. Kindly arrange to collect and bring the said copy of judgment and letter which may help us to tackle the matter at a time.

... who is a Baptist Christian, is fully aware of the facts of our Church Plot. Hence if you feel necessary kindly intimate him of your arrival at Bangalore and meet him in the ... to that he may arrange to ... because of the fact that ... work must not remain undone.

... already buried one body in the allotted plot, which can be taken over officially by you on your arrival. With best regards and love.

Sincerely yours in Christ,

[Handwritten signature]

(S. J. K.)
S. J. K.
Bangalore

to constitute a separate
 to mandali Punch,
 church service. He is
 advising them not
 to allow you, Him
 and me in Rkh.
 They are always to
 ask a catechist
 for photographs from
 the for a month
 Adhyaks.
 Dr. Pensek and
 we all feel you
 immediate presen
 ce in Rongkhar to solve
 all the problems.
 Please write to Rev.
 Him also at your

Constitution will leave us to Mr. Mungin



The Director, J.M.B.

G.E.L. Church Chaibassa

P.O. Chaibassa

Dt Singbhum.

Director,
JOINT MISSION BOARD,
G.E.L. Church, F.O. Chaibassa,
Dist. Singhbhum, (Bihar).

Chaibassa

21. 1. 1962

The Chairman,
Board of Boys.

Dear Brother Thiel,

Thanks for a copy of your
letter to Mr. M. Henrion of Roumela dated
17. 1. 1962. I note that Mr. P. O. Khandua
and you are going to Roumela on
3rd Feb to settle the disputes.

Wishing you success in your
efforts and God's blessings upon the
congregation and hoping to hear
good news before long.

Yours sincerely
J. B. Agai

No 36/62
From: Rev. C. B. Aind.

Ranchik
Rajgangpur.
20.1.62.

To,
Rev. J. J. P. Tiga,
Director JMB.
Chabassa.

Dear Sir,

It is to let you know that Sri Yakub Kha-
lkho and others have started separate service from
14.1.62. I had been to Ry. Dublin Colony on that day
for sacramental works. Again I shall go to Purnapani
tomorrow. Land settlement for Church is to be done
soon. Let me know when you are coming to Raurkela for
the same.

With best Compliments,
Sincerely Yours.



पोस्ट कार्ड
POST CARD

केवल पता
ADDRESS ONLY



Rev. J. J. P. Tga,

Director Joint Mission Bd.

G. E. L. Church Compound,

Chaibassa.

Dist. Singhbhum.

COPY

--

WT/ht.

Tel: 510 extension.

17.1.1962

To

N. Hemrom ,
A-99 , Sector -6,
Rourkela - 2 ,
ORISSA.

Re: Church Property Matters in Rourkela.
=====

Dear Brother,

Thanking you for your kind informations and your last letter of 10.1.62, I herewith inform you, and all who will receive a copy of this letter, that I will be, together with Mr. P.D. Kandulna, Secretary of the P.B., in Rourkela, on

Saturday, 3rd February 1962, evening.

We shall attend your SUNDAY SERVICE on 4th Feb., and we may then hold a joint meeting, in which, I hope, we can regularize most of the problems.

As your letter reached here on the 12th inst., I could unfortunately not do anything in the matter about the cremation-ground; I still hope that we can settle this matter also in due course of time.

Yours in Christ,



(Werner Thiel)
Chairman

cc/:-

Mr. P.D. Kandulna, Secretary P.B.; Board of Management
Rev. J.J.P. Tiga, J.M.B. Director; C.E. Church Properties
Rev. Mr. Kreuz, Ranchi, FILE:-; C.B. ALda, Adityaksh, Orissa;
Chotanagpur & Asam

Chabassa

9.1.62

Mr. P. Dang Secretary,
S. C. Church, Ranchi

Dear Mr. Dang, I am indeed very sorry that our plan to have a meeting at Ranchi in December failed on account of the change made by Bishop Meyer in his route to Rajgangpur. I had to go to Ranchi to fetch him instead of going to Ranchi & Jharsuguda. I understand that the conditions at Purnapuri are not improving. Bishop Meyer has served as a one-man Commission to study the situation in Orissa and has sent his recommendations to U.S.S. and his recommendations include the affairs at Ranchi, Purnapuri, Jhispuri, Jolda etc. also. Last month the U.S.S. read the recommendations of Bishop Meyer and postponed its consideration and final action. We have, therefore, patiently to wait until the U.S.S. decides on this matter. After the U.S.S. has taken a final decision on this issue we shall have a way open to proceed in the right direction. I do not know yet when the U.S.S. is meeting - I hear that it is meeting in the end of this month.

Rev. Muir had gone to Bangalore for his Exam. I have not heard from him anything as yet. I am going to Bangalore for the Senate meeting (18th - 20th Jan) and I hope to meet him there. Wishing You and Your Congregation a Very Happy & Prosperous New Year.
Yours Sincerely
J. H. G.

C/135, Sector-20,
Rourkela - 2(Orissa)
dt.23.11.61

Dear Rev. Tigga,

We have received your letter of even date. We are happy that you are coming to Rourkela on 7th December, 1961 on your way to Jharsuguda.

The matter was discussed among members. Regarding holding of a 'Amsabha' meeting on 7th/8th December, 61 seems to be inconvenient to us, as you know the situation at Rourkela. If it suits you, ~~xxx~~ we would suggest you to come to Rourkela while returning from Jharsuguda on 10th December, 1961 which falls on Sunday.

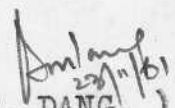
If this date is convenient to you, please inform us telegraphically otherwise we expect you to be here according to your programme.

The situation of Rourkela is going from bad to worse day by day. Purnapani people are taking stern attitude and there is no hope of reconciliation at present. It would be better if you come and talk to them personally and square out the misunderstandings.

Rev. Aind is coming to-day and stay for a day or two. Rest when ~~your~~ come here.

With kind regards,

Yours sincerely,


(P. DANG)
SECRETARY.

Joint Mission Board
of
THE GOSSNER EVANGELICAL LUTHERAN CHURCH

DIRECTOR

Rev: J. J. P. Tiga M.A.; B.D.; S.T.M.

Chaihessa

G. E. L. Church

RANCHI (Bihar)
INDIA.

Ref

Dated Ranchi 25.11.61

Mr. P. Dang,
Secretary,
G. E. L. C. Ranchi

Dear Mr. Dang,

Thanks for your letter of
the 23rd ult. After the 9th Dec. I shall
be in the hands of Bro Meyer &
I must be with him according
to his programme. The only date
which suits me best in the
nearest future is the 8th Dec.
I shall be very thankful to you
if you could bring the leading
personnel together for a Con-
ference with us. Rev. Bird will

also come. I have arranged
to visit him - we shall go
to Jharugda together to meet
Pop Meyer.

Please excuse me for my
inability to accept any other
date than the 18th Dec.

With very best wishes for
all the members of your Ch. &
for your Congregation.

P.S.

I am enclosing
a letter from
H. O. I.

Yours very sincerely
J. H. J.

Joint. Mission Board

Camp Ranchi 17 ¹¹/₆₁

Dear Mr. Hanson,

Recd the resolutions of your meeting dated 22.10.61. Thanks.

I have requested Rev C.B. Hind, the Adhyaksh of the Orissa Anshal to be in charge of the congregation at Ranchi during the study leave of Rev P.C. Minz. Please give your kind assistance to Adhyaksh Rev. Hind.

I am going to Gharsuguda on 9.12.61. If it is possible please call for an Audabha at Purnapuri on the 7th Dec. I must be at Gharsuguda on the 9th morning. If 8th is more convenient to you, it will be better for me. Please inform me - at once to Chabassa address. Mr. Thiel is not at Ranchi now and I could not consult him. Rev Hind will be with me. Please write to him about the date of the Audabha.

With best wishes,
Yours faithfully
J. M. B.
Director J.M.B.

Received from Mrs. J. W. Thiel
 10/11/11

Dear Mr. Thiel,
 I have just received your letter of the 10th inst. and am glad to hear that you are well and happy. I am also well and hope this letter finds you the same. I am sure you will find it interesting to hear from me. I am sure you will find it interesting to hear from me. I am sure you will find it interesting to hear from me.

CC to 6.12.56 R.1. Adyabon S.E.
 L. T. P. Club
 J. P. T. Club
 D. H. T. Club
 C. S. Ball Club
 M. D. P. Club
 R. P. D. Club
 G. W. S.

Adyabon S.E.
 " M. W.
 " H. S.
 " O. S.
 Mr. W. Thiel
 Mr. Kloss
 J. H. S.

Adyabon S.E.
 " M. W.
 " H. S.
 " O. S.
 Mr. W. Thiel
 Mr. Kloss
 J. H. S.

Chairman
Board of Management
G.E.L. Church Properties
Chotanagpur & Assam

150 - WT/ht.

COPY

20th November 1961

To the Secretary
of the G.E.L. Church;
Mr. N. Hemrom,-

Purnapani - Rourkela,
O r i s s a .

Re.: P R O P E R T Y M A T T E R S.

Dear Brother,

Referring to the information passed on to me and received on the 15th inst., I regret very much to have to state that I cannot come to Rourkela at this time.

I earnestly request all persons concerned in this matter to keep the peace until I am able to tackle with it myself, after our visitors from Germany have left Bihar.

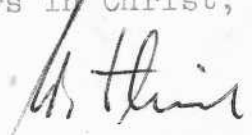
For the meantime, I authorize the Director of the Joint Mission Board, Rev. J.J.P. Tiga, for further negotiations on behalf of the Property Board, with a view to clearing the situation, so that I may be in the position - after hearing out the parties on the spot and having, with the help of Rev. J.J.P. Tiga, made the necessary preparations for a lasting peaceful settlement - to regularize the case in favour of the unity of our Church.

Dear Brother; please inform all persons concerned and let them know that I call upon each and everyone to follow the peaceful way of the Christian Faith; that of brotherly love and understanding of each other!

My schedule is to come to Rourkela towards the beginning of January 1962, as I will also have to visit Amgaon at that time.

Thanking you for your kind help in this matter,

yours in Christ,


(Werner Thiel)

Chairman

Board of Management
G.E.L. Church Properties
Chotanagpur & Assam

c.c.: Rev. P.C.Minz,
Mr. P. D. Kandulna,
Rev. J.J.P. Tiga,
File. ✓

JOINT MISSION BOARD
DIRECTOR :
~~XXXXXX~~

3rd. May 61

The Revd. P.C. Minz L.Th.
Railway Doubling Colony,
Rourkela - 1, Orissa;

6.15

Dear Rev. Minz,

This is to acknowledge with thanks your report for the months of March and April, 1961 passed on to me by the Secretary of the J.M.B.

I note that you have enrolled your name to the P.F. of Pastors of the GELC since November, 1960. Regarding the question as to who should pay the employer's contribution to your P.F. I would suggest that you continue to pay your own contribution to the Treasurer of the K.S.S. through the accountant Rev. Sey of the J.M.B. I shall place the matter before the Board for its decision and let you know. Either the J.M.B. or the K.S.S. or the two together have to contribute an amount equal to your own contribution.

It is noted that Rs. 70/0 is to be deducted from your salary for May, 1961.

Regarding other matter affecting the life of the congregation at Rourkela, I shall try to help you when I come there personally, the date to be fixed after hearing from you about the convenience of the members of your Committee.

With best wishes,

Yours Sincerely,

J. D. D. D.
DIRECTOR 3/5/61

Replied
PURNAPANI HELD ON 22nd OCTOBER, 61
=====

The General Meeting of the G.E.L. Church, Purnapani was held on 22nd October, '61 under the Chairmanship of Rev. P.C. Minz and unanimously passed the following resolutions :-

1. That this meeting condemns the Mandli Panch formed by Shri David Munzni on 6.10.61 with only a very displaced persons which is by no means vested on the constitution of G.E.L. Church.
2. That Shri David Munzni, who is neither a member of Purnapani G.E.L. Church nor any Church Authority but a political leader has no right to conduct any meeting at Purnapani Church. Necessary intimation must accordingly be issued to the Estate Officer, Hindustan Steel Limited and Police Authorities, Rourkela entreating for proper protection against the violence of peace if any.
3. That none but the duly appointed person by the Chairman can conduct the Sunday Church Services.
4. That Shri David Munzni has no right to settle up the Church and cemetery disputes of Purnapani with the Hindustan Steel Company's authorities.
5. That the legal Church Authority, Mr. W. Thiel, Chairman, Board of Management G.E.L. Church properties must be requested to settle up the matters regarding Church and Cemetery at Purnapani with the Company's authorities at his earliest convenience.
6. That an extra-ordinary general meeting including the local displaced persons must be called for as early as possible, to embridge the gap created by Shri David Munzni and presence of Rev. J.J.P. Tigga, Director, Joint Mission Board, Rev. C.B. Aind, Orissa Anchal Adhyaksha and Mr. W. Thiel, Chairman, Board of Management, G.E.L. Church properties, may be requested in the meeting.

Q.N. 99, see 6
Rourkela - 2
Sd/... N. Henron
SECRETARY, G.E.L. CHURCH,
PURNAPANI.

Copy for information to :

1. Rev. H. Kloss, Chairman, Joint Mission Board, Ranchi.
2. Rev. J.J.P. Tigga, Director, Joint Mission Board, Chaibasa.
3. Rev. C.B. Aind, Orissa Anchal Adhyaksha, Rajgangpur.
4. Rev. Joel Lakra, Pramukh Adhyaksha, G.E.L. Church Chotanagpur & Assam.
5. Rev. Dr. M. Bage, Up-Pramukh Adhyaksha, G.E.L. Churches.
6. Rev. M. Henron, Secretary, G.E.L. Churches
7. Mr. W. Thiel, Chairman, Board of Management G.E.L. Church Properties.
8. Secretary, Rourkela Christian Council, Rourkela
9. The Estate Officer, HSL, Rourkela
10. The Superintendent of Police, Rourkela.
11. Shri David Munzni & Party, Rourkela.

Arrival.

Mr. P. Dany Secy.
Q.N. C/135, Sectr 20,
Rourkela - 2

Before

1/1/2020
1/2/2020
1/3/2020
1/4/2020
1/5/2020
1/6/2020
1/7/2020
1/8/2020
1/9/2020
1/10/2020
1/11/2020
1/12/2020
1/13/2020
1/14/2020
1/15/2020
1/16/2020
1/17/2020
1/18/2020
1/19/2020
1/20/2020
1/21/2020
1/22/2020
1/23/2020
1/24/2020
1/25/2020
1/26/2020
1/27/2020
1/28/2020
1/29/2020
1/30/2020
1/31/2020
2/1/2020
2/2/2020
2/3/2020
2/4/2020
2/5/2020
2/6/2020
2/7/2020
2/8/2020
2/9/2020
2/10/2020
2/11/2020
2/12/2020
2/13/2020
2/14/2020
2/15/2020
2/16/2020
2/17/2020
2/18/2020
2/19/2020
2/20/2020
2/21/2020
2/22/2020
2/23/2020
2/24/2020
2/25/2020
2/26/2020
2/27/2020
2/28/2020
2/29/2020
3/1/2020
3/2/2020
3/3/2020
3/4/2020
3/5/2020
3/6/2020
3/7/2020
3/8/2020
3/9/2020
3/10/2020
3/11/2020
3/12/2020
3/13/2020
3/14/2020
3/15/2020
3/16/2020
3/17/2020
3/18/2020
3/19/2020
3/20/2020
3/21/2020
3/22/2020
3/23/2020
3/24/2020
3/25/2020
3/26/2020
3/27/2020
3/28/2020
3/29/2020
3/30/2020
3/31/2020
4/1/2020
4/2/2020
4/3/2020
4/4/2020
4/5/2020
4/6/2020
4/7/2020
4/8/2020
4/9/2020
4/10/2020
4/11/2020
4/12/2020
4/13/2020
4/14/2020
4/15/2020
4/16/2020
4/17/2020
4/18/2020
4/19/2020
4/20/2020
4/21/2020
4/22/2020
4/23/2020
4/24/2020
4/25/2020
4/26/2020
4/27/2020
4/28/2020
4/29/2020
4/30/2020
5/1/2020
5/2/2020
5/3/2020
5/4/2020
5/5/2020
5/6/2020
5/7/2020
5/8/2020
5/9/2020
5/10/2020
5/11/2020
5/12/2020
5/13/2020
5/14/2020
5/15/2020
5/16/2020
5/17/2020
5/18/2020
5/19/2020
5/20/2020
5/21/2020
5/22/2020
5/23/2020
5/24/2020
5/25/2020
5/26/2020
5/27/2020
5/28/2020
5/29/2020
5/30/2020
5/31/2020
6/1/2020
6/2/2020
6/3/2020
6/4/2020
6/5/2020
6/6/2020
6/7/2020
6/8/2020
6/9/2020
6/10/2020
6/11/2020
6/12/2020
6/13/2020
6/14/2020
6/15/2020
6/16/2020
6/17/2020
6/18/2020
6/19/2020
6/20/2020
6/21/2020
6/22/2020
6/23/2020
6/24/2020
6/25/2020
6/26/2020
6/27/2020
6/28/2020
6/29/2020
6/30/2020
7/1/2020
7/2/2020
7/3/2020
7/4/2020
7/5/2020
7/6/2020
7/7/2020
7/8/2020
7/9/2020
7/10/2020
7/11/2020
7/12/2020
7/13/2020
7/14/2020
7/15/2020
7/16/2020
7/17/2020
7/18/2020
7/19/2020
7/20/2020
7/21/2020
7/22/2020
7/23/2020
7/24/2020
7/25/2020
7/26/2020
7/27/2020
7/28/2020
7/29/2020
7/30/2020
7/31/2020
8/1/2020
8/2/2020
8/3/2020
8/4/2020
8/5/2020
8/6/2020
8/7/2020
8/8/2020
8/9/2020
8/10/2020
8/11/2020
8/12/2020
8/13/2020
8/14/2020
8/15/2020
8/16/2020
8/17/2020
8/18/2020
8/19/2020
8/20/2020
8/21/2020
8/22/2020
8/23/2020
8/24/2020
8/25/2020
8/26/2020
8/27/2020
8/28/2020
8/29/2020
8/30/2020
8/31/2020
9/1/2020
9/2/2020
9/3/2020
9/4/2020
9/5/2020
9/6/2020
9/7/2020
9/8/2020
9/9/2020
9/10/2020
9/11/2020
9/12/2020
9/13/2020
9/14/2020
9/15/2020
9/16/2020
9/17/2020
9/18/2020
9/19/2020
9/20/2020
9/21/2020
9/22/2020
9/23/2020
9/24/2020
9/25/2020
9/26/2020
9/27/2020
9/28/2020
9/29/2020
9/30/2020
10/1/2020
10/2/2020
10/3/2020
10/4/2020
10/5/2020
10/6/2020
10/7/2020
10/8/2020
10/9/2020
10/10/2020
10/11/2020
10/12/2020
10/13/2020
10/14/2020
10/15/2020
10/16/2020
10/17/2020
10/18/2020
10/19/2020
10/20/2020
10/21/2020
10/22/2020
10/23/2020
10/24/2020
10/25/2020
10/26/2020
10/27/2020
10/28/2020
10/29/2020
10/30/2020
10/31/2020
11/1/2020
11/2/2020
11/3/2020
11/4/2020
11/5/2020
11/6/2020
11/7/2020
11/8/2020
11/9/2020
11/10/2020
11/11/2020
11/12/2020
11/13/2020
11/14/2020
11/15/2020
11/16/2020
11/17/2020
11/18/2020
11/19/2020
11/20/2020
11/21/2020
11/22/2020
11/23/2020
11/24/2020
11/25/2020
11/26/2020
11/27/2020
11/28/2020
11/29/2020
11/30/2020
12/1/2020
12/2/2020
12/3/2020
12/4/2020
12/5/2020
12/6/2020
12/7/2020
12/8/2020
12/9/2020
12/10/2020
12/11/2020
12/12/2020
12/13/2020
12/14/2020
12/15/2020
12/16/2020
12/17/2020
12/18/2020
12/19/2020
12/20/2020
12/21/2020
12/22/2020
12/23/2020
12/24/2020
12/25/2020
12/26/2020
12/27/2020
12/28/2020
12/29/2020
12/30/2020
12/31/2020

26
27
28
29
30
1
2
3
4
5
6
7

Roukela - 1.

21. 10. 61.

Dear Father,

I am writing you seeking your suggestion what to do for my study. Dr. & Mrs. Pusch are glad to know that I have been permitted to appear at the B.A. examination next year. They have suggested me to leave Roukela as early as possible to study intensively somewhere in Calcutta. In case I do not get leave with pay, I have already sanctioned a sum of Rs. 98 per month. I have written Rev. Kloss to grant me a study leave from 1st Nov. 61 - March or April 62.

Further I have asked him what will be the conditions of my leave, shall I be given leave with or without pay.

Could it be possible with you to find out a suitable place to study peacefully ^{in Calcutta} other than Singapore. I am writing also to the Principal ~~as well as to~~ the warden Singapore College. It will be able to get a room in Singapore hostel that will be very good. I can get help from the Professors and the students.

Charles is also with me on my study. He is in the place of my study.

Yours affectionately
K. Roukela

अन्तर्देशीय पत्र
INLAND LETTER



The Director,
J. M. Board,
Cr. 2. L. Church,
At 2 P.O. Chaitanya
Dt. Singbhum.

भेजने वाले का नाम और पता :- Sender's name and address :-

[Signature]
Ry. Chaitanya
Singbhum



यहाँ काट कर खोलिय To open cut here

पहला मोड़ First fold

तीसरा मोड़ Third fold

दूसरा मोड़ Second fold

How I am very much busy all the time. For immediate reply would be in from you would be much appreciated. We are going to have a public meeting in Bundergkrai on 22.10.61. It is heard that you are making some sort of a Tim. D. to call you and Munim to attend this meeting. I do hope we shall be able to see him. Local people are still good to me. Council is going to take place here to on 22.10.61. I hope our representatives will be there. I am sure that only the local Christians can be its members but the Rev. A.N. Dullaw, Secy.

Copy

5 ¹⁰/₁₉₆₁

G. E. Church
Chairman

My dear Babbarman,

I have recd your letter dated 26.9.61 and the P.C. dated 3.10.61 urging on me to visit Ranchula immediately. You also want Rev. O. B. Aind; I am already booked the whole of this month and the first week of November. As far as I know Rev. Aind is also busy this month. I find it impossible to spare any day this month. Moreover, if you want to have a public meeting, you want one whole day and then you want time to inform all concerned, including Rev. Aind. If you can arrange for the public meeting on Friday, the 13th inst. I shall cancel the present programme and come to Ranchula on the 12th inst. Rev. Aind will also be able to come on the 13th inst. I hope. If you decide to have the public meeting on 13th, send me a telegram to the following address:

Director TIGA c/o Headmistress,
Bethinda School, RANCHI.

I shall be at Ranchi on the 13th inst. attending meetings of the Bethinda Branch of the Bible Society of which I am the President. I have to go to Ranchula immediately, as you say, therefore I am making this suggestion. Please reply by wire. With best wishes. Yrs. Sdly,
J. B. B. B.

continued

Part II - Compulsory

- (b) The Person of Christ, with Athanasius: De Incarnatione
(see Note 5)

OR

- (c) The Work of Christ, with Anselm: Cur Deus Homo (see Note 5)

OR

- (d) Man, Sin and Grace, with Augustine: De Spiritu et Littora
(see Note 5)

OptionalSenate-examined Group

- (b) or (c) or (d), if not already selected under Part II: Compulsory.
(e) The Holy Spirit, with Basil: De Spiritu Sancto (see Note 5)
(f) Church, Ministry and Sacraments, with Cyprian: De Unitate
(see Note 5).
(g) The Creeds, and two of the following Confessions:
i. The Augsburg Confession; ii. The Thirtynine Articles,
iii. The Westminster Confession iv. The Canons of the Synod
of Dort; v. The Savoy Declaration.
(h) Latin: First Paper (as IV(i) and VII (l)) (See Note 3)
(i) Latin: Second Paper (as IV(j) and VII (m)) (see Note 3)

College-examined Group

- (j) The History of Christian Doctrine in the First 18 centuries.
(k) Modern Trends in Theology from Schleiermacher to the Present
Day.
(l) Ecumenical Theology (Modern Theological Developments as
influenced by the Ecumenical Conversation).

Branch IV Church History (See Note 6)Part I Compulsory

- (a) General Introduction to Church History.

Part II Compulsory

- (b) The History of the Church to 600 A.D.
OR
(c) The History of Reformation
OR
(d) The History of the Church in India.

OptionalSenate-examined Group:

- (b) or (c) or (d), if not already selected under Part II
Compulsory
(e) The History of the Mediaeval Church from 600 to 1517 A.D.
(f) The History of the Eastern Churches
(g) Syriac: First Paper (as II (h) and VII (j)) (see Note 3)
(h) Syriac: Second Paper (as II (i) and VII (k)) (See Note 3)

No 17/60

Rajgangpur.
23/1/60

From:

The Rev. C. B. Hind.
Squad president, Orissa

To:

The Secretary,
Joint Mission Board, Ranchi.

Sir,

I surprised to learn from the Secretary
G. E. L. Church, Raurkela about the three
months verbal leave of Rev. P. E. Ming.
I have not yet been informed about this
leave neither from Rev. P. E. Ming himself
nor from you.

May I please know
whether this report is
correct.

I have communicated
to the Secretary
G. E. R. Church, Ranchi
that I will go to them
in the next ^{week} ~~month~~
for the arrangement
of their church service.

Yours faithfully
C. B. C.

पोस्ट कार्ड
POST CARD

केवल पता
ADDRESS ONLY



Rev. Harman Kloss

Lutheran Theological
College
Ranchi.

Chailassa

1st Aug. 1961

Rev. Dr. M. Ball

Secretary, JMB

Subject: Cemetery at Rowula

I contacted the Estate officer and he informed me that a place has been set aside near Heimgar for the Christians to be buried. They have stopped our pastor from burying the dead in the old cemetery at Pinnapam. This is final and we have to abide by it. I have asked the Estate officer to allow our people to clean and whitewash ~~the~~ the tombs of their dear ones before the Easter and to allow us to conduct our Easter Morning Service in the Cemetery. He has orally told me that there will be no objection to this but I have to get it in writing.

Copy to Rev. H. Kloss
Chairman JMB.

J. J. J.

Joint Mission Board

of

THE GOSSNER EVANGELICAL LUTHERAN CHURCH

DIRECTOR

Rev: J. J. P. Tiga M.A; B.D; S.T.M.

G. E. L. Church
RANCHI (Bihar)
INDIA.

Ref

Dated Ranchi

The Secretary
JmB

Subject: A site for Church for
all Christians.

The leaders of the various denominations have not yet been able to arrive at unanimity in this connection. The matter is in suspense. The H.S.L. authorities have not yet done anything about it. If all groups agree and submit a joint petition for one site, there is a sure hope of a site for Christian worship will be given. I understand that it will have to be bought @ of Rs 1/- per sq ft. In Bhilai such a site has been bought and I saw it personally.

It is 16,000 sq ft.

Joint Mission Board
of
THE GOSNER EVANGELICAL LUTHERAN CHURCH

which is about ~~22~~ Kattas, i.e. a little
more than $\frac{1}{3}$ of an acre and the
price paid for it was Rs 16,000 only.

W. J. J. J.
W. J. J. J.

Romkela-1
11.1.60

To

The Secy.

J. M. B. Ranich

Sir,

It is the day on which I
am leaving Romkela for Sarampoor

In order to carry out the
work in our Mandli Panch
meeting was held yesterday
the following arrangement has
been done by it.

1. My leave was accepted
by the Panch.
2. Temporary replacement
should be done by the J.M.B.
to look after the work.
Our Secy. might ask
you for a candidate and
Catechist.

I have given them an
idea that they should

being the members of the Auto-
nomous church should learn
the self administration.

3. Rev. Hind will ~~work~~
after the sacramental
work ^{during the period of} my leave.
4. An acting chairman
has been elected.
5. Church service will
be conducted in turn
by the volunteers.

By this grace 6
men & women have
converted to Christian-
ity this year so.
(+ jar/- 10).

Yours truly,
P. Hing

अन्तर्देशीय पत्र

इस पत्र के अन्दर कुछ न लिखिये



Rev. H. Kloss

G. E. L. Church, Ranchi

P.O. Ranchi

Dist. Ranchi

पहला मोड़

तीसरा मोड़

भेजने वाले का नाम और पता:-

Rev. J. C. Maiti

Rowkela,

Sunderganj.



पत्रों को कट कर तोड़िये

अन्तर्देशीय पत्र

इस पत्र के अन्दर कुछ न लिखिये



Rev. H. Kloss,

G. E. L. Church, Ranchi

P.O. Ranchi

Ranchi

तीसरा भाग

भेजने वाले का नाम और पता:-

Rev. L. L. Davis

Serampore College

Hooghly, W.B.



Joint Mission Board

of

THE GOSSNER EVANGELICAL LUTHERAN CHURCH

DIRECTOR

Rev: J. J. P. Tiga M.A.; B.D.; S.T.M.

G. E. L. Church

RANCHI (Bihar)
INDIA.

Ref: _____

Dated Ranchi _____

Ref. no. Land- 3(5)160/1367a/81
D/- 11th May, 1961 to Rev. P.C. Muz
Guest, Lutheran Church,
Ranchi.

"Dear Sir", Recently one Sir Jaisain
of your community forcibly buried
the dead body of his wife in
the old cemetery in Sector 18 which
has been acquired & made over to
the H.S.L. in spite of vehement protest
by my staff.

Perhaps you are aware that
for burial of dead bodies of different
communities the H.S.L. have set
apart large areas of on the side
of Mrs. Koel near the Haripur

Joint Mission Board
10
pump house & one acre has been
earmarked for the cemetery of
the Christians as it would be
extremely unhygienic to allow
any further disposal of dead
bodies in the old cemetery which
have been acquired and which
lies within close proximity of
residential quarters in our township.
We hope, you would appreciate
our view point and impress
upon your Parish people that
henceforth they should not
dispose of any more dead bodies
in the old cemetery which have
been acquired by HCB but shall
take them to the cemetery set
apart by Hindu, Muslim & Christian.

Yours faithfully
sd/- M. A. Khan
(M. A. Khan)

Copies to :-
1. Bishop Catholic Church,
Ranchi,
2. Priest, Anglican Church,
Ranchi

Estate Officer
for favor of information.

Chaitassa ———

18 Aug 1961

The Secretary,
Joint Mission Board
Chaitassa.

Dear Dr. Bage, Recently I visited Rongkela, met some of our brethren and the Estate officers. By this time Rev. P. C. Minz has been able to organise four different centres within the H.S.L. area where worship is being conducted regularly. They are as follows:

Serial No.	Place	No. of families	
		(a) Indians	(b) Others
1.	Rly. Doubhup Colony	60	6 = 66
2.	Purnapanni	80	10 = 96
3.	Tangapali	40	2 = 42
5.	Pongomunda	25	5 = 30
		205	23 = 228
6.	Paupoth	2	2

यूनाइटेड स्टेट्स इन्फमेशन सर्विस
सिकन्दरा रोड,
नई दिल्ली ।

६१६६१ - १२५

अमेरिकी कांग्रेस की महिला सदस्याएं

१८६२ के प्रेसिडेंट पद सम्बन्धी चुनाव में मतदान करने के अभियोग में, सुसन वी० एन्थोनी नामक एक अमेरिकी महिला-मताधिकार आन्दोलनकर्त्री को गिरफ्तार कर लिया गया था । किन्तु महिला-मताधिकार आन्दोलन का यह नारा, कि "सभी पुरुष और महिलाएं जन्म से समान हैं," उस समय तक सतत और उत्तरोत्तर अधिक जोर के साथ बुलन्द होता रहा, जब तक कि १९२० में संविधान का १६ वां संशोधन स्वीकृत नहीं हो गया ।

महिला-मताधिकार

यह संशोधन, जिसके द्वारा अमेरिका की सभी महिलाओं को मतदान करने का अधिकार प्राप्त हो गया, अमेरिका के सामाजिक और राजनीतिक जीवन में एक अभूतपूर्व परिवर्तन के प्रारम्भ का द्योतक था । थोड़े ही समय में अमेरिकी महिलाएं स्थानीय, राज्यीय और राष्ट्रीय स्तरों पर राजनीतिक प्रचारों का अविच्छिन्न.....

Rly Doubtless Colony: Rev. Minz lives here in
a rented house. One of our brethren
Sri Samuel Toppo is the ~~the~~ owner of the
house. He has allowed a small piece
of land where a shed has been erected
for worship. Sri Samuel Toppo has been
told by Government that his land has
been acquired but he has been fighting
in order to retain his property. This makes
is rather uncertain about our future
at Rly Doubtless Colony. It is however
hoped that Sri S. Toppo will be allowed
to retain his household property and
then we shall also continue to be his
tenants. In any case, there will be some
place in this locality which will
always be available for our worship,
even a house of some Christian brother
working under the H.S.L. or the Railway.
We have to watch the situation and
make efforts so that we are not ousted
from this area if + when Sri S. Toppo is
led from there.

Pumapau: As all of us know the E. L. Church has had a small compound here with a chapel and Bacharak's house. The H.S. has acquired this property - demolished the Bacharak's house and the chapel. I understand that the Bacharak's house had fallen beforehand but the chapel was definitely demolished by the H.S. The Church Council decided not to accept any compensation but to ask the authorities to allow us to keep our chapel there. The local brethren filed a case against the H.S. at Cuttack. It is learnt that this case has been disposed of. Our brethren say that it is pending in the High Court but the Estate Officer says that the case has been dismissed and that the brethren have lost the case.

In the face of this variant report it is very difficult to know the truth. No one shows any document in this

connection.

Under the circumstances, I asked the Estate officer either to let us have our property at Purnapain for our chapel and pastor's quarters or to allot us another place within the H.S.L. for this purpose. The Estate officer advised me to apply for a place, giving three or four alternative sites along with a plan for the chapel and pastor's quarters including Purnapain site (old) as one of the alternatives.

Much depends upon the actual facts req. the disposal of the case in the High Court. Without knowing it, it is very difficult to proceed this way or the other. Our present site at Purnapain has not yet been touched. We have a new shed erected by our brethren and the worship continues to be conducted there. I think that I should go to Cuttack to find out exactly what happened in the

page v

cont. We shall have to decide our procedure accordingly. In this matter frequent and quick contact with the authorities concerned will be essential. I want your valuable advice in this matter.

Taugarhali: service is conducted in the quarters given by the H.S. to our people.

Pondomunda: service is conducted in a private house.

Parpoth — service is conducted in a private house.

Note: I was told that an Chapel at Indupal is still intact and about four families work there and the M. Z. (former) pastor is visiting and administering sacraments there. Similar there are another four families connected with the former M. Z. pastor and they hold their services separately in one of the sectors.

With best wishes,

Yours sincerely
J. H. J.

Copy to Rev. H. H. H. H.
Chairman - Tocar, J. H. B.

Joint Mission Board of

THE GOSSNER EVANGELICAL LUTHERAN CHURCH

DIRECTOR

Rev: J. J. P. Tiga M.A; B.D; S.T.M.

G. E. L. Church
RANCHI (Bihar)
INDIA.

Ref _____

Dated Ranchi _____

Prop. of the United Church
Service at Ranchula

12.3.1961

4 to 6 pm

Participants — Ven^{ble} Archdeacon Caille (Chairman)
P. M. Khallikho, P. Minz, S. K. Bepari, B. Pradhan,
C. R. Bastia, J. Labon, N. K. Pati, C. B. Boda,
S. Saugha, Padmarshi Dr. Isaac Saugha,
T. N. Koshy, S. Pata, John S. M. Peters,
+ Q. Santa.

Places of Sunday worship in

Ranchula
Place

Time

1. Hindu -
2. "
3. "
4. "
5. "
6. "
7. "
8. "

Langnall

Moulipali (shed)

9:30 Am

Rq Doubling Colony (shed)

9:30 Am

Dr No A-66 Sector 5

9:30 Am

Koel Bank

8:30 Am

~~Dr No A-66~~ Puraafamlee 18

9:00 Am

Jangpali, Ranch area

11:00 Am

Bandaunda (house)

7:00 pm

Painpola (house)

7:00 pm

P.T.O.

	Language	Place	Time
9.	Oriya	Qu No C-184 (Sec 18)	8:30 am
10	"	Qu No A-66 (Sec 5)	5:00 pm
11	Oriya + Hindi	Qu No. A-224 (Sec 19)	6:00 pm
12.	Malayalam + Hindi + Eng	Bisra Rd, Poulula	8:30 am
	Do	Qu No. B-139 (Sec 4)	6:30 pm
13			8:00 am
14.	Hampur Malayalam	Hampur High School	

Lutheran worship

1. Midulpali — 4 families — attached to Jolda + Jhisham under N. Zone
2. Rly Doubling Colony — Volunteers: Anugum, P. Lakra, P. Kandulua, Akshetta
60 Lutheran families — + 6 others
3. Purnafani — Jaluk Bora (Hon. Brach. — Rs 25/- m)
Volunteers — M. Hemam, CB Borda, M. Kundo, S. Hoo, m d Tim, S. Tigā, B. Tinkay, Enem Baba.
80 Luth. families + 10 others.
4. Tanyafali — Ishak Badi, Joseph Bage,
40 Luth. f. + 20 others
5. Bandamunda — Jisaph Laban (Rs 10/- hon.)
Brotherhood of Kapat munda — conduct service in the evening at Bandamunda

Joint Mission Board
of

THE GOSSNER EVANGELICAL LUTHERAN CHURCH

DIRECTOR

Rev: J. J. P. Tiga M.A; B.D; S.T.M.

G. E. L. Church
RANCHI (Bihar)
INDIA.

Ref _____

Dated Ranchi _____

There are places of worship
at Punnapur, Rly Doubling colony -
house churches in three centres - There is
a parish + a chapel at Nohulpali - now
under N. Zone

Joint Mission Board
of

THE GOSSNER EVANGELICAL LUTHERAN CHURCH

DIRECTOR

Rev: J. J. P. Tiga M.A.; B.D; S.T.M.

Camp Nagpur

G. E. L. Church
~~RANCHI~~ (Bihar)
INDIA.

Ref _____

Dated ~~Ranchi~~ 25th July 61

My dear Charan, I have come here to attend a meeting. I am returning by Bombay-Howrah Express on the 28th inst. Please meet me at the Railway Station at 4:45 am on 28. 7. 61. I may stop with you for a few hours and proceed to Chabradhanpur at 6:15 in the evening on the same day.

With best wishes + love

Yours Affly

J. J. P. Tiga

The Director,
J. M. B., Chai Basa.

Rev. P. C. Minz
Rly. Do. Colony
Rourkela (Orissa)

Dear Sir

27. 6. 61.

I greatly regret to say that I could not send you telegram as desired by you. I was in a fix as I had sent a p.c. instd of Telegram requesting you to be here on 25th June. When I got your p.c.

But to great extent your not coming to Rourkela proved to be wise. Rev. Mr. Bind was here but yet the meeting did not hold owing to some nonsense reasons of the local people. They were not prepared to have a combined

meeting with you out
to speak ill against
you the church auth-
orities under the influ-
ence of drink.

Be not afraid of them
I shall make them
understand.

I further request
you to kindly fix up
some other suitable
dates for two or
three days as the
matters are most
urgent.

With best regards
Yours truly
J. P. Tigga



Rev. J. P. Tigga,

G. E. L. Church,

A. & P. O. Chai Basa,

H. Singhbhum,

G E. L. CHURCH HOSPITAL

AMBGAON P. O. BARKOT
VIA DEOGARH DT SAMBALPUR
ORISSA, INDIA.

4.4.60

Dear Sir,

I am giving the report of
March :-

All the people who work at this
time in the Hospital are in good health.
They worked full month according to their
work. Skill mist. Sharan Tirkey was took
leave from 10th to 18th March. I have
divided their salary.

Hospital is running as well as; but
no big number of Pts. The lowest number
of the Pts. 16. Highest No 48. Only one
baby was expired, which was harmed
by the fire this month.

Finical Reports: —

Highest in case is ₹ 60/-

Lowest " " ₹ 13/-

Total income of full month is ₹ 1214.91/100

P.T.O

G. E. L. CHURCH HOSPITAL

AMEGAON P. O. BARKOT
VIA DEOGARH DT SAMBALPUR
ORISSA, INDIA.

Expences: —

Rs 186. 36 M.P. Paid for Med.

Rs 1. 37 " " the rice for Piter.

Rs 2. 94 " T.A. to Prabhudayal

Rs 3. 52 " T.A. to Prabhudayal

from R. to Ang.

Rs 308. 00 Salary to bring up Med.

Rs 400. 00 including nite sleeping

to Miss Maria.

Total Rs 902. 17 M.P. exp.

Total Rs 1214. 91. Drivance.

" Rs 312. 74 M.P. Balance. in my hand.

Feemed. are give Rs 112. 37 M.P. exclusive

Rev. Hallan's wife

Nothing anymore garden and Compound.

We are good. We best Compliment
to both. of all.

Nothing special. any more.

Jeeshu Sabday

— 3

G. E. L. CHURCH HOSPITAL

AMBAGON P. O. BARKOT
VIA DROGHDA DT. SAMBALPUR
ORISSA, INDIA

Medicines and injections are supplied
to Rev. Hallan's wife for Rs 7/8/-
She was examined here on 1.4.60
by me. Now her condition is good.
Thanks

Long

N.R. Report to ~~Miss~~ Sister.

Romkula-1
9. 6-61.

Dear Father,

In reply to your letter I am
sending a sum of Rs 300/- only.
I hope it will serve a good
purpose to you.

I shall expect you here on June
17 by the Express train. I have arranged
an accommodation for you ^{other} than the
Hindustan Hotel, in the new township.
Rev. C. S. Aird will also attend our
meeting on June 18.

Please bring one
Liturgical book
for you one. I have
got a small one
which is not very
helpful to me.

X You will be glad to
hear that the people
in Bondamunda have
recently been given
a small plot of land
in reply to their appli-
cation. We will have
a spot visit to Bondamunda
in course of
your stay here



Rev. J. J. P. Tija

G. E. L. Church, Ranchi

Ranchi

Ranchi

G. E. L. CHURCH, ROURKELA

Chairman : REV. P. C. MINZ

~~A/57, Sector 7~~

ROURKELA—3

Secretary : MR. P. DANG B. A.

C/135, Sector 20

ROURKELA-2.

Treasurer : S. TIGA

C/230, Sector 6

ROURKELA—2.

Rly. Doubling Colony.
14. 4. 61.

The Secretary
J. on. Board, Ranchi.

Dear Sir,
With great regret I have to present
you my reports of works for the last
two months for your information and useful
action.

Feb. 1-4. out Iowa out of station in course
of church dedication at Channah.

5. I have been collecting money for M.E. School 2 rakundar.

6. Jhuipani church business. I was engaged with Dr. Fenoek.

" 7. I went to Raigangpur to draw my salary.

8 Visited the people in Laharoly.

9. ... Sanport.

" 10 Prayw meeting in Locoed Railway Colony.
P.T.O.

R. J. C.

Feb. 12. I did not have service (church) that day owing to some ^{private} ~~heavy~~ engagement with the Baptists.

13-14. I went to Chakradarpur on private affairs. I contacted Rev. Secy. there.

" 15. Church service at Samuel church on Ash Wednesday.

" 16. Lord's supper in Boudamunda Railway colony.

" 17. ~~I was~~ Owing to some engagements at home I did not go out.

" 18. I visited the people in Taperfali and Dugal colony.

" 19. Sectr 18.

" 20. Sectr 20.

" 21. Lent service in Samuel church.

" 22. we had a meeting with the Secy. U.C.C and Rev. C.S. Dind and myself in connection with the united Christian service in Roundella on March. 12. The meeting was held at Dr. Fasel's residence.

" 23. I visited and conducted a prayer meeting in Panposh.

" 24. Lord's supper in Boudamunda.

" 25. Preparations for the Bible Society Jubilee.

G. E. L. CHURCH, ROURKELA

Chairman : REV. P. C. MINZ
A/57, Sector 7
ROURKELA—3

Secretary : MR P. DANG B. A.
C/135, Sector 20
ROURKELA-2.

Treasurer : S. TIGA
C/230, Sector 6
ROURKELA—2.

Feb. 26. Executive meeting held at Samuel
Church. Resolution

27. Meeting of the Round Church Christian
Service held at Dr. Pursh's residence

28- March. 3. 2 a adud or Hakea meeting
held in Puna of a vi.

March. 4. It was scheduled to open the confirmation class in Punnopari but no single candidate was present and thus it is cancelled.

5 *Lordis suppr.* in Tangerfeli.

5 Lord's Supper in 1891
6. It was scheduled to have confirmation class in Barnwell Church but only one candidate was present. The acute shortage of ^{the} attendees in the Quare compelled me to stop the confirmation class.

" 7. I have been waiting for the candidates of Confirmation yet none become.

8. I contacted Dr. Rausel for finance
for the ^{inquiry} ~~inquiry~~ ^{promises} ~~promises~~ ^{charities}
survive ~~scholarship~~ to take place on
march 12,

March 9-12. I was heavily engaged in the
arrangement of the united Christian
service.

Chairman: Rev. P. C. MINZ
Secretary: Mr. P. DANG
C/135, Sector 30
A/57, Sector 7
C/130, Sector 6
S-130, Sector 3

13-15. The N. C. C. meeting held in
Rajgangpur and I was asked to
attend that.

" 16. Lent service in Samuel church.

" 17. " " " Purnapari.

" 18. Preparation for the next Sunday.

" 19. I contacted the Anglican Pastor
in connection with a visitor was coming
to show us Magic Lantern from
Burhanpur. Orissa.

" 20-21. Magic Lantern was showed in
Purnapari.

" 22. I visited the people in Fag Lalturkey
and Lalow Colony.

" 23. Ladies Supper in Purnapari.

" 24. Meeting of the Romkela Christian
Council held at 6.30 P.M. at Dr.
Fusch residence.

" 25. Jhupani Church Unisited.

" 26. Church service in Samuel church.

" 27. Dr. Swach of Coolie I went to
Lalow Colony for Zarakudav.

G. E. L. CHURCH, ROURKELA

Chairman : REV. P. C. MINZ
A/57, Sector 7
ROURKELA-3

Secretary : MR. P. DANG B. A.
C/135, Sector 20
ROURKELA-2.

Treasurer : S. TIGA
C/230, Sector 6
ROURKELA-2.

- March. 28. This pari church business.
" 29. I visited the people in Pakhartoly.
" 30. Lord's supper in Purnapuri
" 31. Holy Communion in Sammel
church.

In addition to this I have few things
to let you.

I have already got enrolled my
name to the Provident Fund since Nov.
60. Regarding the contribution of J. M. Board
to this the Treasurer has a different view.
He asked me to pay up the he suggested
me that half of my contribution will
be paid by the J. M. Board and the
rest will be given by the K. S. S. Room
Rev. say I learnt that since we are
under the J. M. B. it will pay the
equal contribution to the depositor than
instead of the K. S. S. Please clarify
this with the Treasurer.

On hearing from Rev. say I did
not pay this last month the contribution
of J. M. Board. It may kindly be
arranged to pay about by you.

In Jan. & February last I have paid
the contribution of £2.00. Board to the P.P.
besides my contribution. which may
kindly be refunded to me in my
next salary which is Rs. 4.19.10.

On March 12. we had had an
et united christian service in Rourkela
In which the sister method church
leaders were invited to address it.
It was ~~very~~ very it was attended
by nearly 500 Christians of different
denominations living in and around
Rourkela.

Lastly, again some changes are being
made in our European church plot.
Nearly five to six acres of land
were left aside around our church.
It was expected that this land will
be allotted to us. After a long
interval we see that all is fenced
leaving with wire leaving our chapel.
It is stated by the local people that
it is nearly 5 to 6 acres of land were
possessed by the. I have to meet
the District Officer in this
connection and get it cleared.
I am writing Rev. Dind also to
see if any more land can be
with best regards.

You may deduct Rs. 70/- only
out of my salary in May. 61. Office
was closed on Oct. 60.

Rty. Doubling Colony,
Rowakula-1.

17. 10. 60.

Dear Sir,

I am very sorry that I could not send you the usual monthly report of my work here for the last two months. I was rather busy and thus I could not submit you the same.

I would like to inform you that I have been asked by the Secy. B. C. C. to speak on Industrial Evangelism at an Evangelistic Study Camp, to be held at Burju from Oct. 24-29, 60. No I am busy to collect the

materials for that.
As soon as it is over
I want to proceed
to Ranchi. On my
arrival there I shall
give you a short
report there.

~~Recd In a~~
Recently a meeting
of the C.D.S. held
in Ranchiela but I
was not informed to
attend the meeting.
Dr. Pensek is all
right with his family
I think



Rev. H. K. Ross

Gr E. L. Church, Ranchi

Ranchi

Ranchi

PHONE : Cuttack—606.

NILACHAL PADHI, M. A., LL. B.
ADVOCATE.

TAL TELENGA BAZAR,
CUTTACK.

Dated 9th Dec. 1958.

Dear Sir,

Your High Court writ came to-day for orders regarding final stay. A counter affidavit has been filed by Hindustan Steel Ltd. that the entire Church building and its out houses have been completely demolished before 16-7-58, the date of interim stay. I denied the allegation and said that the Church premises are still in your occupation. The High Court has granted one week time to file a affidavit to that effect. Please therefore come immediately so that affidavit will be filed positively on 15-12-1958.

Please treat this as most urgent.

Yours sincerely,

of Gash

Shri Yakub Khalko
Village |
& | Purunapani,
P.O. | ~~Rourkela~~,
Dist:- Sundargarh.

$\frac{1}{\sqrt{2}} \begin{pmatrix} 1 & -i \\ 0 & 1 \end{pmatrix}$



TELEGRAPHS DEPARTMENT

1917
JUL 11
89

11. B. —The name of the sender, if telegraphed, should be written after, but separated from the text:

= Padhi =

To

Romhela.
S. 31es

Rev. H. Kiers,

Dear Sir,

I hope this letter will make
you surprise as I am writing it
from Romhela. In a nut shell I
should say that I am not allowed
~~this year~~ to take the B.A. Exam. this
year. On receipt the reply from
the Reg. is negative I came back
to Romhela on the 1st March.

I hope to meet you
in April or May
during the M. S. M. S.
M. S. M. S. M. S.
you know me.

Rest is alright.

I have a plan
to meet Dr. Bensch
this evening.

Yours truly
D. Bensch

पोस्ट कार्ड
सूचना
केवल पता



Rev. H. K. W. S.

G. E. L. Church,

M. S. P. O. Ranchi.

Ranchi.

Rev. H. Kloss,

Serampore.
20.9.60.

Dear Sir,

I am very much thankful to you for the m.O. which I received yesterday from Rev. Arind. t. Fortunately I got a seat in the hostel which was not possible to a non-collegiate.

Till now my case is doubtful. The Reg. C. University has not given response to my application. I approached him last week personally and he assured me that he would put up my matter in the senate. My application was duly forwarded by the Principal Serampore College. I am anxiously waiting for his reply.

It I shall not get any reply from him

By the end of this month
I shall resume my
duty next month. I am
fed up to stay here
without any purpose. I
have communicated this
to Rev. Ainal today.

If I am replied in
affirmative I shall go
back to Romkela by
the end of April next.

I am getting on well
with my associates.

And Rev. J. C. Handley is here
whom you met in London
last summer.

Yours truly,
Jish Babay.

Jish Babay



Rev. H. Kloss,

G. E. L. Church Ranchi.

P. O. Ranchi.

Dt. Ranchi.